हमारा इक़बाल

(प्रतिनिधि रचनाएं)

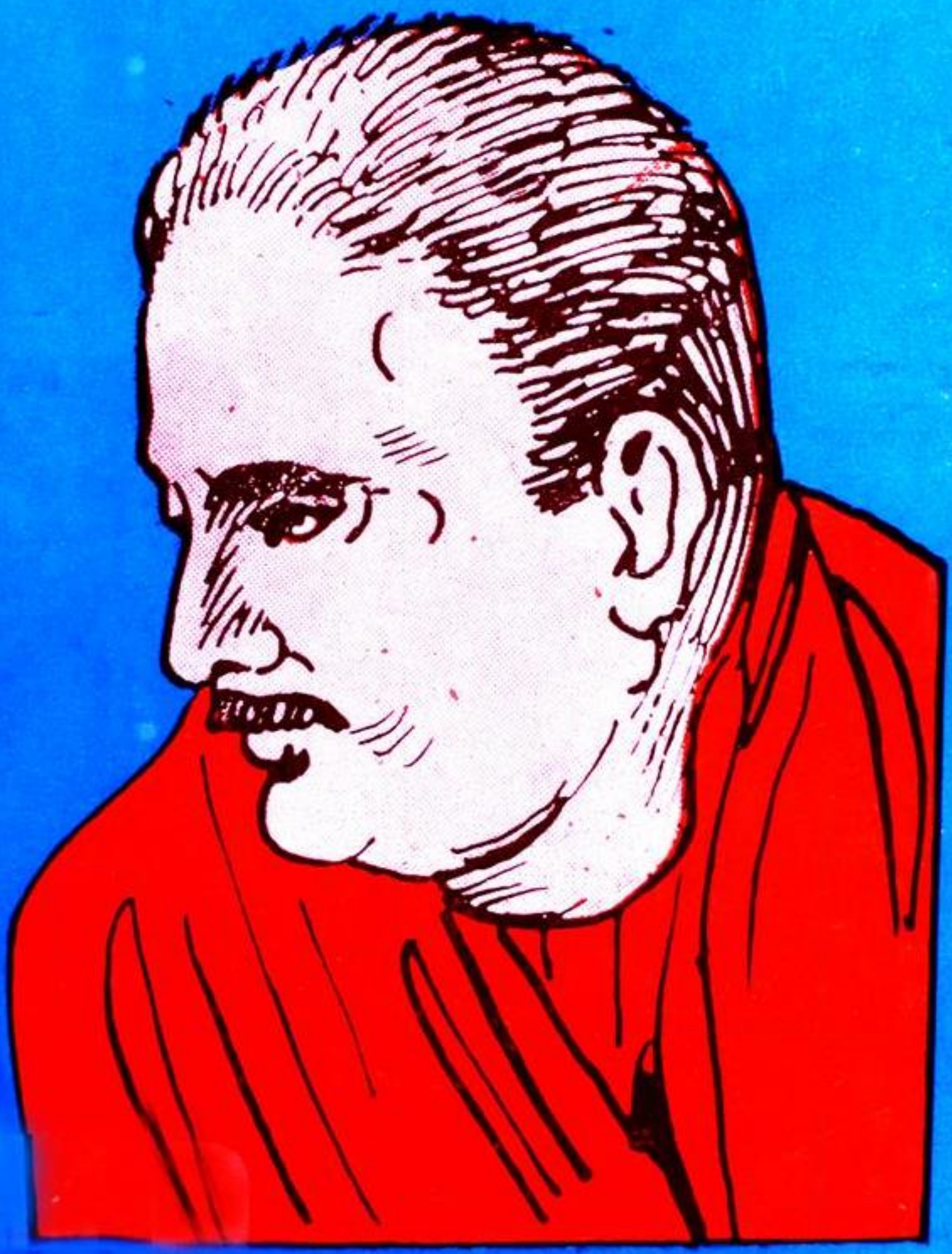

चयन : ममनून हसन खाँ

लिप्यान्तर : फ़ज़ल ताबिश

हमारा इक़बाल

(प्रतिनिधि रचनाएं)

चयन : ममनून हसन खां

लिप्यान्तर : फ़ज़ल ताबिश

कुल हिन्द अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़

- ग्रंथ संख्या : 3
- © कुल हिन्द अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़, भोपाल
- प्रथम आवृति : 1991 (एक हज़ार प्रतियां)
- आवरण : शहनाज़ इमरानी।
- सचिव, कुल हिन्द अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़, भोपाल द्वारा एच. एस. ऑफसेट वर्क्स, दिल्ली में छपवाकर, डी-1/3, प्रोफेसर्स कालोनी भोपाल से प्रकाशित
- मूल्य

अल्लामा इक़बाल

के

तरानऐ-हिन्दी के आशिक़, शहीदे-वतन

भारत की आबरू राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नाम

क्रम

मेरी बात/9
अल्लामा इक़बाल/11
हिमाला/25
मिर्ज़ा ग़ालिब/28
बच्चे की दुआ/30
शम्अ-ओ-परवाना/31
अक़्लो दिल/32
सदाए-दर्द/34
आफ़ताब/35
शम्अ/36
एक आरज़ू/39
आफ़ताबे सुबह/41
दर्दे इश्क/43
इश्क़ और मौत/45
जुहूद और रिन्दी/47
तिफ़्ले-शीर ख़्वार/50
तस्वीरे दर्द/52
चांद/58
सर-गुज़श्ते-आदम/60
तरानाए-हिन्दी/62
जुगनू/63
हिन्दोस्तानी बच्चों का क़ौमी गीत/65
नया शिवाला/66
अब्र/67
एक परिन्दा और जुगनू/68
बच्चा और शम्अ/70

किनारे रावी/72
इल्तिजाए मुसाफ़िर/74
मोहब्बत/76
हक़ीक़ते हुस्न/78
स्वामी रामतीर्थ/79
हुस्नो-इश्क़/80
...की गोद में बिल्ली देखकर/81
क्ली/82
चांद और तारे/83
विसाल/85
आशिक़े हरजाई/86
नवाए ग़म/89
इशरते इमरोज़/90
इंसान/91
जलवए-हुस्न/92
एक शाम/93
तन्हाई/94
सितारा/95
दो सितारे/96
फ़ल्सफ़ाए-ग़म/97
राम/100
नानक/101
जावेद से/102
शुआ-ऐ-उम्मीद/105
शुक्रो शिकायत/107
ज़मानाए-हाज़िर का इन्सान/107
अक़्वामे-मशिरक़/108
आगाही/108
मुसलिहीने मशिरक़/108
सुल्तान टीपू की वसीयत/109
आज़ादी-ए-फ़िक्र/109
मग़्रिबी तहज़ीब/110
असरारे-पैदा/110
ख़ुदी की तरबीयत/110
हिन्दी मकतब/111
तालिबे-इल्म/111
ग़ज़लें/112-120

मेरी बात

अल्लामा इक़बाल की प्रतिनिधि रचनाओं को देवनागरी में लिप्यांतर करते हुए, कुछ उर्दू शब्दों को उसी तरह लिखने की कोशिश की गई है जिस तरह उर्दू में छन्द की आवश्यकता के अनुसार लिखा जाता है। अभी तक इस तरह लिखे शब्द देवनागरी लिपि में मेरी नज़र से नहीं गुज़रे, इसलिए अंदेशा है कि ये शब्द अटपटे लग सकते हैं। जैसे :– तेरा को तिरा, मेरा को मिरा, यहां को यां, वहां को वां, एक को इक, लिखा गया है। इसी तरह ख़ामोशी को कहीं ख़ामुशी और कहीं ख़मोशी लिखा गया है।

यहां एक बात और अर्ज़ करना है, कि उर्दू अश्आर को जब देवनागरी लिपि में लिखा जाता है तो इज़ाफ़त वाले शब्दों को अक्सर इस तरह लिखा जाता है कि उनका छंद बिगड़ जाता है। मसलन "इशरत-ए-इमरोज़" इस तरह लिखने से इन दोनों शब्दों की अदायगी का समय बढ़ जाता है। अगर इसे इशरते-इमरोज़ लिखा जाए तो छंद में कोई फ़र्क नहीं आएगा। आप देखेंगे कि कहीं कहीं हमने भी यह तरीक़ा अपनाया है। लेकिन छंद की दृष्टि से वहां उसी तरह लिखना ज़रूरी था। जैसे, रोशनी-ए-दिल को रोशनी-ए-दिल ही लिखा गया है।

शब्दों के अर्थ देने के संदर्भ में, उर्दू में प्रचलित मिथकों को, जिनका प्रयोग इक़बाल की रचनाओं में बहुत ज़्यादा है अपनी तरफ़ से पूरी तरह स्पष्ट करने की कोशिश की गई है, फ़िर भी हमसे कहीं भूल हो सकती है और हम आशा करते हैं कि हमारी पहली कोशिश, हिन्दी साहित्य जगत में पसंद की जाएगी तथा इक़बाल की शायरी से दिलचस्पी बढ़ेगी।

जनाब ममनून हसन खां साहब जो मरकज़ के सद्र भी हैं और इक़बाल के सच्चे आशिक़, उन्होंने अगर इस नाचीज़ की हौसला अफ़जाई न की होती तो यह काम शायद नहीं हो पाता। श्री पूर्णचन्द्र रथ, जनाब अज़हर राही, जनाब हैदर अब्बास रिज़वी ने लिप्यातंर के काम में जिस मोहब्बत और लगन से मेरी मदद फरमाई है इसके लिए शुक्रिए के अल्फ़ाज़ छोटे पड़ते हैं, कि ये हज़रात मेरे हर काम में मदद करना अपना खुद का काम समझते हैं। टायपिंग के सिलसिले में कुमारी उज़्मा सिद्दीकी, कुमारी फरीदा खानम, जनाब मोहम्मद असलम, जनाब शमीम अंसारी और जनाब नज़र कुरैशी का मैं शुक्रगुज़ार हूँ।

यह अर्ज़ करना भी ज़रूरी है कि कुल हिन्द अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़ की स्थापना मध्यप्रदेश शासन द्वारा की गई है। इस मरकज़ के फराइज़ में अल्लामा

इक़्बाल की रचनाओं को तमाम भारतीय भाषाओं में प्रकाशित करना शामिल है। यह किताब उसी सिलसिले की एक कड़ी है।

मध्यप्रदेश शासन की तरफ़ से उर्दू में सुदीर्ध साहित्य सेवा के लिए रचनाशील साहित्यकार को प्रति वर्ष एक लाख रुपये का अखिल भारतीय इक़बाल सम्मान दिया जाता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि हमारी प्रादेशिक सरकार इक़बाल के सिलसिले में बहुत महत्वपूर्ण काम कर रही है।

आख़िर में, पढ़ने वाले हज़रात से मेरी दरख़्वास्त है कि वे मेरी इस कोशिश में रह गई कमियों के लिए मुझे क्षमा करेंगे और अगर मुझे मेरी ग़लतियों से अवगत कराएंगे तो मैं उनका शुक्रगुज़ार रहूँगा।

—फ़ज़ल ताबिश

अल्लामा इक़बाल

इक़बाल का शुमार दुनिया के अज़ीम-तरीन शायरों और चिंतकों में किया जाता है। उनको शायरे-मश्रिक़ (पूर्व का कवि) भी कहा गया है। उन्होंने अपनी शायरी से पश्चिमी सामराज्य के खिलाफ जिहाद किया और एशिया, खास कर भारत, के रहने वालों को गुलामी से आज़ाद होने का सबक़ दिया। अल्लामा इक़बाल बहुत बड़े देश-भक्त और मज़हबी रवादारी के ज़बर्दस्त हामी और प्रचारक थे उन्होंने क़दीम हिन्दोस्तानी चिंतकों, ऋषियों और सन्तों की शिक्षा का गहरा अध्ययन किया था। कुर-आन-शरीफ़ की ज़िन्दगी-बख्श तालीम से पूरी तरह परिचित होने के साथ-साथ अल्लामा इक़बाल हिन्दी चिंतन की सभी धाराओं से भी पूरी तरह वाक़िफ थे। इक़बाल जानते थे कि देश-प्रेम ही भारत में क़ौमी एकता की बुनियाद है। हमारे मुल्क में आज जब जबान और मज़हब का जुनून हमारी क़ौमी एक्ता को मिटाने पर तुला हुआ है, तो हमको इक़बाल की क़ौमी और अख़्लाक़ी शायरी से विघटनकारी शक्तियों के खिलाफ बड़ी ताक़त मिलती है।

इक़बाल की शायरी का पहला संकलन "बांगे-दिरा" उनकी महान नज़्म 'हिमाला" से शुरू होता है। इस नज़्म में इक़बाल ने हिन्दोस्तान की प्राचीन संस्कृति की अज़मत के गीत गाये हैं:—

ऐ हिमाला ! दास्तां उस वक़्त की कोई सुना
मस-कने आबाए-इन्सां जब बना दामन तिरा
हां दिखादे-ए-तसव्वुर ! फिर वह सुब्हो-शाम तू
दौड़ पीछे की तरफ ऐ गरदिशे-अय्याम तू

इक़बाल ने इस मुल्क में बसने वाले मुख़तलिफ़ तब्क़ों और फ़िर्क़ों के मेल-मिलाप और भाई-चारे पर भी बहुत ज़ोर दिया है। खास तौर से अपनी नज़्म "तरानए-हिन्दी" में उन्होंने कहा कि इस मुल्क में मुख़तलिफ़ फ़िर्क़े बसते हैं। उनकी अनेकता में एकता मौजूद है। "तरानए-हिन्दी" उनकी वतन-दोस्त शायरी का आला तरीन नमूना है। इस नज़्म से मातृभूमि के लिये उनकी मोहब्बत का इज़हार होता है। एक शैर देखिये:—

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बेर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा

इक़बाल के देहांत के बाद 1938 ई. में रिसाला जौहर (देहली) के इक़बाल-नम्बर के लिये संपादक के नाम एक खत में महात्मा गांधी ने 'तरानए-हिन्दी' की बहुत तारीफ़ की थी। उन्होंने जो खत अपने हाथ से उर्दू में लिखा था वह इस तरह है:—

"आपका ख़त मिला! डा० इक़बाल मरहूम के बारे में क्या लिखूं? लेकिन मैं इतना तो कह सकता हूँ कि जब उनकी मशहूर नज़्म "हिन्दोस्तां हमारा" पढ़ी तो मेरा दिल भर आया और बड़ौदा जेल में तो सेकड़ों बार मैंने इस नज़्म को गाया होगा। इस नज़्म के अल्फ़ाज़ मुझे बहुत ही मीठे लगे और यह खत लिखता हूँ तब भी वह नज़्म मेरे कानों में गूंज रही है।"

एक दूसरे मौके पर गांधी जी ने उर्दू-हिन्दी के झगड़े को निपटाने की ग़रज़ से "तरानए-हिन्दी" का हवाला देते हुये इस तराने को हिन्दोस्तान की क़ौमी ज़बान का नमूना कहा था, उन्होंने फरमाया था:—

"कौन ऐसा हिन्दोस्तानी दिल है जो इक़बाल का "हिन्दोस्तां हमारा" सुन कर धड़कने नहीं लगता और अगर कोई ऐसा दिल है तो मैं उसे उसकी बदनसीबी समझूंगा। इक़बाल के इस तराने की ज़बान हिन्दी

एक दूसरी नज़्म "हिन्दोस्तानी बच्चों का क़ौमी गीत" में इक़बाल ने भारतीय संस्कृति को बनाने वाले अनेक तत्वों का उल्लेख इस तरह किया है:—

चिश्ती ने जिस ज़मीं में पैग़ामे हक़ सुनाया
नानक ने जिस चमन में वेहदत का गीत गया
तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया
जिसने हिजाज़ियों से दश्ते अरब छुड़ाया
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

अपनी नज़्म "बच्चे की दुआ" में इक़बाल दुआ करते हैं कि हम इस मुल्क में ऐसी फबन से रहें जैसे चमन में फूल रहता है:—

हो मिरे दम से यूंही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत

अपनी एक और बे-मिसाल नज़्म "नया शिवाला" में अल्लामा ने क़ौमी यक-जहती के लिये हमें दावत दी है:—

आ ग़ैरियत के पर्दे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें, नक़्शे-दुई मिटा दें
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ इक नया शिवाला इस देश में बना दें
शक्ति भी, शान्ति भी, भक्तों के गीत में है
धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है

धार्मिक झगड़ों से अल्लामा इक़बाल बेहद रंजीदा थे उनके ग़म का अंदाज़ उनकी मशहूर नज़्म "सदाऐ-दर्द" से किया जा सकता है। वह कहते हैं:—

जल रहा हूँ, कल नहीं पड़ती किसी पहलू मुझे
हां डुबो दे, ऐ मुहीते-आबे गंगा तू मुझे
सर ज़मीं अपनी क़यामत की निफ़ाक़-अंगेज़ है
वस्ल कैसा यां तो इक कुर्बे-फिराक़-आमेज़ है

इस तरह इक़बाल की बहुत सी नज़्मों में क़ौमी एकता का पैग़ाम शिद्दत के साथ मौजूद है। चन्द शैर देखिये:—

वां न करना फिरक़ा-बन्दी के लिये अपनी ज़बां
छुपके है बैठा हुआ हंगामऐ-मेहशर यहां

या हिन्दोस्तानी है? या उर्दू है? कौन कह सकता
है कि यह हिन्दोस्तान की क़ौमी ज़बान नहीं है।"

हिन्दोस्तान को आजादी मिलने पर गांधी ने इस तराने को नहीं भुलाया। 21 अगस्त, 1947 को नवाखाली के एक गांव में जहां हिन्दोस्तान और पाकिस्तान के क़ौमी परचम साथ-साथ लहरा रहे थे गांधी जी की प्रार्थना सभा में यही तराना गाया गया था। सभा के आखिर में गांधी जी ने "मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना" दोहराते हुए यह इच्छा व्यक्त की थी कि हम आगे आने वाली समस्याओं को हल करने के लिये कभी तलवार न उठायें।

तरानऐ-हिन्दी के संबंध में महात्मा गांधी के जो विचार ऊपर बयान किये गये हैं वह मैंने जनाब सय्यद मुज़फफर हुसैन बरनी साहब पूर्व गर्वनर हरियाणा की क़िताब "मोहिब्बे-वतन इक़बाल" से लिये हैं।

तरानए-हिन्दी के सिलसिले में एक और दिलचस्प बात बताना ज़रूरी है। हुआ यूं कि जब मैं भोपाल विकास प्राधिकरण का अध्यक्ष था और इक़बाल की यादगार बनाने का ख़्वाब प्राधिकरण द्वारा इस तरह पूरा हो गया था कि एक शानदार इक़बाल मैदान बनाया जा चुका था और उसका उदघाटन होने वाला था , वह ख़बर एक पत्र द्वारा मैंने महामहिम श्री रामा स्वामी वेंकटरमन को भेजी उन्होंने इक़बाल की शायरी और उनकी नज़्म "तरानए-हिन्दी" के सिलसिले में अपना पैग़ाम भेजा था उस पैग़ाम की नक़ल यहां पेश की जा रही है जिससे मालूम होगा कि वह इक़बाल को किस क़दर बड़ा शायर और देशभक्त मानते हैं:—

To say that Dr. Mohammad Iqbal was one of the greatest poets of his time would be to speak the truth and yet not the whole truth. Dr. Iqbal was much more than a poet. He was an institution and a phenomenon. His works were directed not merely towards the literary and cultural sensibilities of his generation, but to their inner-most needs as a people deprived of their essential rights. Dr. Iqbal fired their imagination, instilled in them a sense of pride in their nation and gave then a sense of destiny. His composition "Sarey Jehan Se Achcha Hindustan Hamara" ranks with Tagore's "Jana Gana Mana" and Bankim's "Bande Mataram" as an outstanding lyric expression of India's renaissance.

I am glad to learn that Dr. Iqbal's association with the town of Bhopal is to be perpetuated by a unique memorial being set up in memory of the poet-patriot. May it strengthen the spirit of patriotism and national integration in a manner befitting the great Soul.

वस्त के असबाब पैदा हों तिरी तेहरीर से
देख कोई दिल न दुख जाये तेरी तक़दीर से

इसी तरह इक़बाल की नज़्म "तस्वीरे–दर्द" के कुछ शैर देखिये :–

डराता है तिरा नज़्ज़ारा-ऐ-हिन्दोस्तां मुझको
कि इबरत-खेज़ है तेरा फ़साना सब फ़सानों में
निशाने बर्गे-गुल तक भी न छोड़ इस बाग़ में गुलचीं
तिरी क़िस्मत से रज़्म-आराईयां है बाग़बानों में
वतन की फिक्र कर नादां! मुसीबत आने वाली है!
तिरी बरबादियों के मश्वरे हैं आसमानों में
ज़रा देख उसको जो कुछ हो रहा है, होने वाला है
धरा क्या है भला ऐहदे कुहन की दास्तानों में
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो
तुम्हारी दासतां तक भी न रहेगी दास्तानों में

इक़बाल अपने हम-वतनों को ज़हनी गुलामी से आज़ाद कराना चाहते थे और उनके चरित्र को बेहतर करना चाहते थे। वह हमारी पस्ती का चित्रण करके हमें ऊंचाई की तरफ ले जाना चाहते थे :–

किया रिफ़-अत की लज़्ज़त से न दिल को आश्ना तूने
गुज़ारी उम्र पस्ती में मिसाले-नक़्शे-पा तूने
त-अस्सुब छोड़ नादां! दह्र के आईना-खाने में
यह तस्वीरें हैं तेरी जिनको समझा है बुरा तूने

इसी नज़्म में इक़बाल हिन्दोस्तानियों को बताना चाहते हैं कि फिरका वाराना त -अस्सुब उनको बरबाद कर देगा :–

उजाड़ा है तमीज़े-मिल्लत-ओ-आईं ने कौमों को
मिरे अह्ले-वतन के दिल में कुछ फ़िक्रे वतन भी है

अल्लामा इक़बाल ने अपनी मशहूर आलम किताब जावेद नामे में गौतम बुद्ध, विश्वा-मित्र, भ्रतृ -हरि और टीपू सुल्तान को बड़े अदब और एहतिराम के साथ याद किया है। अल्लामा ने गायत्री मंत्र को भी उर्दू में नज़्म किया है। इस नज़्म का नाम है "आफताब"। हिन्दोस्तान के सन्तों, ऋषियों और बुजुर्गों को अपनी नज़्म में इक़बाल ने बड़े अदब और एह्तिराम से याद किया है अपनी मशहूर नज़्म शु-आऐ-उम्मीद" में हिन्दोस्तान को गुलामी से आज़ाद कराने की आरजू को वह इस तरह बयान करते हैं :–

एक शौख किरन, शौख़ मिसाले-निगहे-हूर
आराम से फ़ारिग़, सि-फते-जौहरे-सीमाब

बोली कि मुझे रूख़-सते-तनवीर अता हो
जब तक न हो मशिरक़ का हर इक ज़र्रा, जहां-ताब
छोड़ूंगी न मैं हिन्द की तारीक़ फ़ज़ा को
जब तक न उठें ख़्वाब से मर्दाने-गिरां-ख़्वाब
ख़ावर की उम्मीदों का यही ख़ाक है मरकज़
इक़्बाल के अश्कों से यही ख़ाक है सेवाब

इक़बाल की वतन परस्ती की इससे बेहतर मिसाल और क्या हो सकती है कि आख़री उम्र में हिन्दोस्तान से इक़बाल का लगाव बहुत ही गहरा हो गया था।

अपनी शायरी में और दूसरी तहरीरों में इक़बाल ने भारत की गुलामी पर लगातार अपने रंजों का इज़हार किया है।इक़बाल इस बात से बहुत रंजीदा थे कि हिन्दोस्तानी गुलामी की वजह से, दौलत और हुकूमत को हासिल करने के लिये अपनी रूह तक को बरबाद कर रहे हैं:—

मन की दुनिया? मन की दुनिया सोज़ो-मस्ती,

अपने मन में डूब कर पाजा सुराग़े-ज़िन्दगी
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन, अपना तो बन
मन की दुनिया? मन की दुनिया सोज़ो-मस्ती, जज़्बो-शौक़
तन की दुनिया? तन की दुनिया सूदो-सोदा, मकरो-फन
मन की दौलत हाथ आती है तो फिर जाती नहीं
तन की दौलत छाओं है! आता है धन जाता है धन
मन की दुनिया में न पाया मैंने अफ़रंगी का राज
मन की दुनिया में न देखे मैंने शैख़ो-ब्रहमन
पानी-पानी कर गई मुझको क़लन्दर की यह बात
तू झूका जब ग़ैर के आगे न तन तेरा न मन

गुलामी से किसी भी क़ौम में कितनी गिरावट आ जाती है यह उनके इन शैरों से ज़ाहिर होता है:—

था जो ना-ख़ूब ब-तदरीज वही ख़ूब हुआ
कि गुलामी में बदल जाता है क़ौमों का ज़मीर

भरोसा कर नहीं सकते गुलामों की वसीयत पर
कि दुनिया में फ़क़त मर्दाने-हुर की आंख है बीना

अल्लामा इक़बाल ने हिन्दोस्तान की गुलामी के बुरे प्रभाव को पूरी तरह महसूस करते हुये कहा था:—

"हिन्दोस्तान की सियासी गुलामी सारी एशिया के

लिये बे-पायां तकलीफ का सबब रही है और आज भी है। उसने मश्रिक की रूह को कुचल कर रख दिया और उसे अपने इज़हार[1] के इस वलवले से बिल्कुल महरूम कर दिया है जिसकी बदौलत वह कभी एक अज़ीम और शानदार सक़ाफ़त[2] का गेहवारा हुआ करता था। हिन्दोस्तान के लिये जिसमें हमारा मरना जीना मुक़द्दर है, हमारा कुछ फ़र्ज़ है।"

पश्चिमी साम्राज्य ने जिस तरह भारत को गुलामी की ज़जीरों में जकड़ लिया था उसका बयान इस शैर में देखिये :–

अभी तक आदमी सेदे-जुबूंने-शहरयारी है
क्यामत है कि इन्सां नोऐ-इन्सां का शिकारी है

एक दूसरी नज़्म में अल्लामा इक़बाल मश्रिक की आज़ादी की इस तरह पेशीन-गोई करते हैं :–

गया दौरे सरमाया दारी गया
तमाशा दिखा कर मदारी गया
गिरां ख़्वाब चीनी संबलने लगे
हिमाला से चश्मे उबलने लगे
हुआ इस तरह फाश राज़े-फ़िरंग
कि हैरत में है शीशा बाज़े-फिरंग
पुरानी सियासत गरी ख़्वार है
ज़मीं मीरो-सुलतां से बेज़ार है

इसी नज़्म में अल्लामा इक़्बाल हिन्दोस्तान के नौजवानों के लिये दुआ करते हैं :–

जवानों को सोज़े-जिगर बख़्श दे
मिरा इश्क़, मेरी नज़र बख़्श दे

अपनी ज़िन्दगी के आखरी दिनों में यानि जनवरी 1938 ई. में अल्लामा इक़्बाल ने हिन्दोस्तानियों को नये साल का जो पैग़ाम आल इन्डिया रेडियो पर दिया था उसका एक हिस्सा देखिये :–

"एहदे-हाज़र[1] को उलूम[2] में अपनी तरक्की और साइंस की बेनज़ीर कामयाबियों पर नाज़ है, इसमें कुछ शक़ नहीं और यह फ़ख़्र[3] बजा भी है। आज ज़मानो-मकां[4]

---

1. अभिव्यक्ति 2. संस्कृति 3. वर्तमान काल 4. इल्म का बहुवचन = 5. घमंड
6. ज़मीन-आसमान

के फासले खत्म हो रहे हैं और इन्सान असरारे-फ़ितरत[1] को बे-नक़ाब करने और उसकी कुव्वतों को अपने लिये मुसख़्ख़र[2] करने में हैरत अंगेज़ कामयाबियां हासिल कर रहे हैं। इन्सान इस ज़मीं पर सिर्फ इन्सान का एहतिराम करके बाक़ी रह सकता है। अगर तालीमी कुव्वतों ने सारी दुनिया के इन्सानों में एकतरामे इन्सानियत का जज़्बा पैदा करने के लिये ज़ोर न लगाया तो यह ज़मीन ख़ूँ-आशाम[3] दरिन्दों की शिकार-गाह बन कर रह जायेगी इसलिये आईये हम नये साल को इस दुआ के साथ शुरू करते हैं कि क़ादरे-मुतलक़ उन लोगों को जो ताक़त और हुकूमत की जगहों पर मुता-मक्किन[4] हैं, इन्सानियत अता करें और उन्हें इन्सानियत की परवरिश करना सिखाएं।''

अल्लामा इक़बाल ने अपनी शायरी में जहां इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद साहब, दूसरे पैग़म्बरों, कवियों, इस्लाम के धर्म गुरुओं आदि का उल्लेख आदर से किया है वहीं उन्होंने हिन्दोस्तान के दूसरे धर्मों के गुरुओं और देवताओं का बयान भी बहुत एहतिराम के साथ किया है। उनकी शायरी में रामचंद्र जी, गुरुनानक साहब, महात्मा गौतम बुद्ध, स्वामी रामतीर्थ पर नज़्में मिलती हैं।

यहां यह अर्ज़ करना ज़रूरी है कि मेरी खुश क़िस्मती थी कि जब भी अल्लामा इक़बाल भोपाल तशरीफ़ लाए मुझे उनके पास रहने, उनकी खिदमत करने, उन्हें सुनने और दूसरे मिलने वालों के साथ बातें करते समय देखने का मौक़ा मिला। यह इसलिये हो सका कि सर रास मसूद उस ज़माने में रियासत भोपाल में शिक्षा मंत्री थे और उन्होंने मुझे अल्लामा इक़बाल की ख़िदमत में रहने का हुक्म दे रखा था। मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर रहता और जो भी देखता सुनता या महसूस करता उसे नोट कर लिया करता था। इसी के साथ-साथ मुझे भारत के और भी कई महान लोगों से मिलने के मौक़े मिले। मैं अल्लामा इक़बाल का आशिक था इसलिये जिन बड़े लोगों से मिलना होता मैं किसी न किसी बहाने अल्लामा इक़बाल के बारे में एक आध सवाल पूछ लेता इस सिलसिले में सबसे पहले गांधी जी के बारे में अर्ज़ करूंगा। अल्लामा इक़बाल के बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जो रायें थी उसको ऊपर बयान किया जा चुका है और यहां यह भी अर्ज़ कर दूं कि मैंने खुद एक मुलाक़ात में बापू से बड़े अदब के साथ इक़बाल का ज़िक्र किया था और उन्होंने इस मुलाक़ात में भी ''तरानऐ-हिन्दी'' का बड़ी मोहब्बत से ज़िक्र किया था। मुझे इस मुलाक़ात का मौक़ा किस तरह मिला उसको भी यहां बयान कर दूं। आजादी की लड़ाई में पन्डित जवाहर लाल नेहरू के साथी मिस्टर शु-ऐब क़ुरेशी एक ज़माने में गांधी जी के बहुत नज़दीक रहे थे। वह साबरमती आश्रम में रह चुके थे। दूसरे

---

1. प्रकृति के रहस्य 2 पराजित 3. खून पाने वाले 4. सम्पूर्ण शक्ति रखने वाला यानि खुदा

विश्व युद्ध के दौरान शु-एब कुरैशी साहब भोपाल में नवाब हमीद-उल्लाह खां साहब के रियासत के वज़ीरे तालीम थे। नवाब साहब और गांधी जी के बीच जो सियासी बातचीत हुआ करती थी वह शु-ऐब कुरैशी साहब के द्वारा होती थी। मैं उस ज़माने में शु-ऐब कुरैशी साहब का निजी सहायक था। शु-ऐब कुरैशी साहब गांधी जी से मिलने सेवाग्राम जाया करते थे और मुझे भी अपने साथ ले जाते थे। एक बार शु-ऐब कुरैशी साहब ने नवाब साहब भोपाल का एक ज़रूरी ख़त मेरे हाथ गांधी जी के पास सेवाग्राम भेजा। इस मौक़े पर मैं एक दिन और एक रात सेवाग्राम आश्रम में रहा था। गांधी जी की प्रार्थना सभा में इक़बाल का "तरानऐ-हिन्दी" भी गाया गया था।

महाकवि गुरु रवीन्द्र नाथ टैगोर के क़दमों में बैठने का और अल्लामा इक़बाल के चिंतन और शायरी के बारे में टैगोर की राय मालूम करने की इज़्ज़त मुझे हासिल हुई थी। यह इज़्ज़त मुझे डा. सय्यद रास मसूद और डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के तुफैल से हासिल हुई थी। डा. श्याम प्रसाद मुखर्जी मशहूर माहिरे कानून और तालीम और कलकत्ता यूनिवर्सिटी के बानी डा. आशुतोष मुखर्जी के लायक बेटे थे और आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में सैयद रास मसूद के क्लासमेट रहे थे। जब सैयद रास मसूद अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की वाय्स चांन्सलरी छोड़ कर भोपाल तशरीफ ले आये, तो श्यामा प्रसाद मुखर्जी उनसे मिलने भोपाल आते थे। मैं उन दिनों डा. रास मसूद का निजी सहायक था। उस रिश्ते से डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी से मेरी मुलाक़ात हुआ करती थी। श्यामा प्रसाद जी ने सैय्यद रास मसूद को कलकत्ता यूनिवर्सिटी में एक लेक्चर देने के लिये बुलाया तो मैं भी साथ था। लेक्चर के बाद डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सैय्यद रास मसूद को शान्ति निकेतन भी ले गये थे और इस तरह हमारी मुलाक़ात महाकवि गुरु रवीन्द्र नाथ टैगोर से हुई और हमने शान्ति निकेतन में टैगोर का लेक्चर भी सुना। इस लेक्चर में उन्होंने हिन्दी चिंतन और दुनिया के दूसरे फ़ल्सफों की तुलना की थी और प्राचीन और आधुनिक शायरी का भी ज़िक्र किया था इस लेक्चर के खत्म होने के बाद जब इस सवाल का सिलसिला शुरू हुआ तो मैंने गुरुदेव से दो सवाल पूछे। मेरा पहला सवाल यह कि इक़बाल की शायरी और चिंतन के बारे में उनकी राय क्या है और दूसरा सवाल यह कि इक़बाल की और उनकी शायरी किस हद तक यकसां है। गुरुदेव ने पहले सवाल के जवाब में इरशाद फरमाया था कि इक़बाल की शायरी आदमियत का एहतिराम है और अपनी शायरी द्वारा इन्सान को इस दुनिया में उसके बुलन्द तरीन अख़लाक़ी मुक़ाम पर ले जाना चाहते हैं। उन्होंने दूसरे सवाल के जवाब में फरमाया था कि उनका मक़सद भी इन्सानियत की ख़िदमत है और इस तरह उन्होंने और इक़बाल ने एक ही तरह की ख़िदमत देने की कोशिश की है।

भारत के क़ाबिले-फ़ख़्र सपूत पन्डित जवाहर लाल नेहरू को मैंने बहुत क़रीब से देखा था आज़ादी से पहले नेशनल प्लानिंग कमेटी बनाई गई थी और उसके सद्र

पन्डित जवाहर लाल नेहरू थे। प्रो. के. वी. शाह इस कमेटी के जनरल सेक्रेट्री थे। और मिस्टर शु-ऐब कुरैशी भी इस कमेटी के मेम्बर थे। इस कमेटी के इलजास बम्बई में हुआ करते थे जहां हिन्दोस्तान के साईंस, शिक्षा और अर्थशास्त्र के विद्वान बतौरे मेम्बरान इस कमेटी में शिरकत करते थे। मैं मिस्टर शु-ऐब के साथ बम्बई जाया करताथा और इस तरह मुझे पंडित जवाहर लाल नेहरू को बहुत क़रीब से देखने और उनकी तक़रीरों को सुनने का मौक़ा मिला करता था। एक बार मैंने पंडित नेहरू की ख़िदमत में अपनी आटोग्राफ बुक पेश करके उनसे कुछ लिख कर अपने दस्तख़त करने की दर-ख्वास्त की। पंडित नेहरू ने मुस्क़रा कर मेरी आटोग्राफ बुक में अंग्रेजी में दो अल्फ़ाज़ लिखे और अपने दस्तखत कर दिये। वह दो अल्फ़ाज़ यह थे:—

LIVE DANGEROUSLY

मैंने आटोग्राफ बुक वापस लेते हुए उनसे निहायत अदब से कहा कि मेरे मुरशद शायरे-मशरिक अल्लामा इक़बाल ने भी मुझे यही तालीम दी है। और मैंने इक़्बाल का एक मिस्रा पढ़ा "अगर ख़्वाही हयात अन्दर ख़तर जी" यानी अगर ज़िन्दगी चाहते हो तो खतरे में रहो। यह सुनकर नेहरू जी बहुत खुश हुये और फरमाया इक़बाल का क्या कहना वह तो तारीफ के बालातर हैं। डा. राजेन्द्र प्रसाद से भी मेरी मुलाक़ात बाबा-ए-उर्दू मौलवी अब्दुल हक ने कराई थी। डा. राजेन्द्र प्रसाद न सिर्फ एक माहिरे कानून थे बल्कि उर्दू और फारसी के बड़े विद्वान थे।एक बार जब मैं उनके बंगले पर उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो वह बहुत अच्छे मूड में थे और शैरो-शायरी पर बातचीत करने लगे और हज़रत अमीर खुसरो, मीर तक़ी मीर, ग़ालिब और इक़बाल का ज़िक्र आया।मैंने उनसे अर्ज़ किया कि मुझे इक़बाल की ख़िदमत करने का मौक़ा मिल चुका है। उन्होंने इक़बाल की उर्दू और फारसी शायरी की बहुत तारीफ की और फरमाया कि भारत की खुशक़िस्मती थी कि इक़बाल जैसा शायर यहां पैदा हुआ और उसने अपनी शायरी से हिन्दोस्तान का नाम सारी दुनिया में रोशन किया।

बुलबुले हिन्द मोहतरमा श्रीमती सरोजनी नायडू साहिबा से भी मेरी मुलाक़ात भोपाल में हुई थी और अल्लामा इक़बाल की शायरी के बारे में उनसे बातें हुई थी। नवाब हमीद उल्लाह खां साहब की बेगम शाहबानो मैमूना सुल्तान साहिबा से सरोजनी नायडू साहेबा का बहुत क़रीबी त-अल्लुक था और इस रिश्ते से वह भोपाल तशरीफ लाया करती थी। बेगम मैमूना सुल्तान की ख़िदमत में मैं भी अकसर जाया करता था।मैं उनकी बड़ी इज़्ज़त करता था। वह बड़ी लायक़ और क़ाबिले तारीफ ख़ातून थीं।एक बार जब सरोजनी नायडू साहेबा उनसे मिलने भोपाल तशरीफ लाई हुई थीं तो मैं ख़ास तौर पर उनसे मिलने गया था और उनसे अल्लामा

इक़बाल की शायरी और फल्सफे के मुताअल्लिक़ सवाल पूछे थे। सरोजनी नायडू इक़बाल को बेहद पसंद करती थीं। उनको अल्लामा के बहुत से शैर याद थे। सरोजनी नायडू साहेबा ने कुछ इस तरह बातें कही थीं:–

> "इक़बाल ने हम हिन्दोस्तानियों को आज़ादी की तालीम दी है।वह हिन्दोस्तान की आबरू हैं।इक़बाल ने हिन्दोस्तान की अज़मत के जो गीत गाये हैं वह हिन्दोस्तान के किसी भी दूसरे शायर या कवि ने नहीं गाये। इक़बाल तो हमारा इक़बाल है जो हमेशा क़ायम रहेगा।"

मशहूर साइन्सदां डा. शान्ति सरूप भटनागर से मेरी मुलाक़ात मिस्टर शु-ऐब कुरैशी ने पहली बार बम्बई में आल इन्डिया प्लानिंग कमेटी के इजलास में कराई थी।भटनागर जी बहुत अच्छे उर्दू शायर भी थे और उन्होंने अपने दीवान का नाम अपनी प्यारी पत्नी लाजवन्ती के नाम पर रखा था और दूसरी बार जब मैं शु-ऐब कुरैशी के साथ उनसे देहली में मिला था तो उन्होंने मेहरबानी करते हुए अपने दीवान की एक जिल्द मिस्टर शु-ऐब कुरैशी के साथ-साथ मुझे भी दी। शायरी पर देर तक बातें हुई और अल्लामा इक़बाल का ज़िक्र तफ़सील के साथ आया था और डा. भटनागर ने फरमाया था कि इक़बाल की शायरी और उनके फल्सफे को पढ़कर उनके ख़्यालात की बुलन्दी पर हैरत होती है। उनका हिन्दोस्तानियों पर बड़ा एहसान है।

माहिरे-क़ानून और राजनेता डा. कैलाश नाथ काटजू से बहुत क़रीब से मिलने का मुझे मौक़ा मिला। नये मध्यप्रदेश के बनने के बाद वह इस रियासत के मुख्यमंत्री बने। उन दिनों मैं मध्यप्रदेश की सेक्रेटरीऐट में आफिसर आन स्पेशल डयूटी लेबर डिपार्टमेंट था। डा. काटजू ने अपने मां-बाप के बारे में एक किताब लिखी थी और उस किताब का उर्दू में अनुवाद करने का काम मुझे सौंपा गया था। इस सिलसिले में मैं कई बार उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ करता था। डा. काटजू उर्दू और फारसी भी बहुत अच्छी जानते थे और शैरो-शायरी से बड़ी दिल-चस्पी रखते थे इस तरह इक़बाल का भी उन्होंने कई बार ज़िक्र किया था। कश्मीरी पंडित होने के नाते वह भी इक़बाल से बड़ी मोहब्बत रखते थे। फरमाते थे कि ग़ालिब के बाद अगर हिन्दोस्तान में कोई बड़ा शायर पैदा हुआ है तो वह इक़बाल हैं। मध्यप्रदेश बनने से पहले राजा सर अवध नारायण बिसर्या रियासत भोपाल के वज़ीरे-आज़म थे। वह बड़े क़ाबिल इन्सान थे। उर्दू और फारसी के बड़े विद्वान थे। जब अपने इलाज के सिलसिले में अल्लामा इक़बाल भोपाल तशरीफ़ लाते तो राजा साहब भी उनसे मिला करते थे।वहां उनसे मेरी मुलाक़ात भी हुआ करती थी। वह मुझ पर बड़ी मेहरबानी फ़रमाया करते थे। एक बार उन्होंने मुझसे फ़रमाया था कि भोपाल और भोपाल के नवाब साहब की इज़्ज़त में इक़बाल ने भोपाल में

तशरीफ लाकर चार चांद लगाऐ हैं। मुझसे फरमाते थे कि तुम बड़े खुश-नसीब आदमी हो कि इक़बाल की मोहब्बत की इज़्ज़त तुम्हें हासिल है।

इक़बाल से भोपाल की बाबस्तगी और उनके भोपाल में काफी दिनों तक क़याम की वजह से भोपाल का नाम आलमी अदब की तारीख़ में उसी तरह हमेशा ज़िन्दा रहेगा जिस तरह जर्मनी के मशहूर शायर गोएटे के संबंध से छोटे से शहर "वीमर" का है।

इक़बाल को भोपाल से बहुत मोहब्बत थी। वह इस शहर की खुबसूरती से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने भोपाल के हुस्न के बारे में एक नज़्म भी भोपाल में लिखी थी। रियाज़ मन्ज़िल और शीशमहल में अपने क़याम के दौरान इक़बाल ने कई बेमिसाल नज़्में लिखी थीं जो उनकी क़िताब जर्बे-कलीम में शामिल हैं। अल्लामा इक़बाल के भोपाल क़याम के दौरान मैं उनकी ख़िदमत किया करता था। उन्होंने कई शैर मुझे लिखवाए भी थे। वह मुझ नाचीज़ पर बड़ी मेहरबानी फरमाते थे। उन्होंने लाहौर से कई ख़त मुझे लिखे थे जो प्रकाशित हो चुके हैं। अपनी ज़िन्दगी के आखरी दिनों तक इक़बाल ने मुझ नाचीज़ को याद रखा।

हमारी मरकज़ और सूबाई हुकूमतों ने अल्लामा इक़बाल की यादगारों को स्थापित कराकर अपना नाम न सिर्फ सारे आलम में रोशन किया है बल्कि हमारे भोपाल का नाम भी तारीख़े-अदब में हमेशा के लिये ज़िन्दा कर दिया है। हक़ीक़त में यह काम हिन्दोस्तान के सेक्यूलर-चरित्र को पूरी तरह उजागर करता है।बांगे दिरा, बाले जिबरील और ज़र्बे कलीम इक़बाल की वह क़िताबें हैं जिनमें इक़बाल की उर्दू शायरी अपने कमाल पर है। उन क़िताबों में से इक़बाल के कलाम का चयन किया गया है। मुझे पूरी उम्मीद है कि इस क़िताब को पूरी दिलचस्पी से पढ़ा जायेगा।

मैंने इस मज़मून को तय्यार करने में अपने मोहतरम करम-फरमा आली जनाब सैय्यद मुज़फफर हुसैन बर्नी साहब भूतपूर्व हरियाणा और हाल चेयरमैंन मरकज़ी मग्रनारिटी कमीशन की क़िताब 'मुहिब्बे-वतन-इक़बाल' से बहुत सी मालूमात बाइज़ाजत हासिल की हैं और मदद ली है। बर्नी साहब का शुमार हमारे मुल्क के दानिश्वरों और इक़बाल शनासों में किया जाता है। अपनी सरकारी मसरूफियात के बावजूद बर्नी साहब इक़बालियात में काबिले-क़दर इज़ाफ़ा कर रहे हैं। उनकी इस इल्मी कोशिश के लिये बर्नी साहब का नाम तारीखे-अदब में बड़े ऐहतिराम से लिया जायेगा। भोपाल में आल इन्डिया अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़ के क़याम में भी उन्होंने जो मदद फरमाई है वह उनकी इक़बाल शनासी की रोशन दलील है। मेरी दिली दुआ है कि बर्नी साहब इसी तरह इक़बाल पर काम करते रहें और उनकी यह कोशिशें बराबर जारी रहें।

आल इन्डिया अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़ के सचिव प्रोफेसर फ़ज़ल ताबिश ने लिप्यांतर में जो मदद फरमाई है उसके लिये मैं उनका शुक्रगुज़ार हूँ। सैय्यदह नौशाबा नसीम साहेबा ने जो इक़बाल मरकज़ में कार्यरत हैं, इस किताब को तैयार कराने में मेरी मदद की है उसके लिये मैं उनका ममनून हूँ। मैं उन तमाम दीगर हज़रात का भी शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने इस किताब के मुसव्वदे को टाईप करने और छपाई में दिलचस्पी लेकर इस किताब को तैयार कराया। मैं इस मज़मून को इस दुआ के साथ खत्म करता हूँ:—

इलाही फिर कोई इक़बाल सा आतिश-नवा निकले
वतन की ख़ाक से फिर कोई ऐसा रहनुमा निकले

ममनून हसन खां,
अध्यक्ष
आल इंडिया अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़
भोपाल

दिनांक 2, अक्टूबर, 1990

हिमाला

ऐ हिमाला[1]! ऐ फ़सीले-किश्वरे-हिन्दोस्तां[2]!
चूमता है तेरी पेशानी को झुक कर आसमां
तुझ में कुछ पैदा नहीं देरीना-रोज़ी[3] के निशां
तू जवां है गरदिशे-शामो-सहर[4] के दरमियां
एक जलवा था कलीमे-तूरे-सीना[5] के लिये
तू तजल्ली है सरापा चश्मे-बीना[6] के लिये
इम्तिहाने-दीदऐ-ज़ाहिर[7] में कोहिस्तां[8] है तू
पासबां[9] अपना है तू, दीवारे-हिन्दुस्तां है तू
मत्लए-अव्वल[10] फ़लक[11] जिसका हो, वह दीवां[12] है तू
सूऐ-ख़िलवत-गाहे-दिल[13], दामन-कशे-इन्सां[14] है तू
बर्फ़ ने बांधी है दस्तारे-फ़ज़ीलत[15] तेरे सर
ख़न्दाज़न[16] है जो कुलाहे-महरे-आलम-ताब[17] पर
तेरी उम्रे-रफ़्ता[18] की इक आन[19] है एहदे-कुहन[20]
वादियों में हैं तेरी काली घटाऐं ख़ेमा-ज़न[21]
चोटियां तेरी सुरैय्या[22] से हैं सर-गर्मे-सुख़न[23]
तू ज़मीं पर और पहनाये-फ़लक[24] तेरा वतन
चश्मए-दामन[25] तिरा आईनऐ-सय्याल[26] है
दामने मौजे हवा जिस के लिये रुमाल है
अब्र के हाथों में रहवारे-हवा[27] के वास्ते
ताज़याना[28] दे दिया बर्के-सरे-कोहसार[29] ने

---

1. हिमालय 2. भारत के राज्य की दीवार 3. बृद्ध आवस्था 4. सवेरे और संध्या के चलते रहते 5. हजरत मूसा को खुदा ने तूर पहाड़ पर अपना जल्वा दिखाया था। तूर पर आप ने एक बार खुदा की कुदरत देखी 6. हिमालय हर देखने वाली आंख को खुदा की रोशनी दिखा रहा है 7. ऊपरी नज़र से देखने वालों के लिये 8. पहाड़ 9. निगरानी करने वाला 10. ग़ज़ल की पहली दो पंक्तियां मतला कहलती हैं। 11. आकाश 12. काव्य संकलन 13. दिल के एकांत की तरफ 14. इंसान को आकर्षित करना 15. महानता की पगड़ी 16. हंसी उड़ाना 17. दुनिया को रोशन करने वाले सूर्य की कुलाह (टोपी) 18. तेरी गुज़री हुई उम्र 19. पल, लम्हा 20. प्राचीन-काल 21. रहना, ठहरना 22. एक सितारे का नाम 23. बात-चीत करने में व्यस्त 24. आकाश की बुलंदी 25. तेरी वादी के झरने 26. पिघले हुए आईने 27. हवा का घोड़ा 28. कोड़ा, चाबुक 29. पहाड़ के ऊपर चमकने वाली बिजली।

ऐ हिमाला कोई बाज़ी-गाह[1] है तू भी, जिसे
दस्ते-क़ुदरत[2] ने बनाया है अनासिर[3] के लिये
हाय क्या फ़र्ते-तरब[4] में झूमता जाता है अब्र[5]
फ़ीले-बे-ज़ंजीर[6] की सूरत उड़ा जाता है अब्र
जुम्बिशे-मौजे-नसीमे-सुबह[7] गहवारा[8] बनी
झूमती है नश्शाऐ-हस्ती[9] में हर गुल की कली
यूँ ज़बाने-बर्ग[10] से गोया[11] है इसकी ख़ामोशी
दस्ते-गुलचीं[12] की झटक मैंने नहीं देखी कभी
कह रही है मेरी ख़ामोशी ही अफ़साना मिरा
कुंजे-खिलवत-ख़नाऐ-क़ुदरत[13] है काशाना[14] मिरा
आती है नद्दी फ़राज़े-कोह[15] से गाती हुई
कौसरो-तसनीम[16] की मौजों को शरमाती हुई
आईना सा शाहिदे-क़ुदरत[17] को दिखलाती हुई
संगे-रह[18] से गाह बचती, गाह टकराती हुई
छेड़ती जा इस इराके-दिलनशीं के साज़ को
ऐ मुसाफिर! दिल समझता है तिरी आवाज़ को
लैलिए-शब[19] खोलती है आके जब ज़ुल्फ़े-रसा[20]
दामने-दिल खींचती है आबशारों की सदा
वह ख़मोशी शाम की जिस पर तकल्लुम[21] हो फ़िदा
वह दरख़तों पर तफ़क्कुर[22] का समां छाया हुआ
कांपता फिरता है क्या रंगे-शफ़क़ कोहसार पर
ख़ुशनुमा लगता है यह ग़ाज़ा[23] तिरे रूख़सार[24] पर

---

1. खेल की जगह 2. खुदा के हाथ 3. उनसर का बहूवचन—पानी, आग, हवा और मिट्टी 4. खुशी की ज़्यादती 5. बादल 6. बे-जंजीर हाथी 7. सवेरे की हवा की लहर का हिलना 8. हिंडोला 9. जीवन का नशा 10 पत्ते की ज़बान 11. बोलना 12. फूल तोड़ने वाले का हाथ 13. क़ुदरत की तन्हाई का कुंज 14. घर 15. पहाड़ की ऊंचाई 16. जन्नत की दो नहरों के नाम 17. क़ुदरत को देखने वाला 18. रास्ते के पत्थर 19. रात की लैला 20. लम्बी जुल्फें 21. बातचीत 22. ख़्यालात 23. पावडर 24. गाल, इराक = ईरानी संगीत के एक राग का नाम।

ऐ हिमाला! दास्तां[1] उस वक़्त की कोई सुना
मसकने-आबाऐ-इन्सां[2] जब बना दामन[3] तिरा
कुछ बता उस सीधी सादी ज़िन्दगी का माजरा
दाग़ जिस पर ग़ाज़ाऐ-रंगे-तकल्लुफ़[4] का न था

हाँ दिखा दे ऐ तसव्वुर[5]! फिर वह सुबहो-शाम तू
दौड़ पीछे की तरफ़ ऐ गरदिशे-अयॅयाम[6] तू

---

1. किस्सा 2. पूर्वजों का घर 3. वादी 4. तकल्लुफ के पावडर का धब्बा 5. ख्याल 6. समय-चक्र।

मिर्ज़ा ग़ालिब

फ़िक्रे इंसां[1] पर तिरी हस्ती[2] से यह रोशन हुआ
है परे-मुर्ग़े-तख़य्युल[3] की रसाई[4] ता-कुजा[5]
था सरापा रूह[6] तू, बज़्मे-सुख़न[7] पैकर[8] तिरा
ज़ैबे-महफ़िल[9] भी रहा, महफ़िल से पिन्हां[10] भी रहा

दीद[11] तेरी आंख को उस हुस्न की मंज़ूर है
बन के सोज़े-ज़िन्दगी[12] हर शय[13] में जो मस्तूर है

महफ़िले-हस्ती तिरी बरबत से है सरमाया-दार
जिस तरह नद्दी के नग़मों से सुकूते-कोहसार[14]
तेरे फ़िरदोसे-तख़य्युल[15] से है कुदरत की बहार
तेरी किश्ते-फ़िक्र[16] से उगते हैं आलम सब्ज़ावार[17]

ज़िन्दगी मुज़मिर[18] है तेरी शोख़िये-तहरीर[19] में
ताबे-गोयाई[20] से जुम्बिश है लबे-तस्वीर[21] में

नत्क़[23] को सो नाज़ हैं तेरे लबे-ऐजाज़[24] पर
महवे-हैरत[25] है सुरैय्या[26] रिफ़-अते-परवाज़[27] पर
शाहिदे-मज़मूं[28] तसद्दुक़[29] है तिरे अंदाज पर
ख़न्दाज़न[30] है गुन्चऐ दिल्ली गुले-शीराज़[31] पर

आह! तू उजड़ी हुई दिल्ली में आरामीदा[32] है
गुलशने-वीमर[33] में तेरा हमनवा ख़्वाबीदा है

---

1. मनुष्य की समझ 2. व्यक्तित्व 3. ख्याल के पक्षी के पर, विचार 4. पहुँच 5. किस स्थान तक 6. सर से पैर तक आत्मा 7. शायरी की महफिल 8. जिस्म 9. महफिल की रौनक 10. छुपा हुआ 11. देखना 12. ज़िन्दगी की गर्मी 13. वस्तु 14. पहाड़ों की खामोशी 15. ख्यालात की जन्नत 16. ख्यालात की खेती 17. हरीभरी 18. छुपा हुआ 19. लेखन की शोखी, गालिब का एक शेर है... आगही दामे-शुनीदन जिस क़दर चाहे बिछाए, मुद्दुआ उनक़ा है अपनी शोखिये तहरीर का 20 बोलने की ताक़त 21. चित्र के होठ 23. बोलने की शक्ति 24. चमत्कारी होंठ 25. हैरत में डूबा हुआ 26. एक सितारे का नाम 27. उड़ान की ऊंचाई 28. ख़्याल का माशूक़ 29. कुरबान 30. हंसी उड़ाता हुआ 31. शीराज़ का फूल, शीराज़ ईरान के एक शहर का नाम, यह शहर दिल्ली से बहुत पहले साहित्य का शानदार केन्द्र था 32. आराम कर रहा है 33. वीमर शहर में गोएते की क़ब्र है, वीमर का बाग़।

लुत्फ़े-गोयाई[1] में तेरी हमसरी[2] मुम्किन नहीं
हो तख़य्युल का न जब तक फ़िक्रे-कामिल[3] हम-नशीं[4]
हाए! अब क्या हो गई हिन्दोस्तां की सरज़मीं
आह! ऐ नज़्ज़ारा-आमोज़े-निगाहे-नुक्ताबीं[5]

गैसुऐ-उर्दू[6] अभी मिन्नत-पज़ीरे-शाना[7] है
शम्अ यह सौदाई-ये-दिल-सोज़ी-ए-परवाना[8] है

ऐ जहान-आबाद[9]! ऐ गहवारऐ-इल्मो-हुनर[10]
हैं सरापा नालऐ-ख़ामोश[11] तेरे बामो-दर
ज़र्रे-ज़र्रे में तिरे ख़्वाबीदा[12] हैं शम्सो-क़मर[13]
यूँ तो पोशीदा हैं तेरी खाक में लाखों गुहर[14]

दफ़्न तुझमें कोई फ़ख़्रे-रोज़गार[15] ऐसा भी है?
तुझमें पिन्हा कोई मोती आबदार[16] ऐसा भी है?

---

1. बात करने का मज़ा 2. बराबरी 3. सम्पूर्ण सोच 4. बराबर 5. देखने योग्य बना देने वाली आंख 6. उर्दू की जुल्फें 7. कंघी का एहसान लेने योग्य—अभी उर्दू को और संवारा जाना है 8. यह ऐसा चिराग़ है जो परवाने के दिल को जलाने को दीवाना है 9. दिल्ली का पुराना नाम 10. ज्ञान और हुनर का पालना 11. खामोशी से फरयाद करना 12. सोए हुए 13. चाद सूरज 14. मोती 15. दुनिया जिस पर घमंड करे 16. चमकदार।

बच्चे की दुआ

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी
ज़िन्दगी शमअ[1] की सूरत हो खुदाया मेरी
दूर दुनिया का मिरे दम से अंधेरा हो जाये
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाये

हो मिरे दम से यूंही मेरे वतन की ज़ीनत[2]
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत

ज़िन्दगी हो मिरी परवाने की सूरत यारब
इल्म[3] की शम्अ से हो मुझको मोहब्बत यारब
हो मिरा काम ग़रीबों की हिमायत करना
दर्द-मन्दों से ज़ईफ़ों[4] से मोहब्बत करना

मिरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस रह[5] पे चलाना मुझको

---

1. चिराग़ 2. सजावट 3. ज्ञान 4. कमज़ोर, बुज़र्ग 5. रास्ता

शम्अ-ओ-परवाना

परवाना तुझसे करता है ऐ शम्अ ! प्यार क्यों ?
यह जाने बे-क़रार है तुझ पर निसार क्यों ?
सीमाब-वार[1] रखती है तेरी अदा उसे
आदाबे इश्क़ तूने सिखाये हैं क्या उसे ?
करता है यह तवाफ़[2] तिरी जलवा-गाह का
फूंका हुआ है क्या तिरी बरके-निगाह[3] का
आज़ारे-मौत[4] में उसे आरामे-जां है क्या ?
शौले में तेरे ज़िन्दगी-ए-जाविदां[5] है क्या ?
ग़म-ख़ानाऐ-जहां में जो तेरी ज़िया[6] न हो
इस तुफ़्ता-दिल[7] का नख़्ले-तमन्ना[8] हरा न हो
गिरना तिरे हुज़ूर में उसकी नमाज़ है
नन्हें से दिल में लज़्ज़ते-सोज़ो-गुदाज़[9] है
कुछ उसमें जोशे-आशिके-हुस्ने-क़दीम है
छोटा सा तूर[10] तू, यह ज़रा सा कलीम[11] है
परवाना और ज़ोके-तमाशाऐ-रौशनी
कीड़ा ज़रा सा और तमन्नाऐ-रौशनी

---

1. पारे की तरह 2. चौतरफ चक्कर लगाना 3. आंखों की आग 4. मौत की तक्लीफ़ 5. हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी 6. रोशनी 7. दिल जला, आशिक 8. इच्छा का पेड़ 9. रूला देने वाली हालत का आशिक 10. पहाड़ जहां मूसा को खुदा ने अपने दर्शन कराये थे 11. मूसा का लक्ब, बात करने वाला।

अक़्लो दिल

अक़्ल ने एक दिन यह दिल से कहा
भूले भटके की रह-नुमा हूँ मैं
हूँ ज़मीं पर, गुज़र फ़लक पे मिरा
देख तू किस क़दर रसा हूँ मैं
काम दुनिया में रहबरी है मिरा
मिस्ले-ख़िज़्रे-ख़ुजस्ता-पा[1] हूँ मैं
हूँ मुफ़स्सिर[2] किताबे-हस्ती की
मज़हरे-शाने-किबरिया[3] हूँ मैं
बूंद इक ख़ून की है तू लेकिन
ग़ैरते-लाले-बे-बहा[4] हूँ मैं
दिल ने सुन कर कहा यह सब सच है
पर मुझे भी तो देख क्या हूँ मैं
राज़े-हस्ती[5] को तू समझती है
और आंखों से देखता हूँ मैं
है तुझे वास्ता मुज़ाहिर[6] से
और बातिन[7] से आशना हूँ मैं
इल्म[8] तुझ से, तो मारिफ़त[9] मुझसे
तू ख़ुदा-जू[10] ख़ुदा-नुमा[11] हूँ मैं
इल्म की इन्तिहा है बेताबी
इस मरज़ की मगर दवा हूँ मैं

---

1. हज़रत खिज्र की तरह मुबारक क़दम 2. व्याख्या करने वाला 3. ख़ुदा की शान को प्रकट करने वाला 4. अनमोल लाल की ईर्षा 5. जीवन के रहस्य 6. प्रकट चीज़ें 7. अंतरात्मा 8. ज्ञान 9. अध्यात्म 10. ख़ुदा को ढूंढने वाली 11. ख़ुदा के दर्शन कराने वाला।

शम्अ तू महफ़िले-सदाक़त[1] की
हुस्न की बज़्म का दिया हूँ मैं
तू ज़मानो-मकां[2] से रिश्ता बपा
ताइरे-सिद्रह आशना[3] हूँ मैं
किस बुलन्दी पे है मकाम मिरा
अर्श-रब्बे-जलील[4] का हूँ मैं

---

1. सच्चाई 2. समय और स्थान 3. स्वर्ग के सबसे ऊंचे स्थान पर लगा बेरी के पेड़ से परिचित पक्षी 4. खुदा का तख़्त।

सदाऐ-दर्द

जल रहा हूँ कल नहीं पड़ती किसी पहलू मुझे
हाँ डुबो दे ऐ मुहीते-आबे-गंगा[1] तू मुझे
सरज़मीं[2] अपनी क़यामत की निफ़ाक़-अंगेज़[3] है
वस्ल कैसा यूँ तो इक क़ुर्बे-फ़िराक़-अंगेज़[4] है
बदले यक-रंगी के यह ना-आशानाई है ग़ज़ब
एक ही ख़िरमन[5] के दानों में जुदाई है ग़ज़ब
जिस के फूलों में उख़ुव्वत[6] की हवा आई नहीं
इस चमन में कोई लुत्फ़े-नग़मा-पैराई[7] नहीं
लज़्ज़ते-क़ुर्बे-हक़ीक़ी[8] पर मिटा जाता हूँ मैं
इख़्तिलाते-मोजा-ओ-साहिल[9] से घबराता हूँ मैं

दा-नए-ख़िरमन-नुमा[10] है शायरे-मोजिज़-बयां[11]
हो न ख़िमरन ही तो इस दाने की हस्ती फिर कहां
हुस्न हो क्या ख़ुद-नुमा[12], जब कोई माइल[13] ही न हो
शम्अ को जलने से क्या मतलब, जो महफ़िल ही न हो
ज़ौक़े-गोयाई[14] ख़मोशी से बदलता क्यों नहीं
मेरे आईने से यह जौहर निकलता क्यों नहीं

कब ज़बां खोली हमारी लज़्ज़ते-गुफ़्तार ने
फूँक डाला जब चमन को आतिशे-पैकार[15] ने

---

1. गंगा के पानी का भवंर 2. भूमि 3. फूट डालने वाली 4. अलग करने वाला मिलन 5. खलिह्यान 6. भाई-चारा 7. गीत गाने का मज़ा 8. वास्तविक मिलाप की लज़्ज़त 9. लहरों और किनारे का मिलाप 10. खलिह्यान की हालत बताने वाला एक दाना 11. बड़ा कवि 12. स्वयं को दिखाने वाला 13. आकर्षित 14. बात करने की रुचि शायरी करना 15. झगड़ों की आग।

आफ़ताब
(अनुवाद गायत्री)

ऐ आफ़ताब[1] रूहो-रवाने-जहां[2] है तू
शीराज़ा-बंदे-दफ़्तरे-कोनो-मकां[3] है तू
बा-अस[4] है तू वुजूदो-अदम[5] की नुमूद[6] का
है सब्ज़ तेरे दम से चमन हस्तो-बूद[7] का
कायम यह उन्सुरों[8] का तमाशा तुझी से है
हर शय में ज़िंदगी का तकाज़ा तुझी से है
हर शय[9] को तेरी जलवागरी[10] से सबात[11] है
तेरा यह सोज़ो-साज़ सरापा हयात[12] है
वह आफ़ताब जिससे ज़माने में नूर है
दिल है, ख़िरद[13] है, रूहे-रवां है, श-ऊर[14] है
ऐ आफ़ताब! हमको ज़ियाऐ-शऊर[15] दे
चश्मे-ख़िरद[16] को अपनी तजल्ली से नूर दे
है महफ़िले-वुजूद[17] का सामां-तराज़[18] तू
यज़दाने-साकिनाने-नशेबो-फ़राज़[19] तू
तेरा कमाल हस्ती-ए-हर जानदार में
तेरी नुमूद[20] सिलसिला-ए-कोहसार[21] में
हर चीज़ की हयात[22] का परवर-दिगार तू
ज़ाईदगाने-नूर[23] का है ताजदार तू
ने इब्तेदा कोई न कोई इन्तिहा तिरी
आज़ाद-क़ैदे-अव्वलो-आख़िर ज़िया तिरी

---

1. सूर्य 2. दुनिया की प्राणवायु 3. दुनिया को सन्तुलित रखने वाला 4. कारण 5. लोक यमलोक 6. उत्पत्ति 7. दुनिया 8. पंचभूत 9. चीज़ 10. दर्शन 11. स्थिरता 12. जीवन 13. बुद्धि 14. समझ 15. समझ की रोशनी 16. अक़्ल की आँख।
17. दुनिया 18. बनाने वाला 19. ऊँच नीच में रहने वालों का खुदा 20. उत्पत्ति 21. पहाड़ों का सिलसिला 22. जिंदगी 23. जो लोग रोशनी से पैदा हुए।

शम्अ

बज़्मे-जहां में, मैं भी हूं ऐ शम्अ! दर्द-मंद
फ़रियाद-दर-गिरह[1] सिफ़ते-दानए-सिपन्द[2]
दी इश्क़ ने हरारते-सोज़े-दरूं[3] तुझे
और गुल-फ़रोशे-अश्के-शफ़क़-गूँ[4] किया मुझे

हो शम्ऐ-बज़्मे ऐश[5] कि शम्ऐ मज़ार[6] तू
हर हाल अश्के-ग़म से रही हम किनार तू

यकबीं[7] तिरी नज़र सिफ़ते-आशिकाने-राज़[9]
मेरी निगाह माया-ए-अशोबे इम्तियाज़
काबे में, बुतकदे में है यकसां तिरी ज़िया[10]
मैं इम्तियाज़े-देरो-हरम[11] में फंसा हुआ

है शान आह की तिरे दूदे-सियाह[12] में
पोशीदा कोई दिल है तिरी जलवा-गाह में?

जलती है तू कि बर्के-तजल्ली[13] से दूर है
बेदर्द तेरे सोज़ को समझे कि नूर है
तू जल रही है और तुझे कुछ ख़बर नहीं
बीना[14] है और सोज़े-दरूं पर नज़र नहीं
मैं जोशे-इज़्तिराब[15] से सीमाब-वार[16] भी
आगाहे-इज़्तिराबे-दिले बे-करार[17] भी

था यह भी कोई नाज़ किसी बे-नियाज़ का
एहसास दे दिया मुझे अपने गुदाज़[18] का

---

1. जेब में फ़रयाद लिये 2. नज़र उतारने वाले काले दानों की तरह 3. अंदरुनी दुख की गर्मी 4. शफ़क़ जैसे आंसुओं के फूल बेचने वाला 5. खुशी की महफ़िल का चिराग़ 6. मज़ार की शम्अ 7. एक चीज़ देखने वाली 8. राज़दार आशिकों की तरह 9. भेद भाव के हंगामे का सरमाया 10. रोशनी 11. मस्जिद और मन्दिर का भेद 12. काला धुआँ 13. खुदा के दर्शन का नूर 14. देखने की शक्ति रखने वाला 15. बे-चैनी का जोश 16. पारे की तरह 17. बेकरार दिल की हालत से परिचित 18. दिल की नर्मी।

यह आगही मिरी मुझे रखती है बेक़रार
ख़्वाबीदा[1] इस शरर में हैं आतिश-कदे[2] हज़ार
यह इम्तियाज़े-रिफ़अतो-पस्ती[3] इसी से है
गुल में महक, शराब में मस्ती इसी से है
बुस्तानो-बुलबुलो-गुलो-बू[4] है यह आगही
अस्लो-कशाकशे-मनो-तू[5] है यह आगही
सुब्हे-अज़ल[6] जो हुस्न हुआ दिल-सिताने-इश्क़[7]
आवाज़े-कुन[8] हुई तपिश-आमोज़े-जाने-इश्क़[9]
यह हुक्म था कि गुलशने-कुन कीं बहार देख
एक आंख लेके ख़्वाबे-परीशां हज़ार देख
मुझसे ख़बर न पूछ हिजाबे-वुजूद[10] की
शामे-फ़िराक़ सुब्ह थी, मेरी नुमूद[11] की
वह दिन गये कि क़ैद से मैं आश्ना न था
जौबे-दरख़्ते-तूर[12] मिरा आशियाना था
क़ैदी हूँ और क़फ़स को चमन जानता हूँ मैं
ग़ुर्बत[13] के ग़मकदे को वतन जानता हूँ मैं
यादे वतन फ़सुर्दगी-ए-बे-सबब[14] बनी
शौके-नज़र कभी, कभी ज़ौके-तलब बनी
ऐ शम्अ! इन्तिहाए-फ़रेबे-ख़्याल[15] देख
मस्जूदे-साकिनाने-फ़लक[16] का म-आल[17] देख
मज़मूँ फिराक़ का हूँ, सुरैय्या निशां हूँ मैं
आहंगे-तब्ए-नाज़िमे-कोनो-मकां[18] हूँ मैं
बांधा मुझे जो उसने तो चाही मिरी नुमूद
तहरीर कर दिया सरे-दीवाने-हस्तो-बूद[19]

---

1. सोए हुए 2. आग के घर 3. ऊंच नीच का ख़्याल 4. बाग, बुलबुल, फूल और गंध 5. मैं और तू की कशमकश की जड़ 6. दुनिया की रचना का समय 7. प्रेम का दिल हरने वाला 8. होजा, खुदा ने कहा 'कुन' (होजा) और दुनिया हो गई 9. इश्क़ की जान को गर्मी सिखाने वाली 10. अस्तित्व का लुप्त रहना 11. उतपत्ति 12. तूर के पेड़ की ज़ीनत—तूर पर खुदा ने हज़रत मूसा को दर्शन दिए थे 13. मुसाफ़री 14. बिना कारण दुख 15. ख्याल के धोके की हद 16. आकाश पर रहने वाले जिसे सजदा करें, इन्सान को फरिश्तों ने सजदा किया था 17. अंजाम 18. दुनिया को चलाने वाले (खुदा) की रुचि का गीत 19. जीवन की किताब के ऊपर।

गौहर को मुश्ते-ख़ाक[1] में रहना पसंद है
बंदिश[2] अगरचि सुस्त है मज़मूं[3] बुलन्द है
चश्मे-ग़लत-नगर[4] का यह सारा क़सूर है
आलम ज़हूरे-जलवाऐ-ज़ौके-शऊर[5] है
यह सिलसिलअ ज़मानो-मकां[6] का कमन्द है
तौके-गुलूऐ-हुस्न[7] तमाशा-पसन्द है
मंज़िल का इश्तियाक़[8] है, गुम-कर्दा-राह हूँ
ऐ शम्अ! मैं असीरे-फ़रेबो-निगाह[9] हूँ
सय्याद[10] आप, हलक़ए-दामे-सितम[11] भी आप!
बामे-हरम[12] भी, तायरे-बामे-हरम[13] भी आप!
मैं हुस्न हूँ कि इश्के-सरापा गुदाज़ हूँ!
खुलता नहीं कि नाज़ हूँ मैं या नियाज़ हूँ।

हों आश्नाए-लब[14] हो न राज़े-कुहन[15] कहीं
फिर छिड़ न जाए क़िस्सए-दारो-रसन[16] कहीं

---

1. धूल की मुठ्ठी 2. शब्द रचना 3. विचार 4. गलत देखने वाली आंख 5. समझ की रूचि का प्रकट होना 6. काल और स्थान 7. हुस्न के गले का कड़ा 8. शौक़ 9. नज़र के धोके का क़ैदी 10. शिकारी 11. सितम का जाल 12. मस्जिद की छत 13. हरम की छत का पक्षी 14. होठों का परिचित यानि बात कह देना 15. पुराना रहस्य 16. सूली पर चढ़ाने का क़िस्सा।

एक आरज़ू

दुनिया की महफ़िलों से उकता गया हूँ यारब
क्या लुत्फ़ अंजुमन का जब दिल ही बुझ गया हो
शोरिश से भागता हूँ दिल ढूंढता है मेरा
ऐसा सुकूत जिस पर तक़रीर भी फ़िदा हो
मरता हूँ ख़ामुशी पर, यह आरज़ू है मेरी
दामन में कोह[1] के एक छोटा सा झोंपड़ा हो
आज़ाद फ़िक्र से हूँ , उज़लत[2] में दिन गुज़ारूँ
दुनिया के ग़म का दिल से कांटा निकल गया हो
लज़्ज़त सरोद की हो चिड़ियों के चहचहों में
चश्मे की शेरिशों में बाजा सा बज रहा हो
गुल की कली चटक कर पैग़ाम दे किसी का
साग़र[3] ज़रा सा गोया मुझको जहाँ-नुमा[4] हो
हो हाथ का सरहाना, सब्ज़े का हो बिछौना
शरमाये जिससे जिल्वत[5], ख़िल्वत[6] में वह अदा हो
मानूस इस क़दर् हो सूरत से मेरी बुलबुल
नन्हें से दिल में उसके खटका न कुछ मिरा हो
सफ़ बांधे दोनों जानिब बूटे हरे-हरे हों
नद्दी का साफ़ पानी तस्वीर ले रहा हो
हो दिल-फ़रेब ऐसा कोहसार[7] का नज़ारा
पानी भी मौज बन कर उठ-उठ के देखता हो

---

1. पहाड़ 2. तन्हाई 3. शराब का प्याला 4. दुनिया को दिखाने वाला 5. महफ़िल 6. तन्हाई 7. पहाड़।

आग़ोश में ज़मीं की सोया हुआ हो सब्ज़ा
फिर-फिर के झाड़ियों में पानी चमक रहा हो
पानी को छू रही हो झुक-झुक के गुल की टहनी
जैसे हसीन कोई आईना देखता हो
मेंहदी लगाये सूरज जब शाम की दुल्हन को
सुर्ख़ी लिये सुनहरी हर फूल की क़बा[1] हो
रातों को चलने वाले रह जाऐं थक के जिस दम
उम्मीद उनकी, मेरा टूटा हुआ दिया हो
बिजली चमक के उनको कुटिया मिरी दिखा दे
जब आस्मां पे हर सू बादल घिरा हुआ हो
पिछले पहर की कोयल , वह सुबह की मो-अज़्ज़िन[2]
मैं उसका हम-नवा[3] हूँ, वह मेरी हम-नवा हो
कानों पे हो न मेरे देरो-हरम[4] का एहसां
रोज़न[5] ही झोंपड़ी का मुझको सहर-नुमा[6] हो
फूलों को आये जिस दम शबनम वज़ू कराने
रोना मिरा वज़ू हो, नाला मिरी दुआ हो
इस ख़ामुशी में जाऐं इतने बुलन्द नाले
तारों के क़ाफ़ले को मेरी सदा, दिरा[7] हो
हर दर्दमन्द दिल को रोना मिरा रूला दे
बेहोश जो पड़े हैं शायद उन्हें जगा दे

---

1. लिबास 2. अज़ान देने वाला 3. साथी, हम-आवाज़ 4. मस्जिद और मन्दिर 5. छेद, रोशन-दान
6. सवेरे की सूचना देने वाला 7. क़ाफ़ले के रवाना होने के लिये बजाई जाने वाली घंटी।

आफ़ताबे-सुब्ह

शोरिशे-मय-ख़ानए-इंसां[1] से बाला तर है तू
ज़ीनते-बज्में—फ़लक[2] हो जिससे, वह साग़र है तू
हो दुरे-गोशे-अरुसे-सुब्ह[3], वह गौहर है तू
जिसपे सीमाये-उफ़क[4] नाज़ां[5] हो वह ज़ेवर है तू

सफ़-हये-अय्याम[6] से दाग़े-मदादे-शब[7] मिटा
आसमां से नक़्शे-बातिल[8] की तरह कोकब[9] मिटा

हुस्न तेरा जब हुआ बामे-फ़लक से जल्वागर
आंख से उड़ता है यकदम ख़्वाब की मय का असर
नूर से मामूर हो जाता है दामाने-नज़र
खोलती है चश्मे-ज़ाहिर को ज़िया[10] तेरी मगर

ढूंढती हैं जिसको आंखें वह तमाशा चाहिये
चश्मे-बातिन[11] जिससे खुल जाये वह जलवा चाहिये

शौके-आज़ादी के दुनिया में न निकले हौसले
ज़िन्दगी भर कैद ज़ंज़ीरे-त-अल्लुक में रहे
ज़ैरो-बाला[12] एक हैं तेरी निगाहों के लिये
आरज़ू है कुछ उसी चश्मे-तमाशा[13] की मुझे

आंख मेरी और के ग़म में स-रश्क-आबाद[14] हो
इम्तियाज़े-मिल्लतो-आईं[15] से दिल आज़ाद हो

बसतए-रंगे-खुसूसीयत[16] न हो मेरी ज़बां
नोऐ-इंसां[17] कौम हो मेरी, वतन मेरा जहां[18]

---

1. इन्सानों के शराब खाने के हंगामे 2. आकाश की महफ़िल की सजावट 3. सवेरे की दुल्हन के कान का मोती 4. आकाश की पेशानी 5. घमंड करने वाला 6. समय के पृष्ठ 7. रात के अंधेरे का दाग 8. झूठे चिन्ह 9. सितारा 10 रोशनी 11. अंतरात्मा की आंख 12. छोटे-बड़े 13. देखने वाली आंख 14. दुखी 15. धर्मों में भेद करना 16. विशेष भावना से ग्रस्त 17. इंसानी जाति 18. दुनियां।

दीदए-बातिन पे राज़े-नज़्मे-कुदरत[1] हो अयां
हो शनासाऐ-फ़लक[2] शम्ऐ-तख़य्युल[3] का धुआं
उक्दऐ-अज़दाद[4] कीं काविश न तड़पाऐ मुझे
हुस्ने-इश्क-अंगेज़[5] हर शय में नज़र आए मुझे
सदमा आ जाए हवा से गुल की पत्ती को अगर
अश्क बन कर मेरी आंखों से टपक जाऐ असर
दिल में हो सोज़े-मोहब्बत[6] का वह छोटा सा शरर
नूर से जिसके मिले राज़े-हक़ीक़त[7] की ख़बर
शाहिदे-क़ुदरत[8] का आईना हो दिल, मेरा न हो
सर में जुज़[9] हमदर्दीए-इंसां कोई सौदा[10] न हो
तू अगर ज़हमत-कशे-हंगामऐ-आलम[11] नहीं
यह फ़ज़ीलत[12] का निशां ए नय्यरे-आज़म[13] नहीं
अपने हुस्ने-आलम-आरा[14] से जो तू महरम[15] नहीं
हमसरे-यक-ज़र्राए-ख़ाके-दरे-आदम[16] नहीं
नूरे-मस्जूदे-मलक[17] गर्मे-तमाशा ही रहा
और तू मिन्नत-पज़ीरे-सुबह-फ़रदा[18] ही रहा
आरज़ू नूरे-हक़ीक़त की हमारे दिल में है
लैलए-ज़ौक़े-तलब[19] का घर इसी महफ़िल में है
किस क़दर लज़्ज़त कशूदे-उक्दऐ-मुश्किल[20] में है
लुत्फ़े-सद-हासिल[21] हमारी सई-ये-बे-हासिल[22] में है
दर्दे-इस्तिफ़हाम[23] से वाक़िफ तिरा पहलू नहीं
जुस्तजूऐ-राज़े-क़ुदरत[24] का शनासा तू नहीं

---

1. व्यवस्था का रहस्य 2. आकाश से परिचित, आकाश तक पहुँचे 3. विचारों का चिराग़ 4. भिन्न चीज़ों की समस्या 5. प्रेम भावना पैदा करने वाला सौन्दर्य 6. प्रेम की आग 7. वास्तविकता की सूचना 8. महबूब, खुदा 9. सिवाए 10. दीवानगी 11. दुनिया के हंगामों की तकलीफ़ सहने वाता 12. बड़ाई 13. सूरज 14. दुनिया को सजाने वाला सौन्दर्य 15. जानने वाला 16. आदमी के दरवाज़े की धूल के कण के बराबर 17. सजदा करने वाले फरिश्तों का नूर 18. आने वाले कल की तमन्ना करने वाला 19. चाहने की ख़्वाहिश की लैला 20. मुश्किल समस्या को हल करना 21. सौ चीज़ें पाने का मज़ा 22. ऐसी कोशिश जिस से कुछ प्राप्त न हो 23. जिज्ञासा का दर्द 24. खुदा के राज़ को जानने की इच्छा।

दर्दे-इश्क़

ऐ दर्दे-इश्क़[1]! है गुहर-ए-आबदार[2] तू
ना-मेहरमों[3] में देख न हो आशकार[4] तू
पिन्हां तहे-नक़ाब[5] तिरी जल्वा-गाह है
ज़ाहिर-परस्त[6], महफ़िले-नो की निगाह है
आई नई हवा चमने-हस्तो-बूद[7] में
ऐ दर्दे-इश्क़! अब नहीं लज़्ज़त नुमूद[8] में
हाँ! ख़ुद-नुमाईयों[9] की तुझे जुस्त्जू[10] न हो!
मिन्नत-पज़ीर[11], नाला-ऐ-बुलबुल[12] का तू न हो!
ख़ाली शराबे-इश्क़ से लाले का जाम हो
पानी की बूँद गिरया-ए-शबनम[13] का नाम हो
पिन्हां दरूने-सीना कहीं राज़ हो तिरा
अश्के-जिगर-गुदाज़[14] न ग़म्माज़[15] हो तिरा
गोया ज़बाने-शायरे-रंगीं-बयां न हो
आवाज़े-नय[16] में शिकवए-फ़ुरक़त[17] निहां न हो

यह दौर नुक्ता-चीं है कहीं छुप के बैठ रह
जिस दिल में तू मकीं[18] है वहीं छुप के बैठ रह

ग़ाफ़िल है तुझसे हैरते-इल्म-आफ़रीदा[19] देख
जोया[20] नहीं तिरी निग -हे-ना-रसीदा[21] देख
रहने दे जुस्त्जू में ख़्याले-बुलन्द को
हैरत में छोड़ दीदए-हिकमत-पसन्द[22] को

---

1. प्रेम का दुख 2. चमकदार मोती 3. न जानने वालों 4. प्रकट 5. नक़ाब में 6. गहराई से न देखने वाला 7. दुनिया 8. पैदाईश, होना 9. दिखावा 10. तलाश 11. एहसान मंद 12. बुलबुल की फ़रियाद 13. ओस के आंसू 14. जिगर को नर्म कर देने वाला आंसू 15. चुग़ली करने वाला 16. बांसुरी की आवाज़ 17. विरहकी शिकायत 18. रहने वाला 19. ज्ञान द्वारा पैदा की हुई हैरत 20. तलाश करने वाला 21. वह आंख जो लक्ष्य तक न पहुँच सके 22. बुद्धिमत्ता पसंद करने वाली आंख।

जिसकी बहार तू हो यह ऐसा चमन नहीं
क़ाबिल तिरी नुमूद के यह अंजुमन नहीं
यह अंजुमन है कुशता-ए-नज़्ज़ारा-ए-मजाज़[1]
मक़सद तिरी निगाह का ख़िलवतसरा-ऐ-राज़[2]

हर-दिल मये-ख़्याल[3] की मस्ती से चूर है
कुछ और आज-कल के कलीमों[4] का तूर है

---

1. दुनिया के दर्शन का मारा हुआ 2. भेदों का स्थान 3. ख़्याल की शराब 4. कलीमुल्लाह हज़रत मूसा का लक़ब है वह तूर पहाड़ पर ख़ुदा से बातें करते थे।

इश्क़ और मौत

सुहानी नुमूदे-जहां[1] की घड़ी थी
तबस्सुम-फ़िशां[2] ज़िन्दगी की कली थी
कहीं महर[3] को ताजे-ज़र[4] मिल रहा था
अता चांद को चांदनी हो रही थी
सियह पेरहन[5] शाम को दे रहे थे
सितारों को तालीमे-ताबन्दगी[6] थी
कहीं शाख़े-हस्ती को लगते थे पत्ते
कहीं ज़िन्दगी की कली फूटती थी
फरिश्ते सिखाते थे शबनम को रोना
हंसी गुल को पहले पहल आ रही थी
अता दर्द होता था शायर के दिल को
ख़ुदी[7] तश्ना-कामे-मये-बे-ख़ुदी[8] थी
उठी अव्वल अव्वल घटा काली-काली
कोई हूर[9] चोटी को खोले खड़ी थी
ज़मीं को था दावा कि मैं आसमां हूँ
मकां कह रहा था कि मै लामकां[10] हूँ
ग़रज़ इस कदर यह नज़ारा था प्यारा
कि नज़्जारगी हो सरापा नज़ारा
मलक[11] आज़माते थे परवाज़[12] अपनी
जबीनों[13] से नूरे-अजल[14] आशकारा

---

1. दुनिया की उत्पत्ति 2. मुस्कुराहट फैलाना 3. सूर्य 4. सोने का ताज 5. वस्त्र 6. चमकने की दीक्षा 7. आत्म सम्मान 8. मदहोशी की शराब से अ-परिचित 9. अप्सरा 10. असीम 11. फरिश्ते 12. उड़ान 13. पेशानी 14. उस समय की रोशनी जब सृष्टि की रचना हुई।

फरिश्ता था इक इश्क़ था नाम जिसका
कि थी रहबरी इसकी सब का सहारा
फरिश्ता कि पुतला था बेताबियों का
मलक का मलक और पारे का पारा
पये-सेर[1] फ़िरदोस[2] को जा रहा था
क़ज़ा[3] से मिला राह में वह क़ज़ारा[4]
यह पूछा "तिरा नाम क्या, काम क्या है
नहीं आंख को दीद[5] तेरी गवारा
हुआ सुन के गोया[6] क़ज़ा का फ़रिश्ता
अजल[7] हूं, मिरा काम है आशकारा[8]
उड़ाती हूं मैं रख़्ते-हस्ती[9] के पुर्ज़े
बुझाती हूं मैं ज़िन्दगी का शरारा
मिरी आँख में जादुऐ-नेस्ती[10] है
पयामे फ़ना है इसी का इशारा
मगर एक हस्ती है दुनिया में ऐसी
वह आतिश[11] है, मैं सामने उसके पारा
शरर बन के रहती है इन्सां के दिल में
वह है नूरे-मुतलक़[12] की आंखों का तारा
टपकती है आंखों से बन बन के आंसू
वह आंसू कि हो जिनकी तल्ख़ी[13] गवारा
सुनी इश्क़ ने गुफ़्तगू जब क़ज़ा की
हंसी उसके लब पर हुई आशकारा
गिरी उस तबस्सुम की बिजली अजल पर
अंधेरे का हो नूर में क्या गुज़ारा?
बक़ा[14] को जो देखा फ़ना हो गई वह
क़ज़ा थी, शिकारे क़ज़ा हो गई वह

---

1. सेर के लिये 2. स्वर्ग 3. मौत 4. इत्तेफ़ाक से 5. दर्शन 6. बोला 7. मौत 8. उजागर 9. जीवन के वस्त्र 10. नापैद करने का जादू 11. आग 12. खुदा 13. कड़वापन 14. हमेशा बाकी रहने वाला।

ज़ुह्द और रिंदी

इक मोलवी साहब की सुनाता हूँ कहानी
तेज़ी नहीं मंज़ूर तबीअत की दिखानी
शोहरा[1] था बहुत आपकी सूफ़ी-मनुशी[2] का
करते थे अदब उनका अ-आली-ओ-अदानी
कहते थे कि पिन्हां है तसव्वुफ़ में शरी-अत[3]
जिस तरह कि अल्फ़ाज़ में मुज़मिर[4] हों म-आनी
लबरेज मये-जुह्द से थी दिल की सुराही
थी तह में कहीं दुर्दे-ख़्याले-हमा-दानी[5]
करते थे ब्यां आप करामात का अपनी
मंज़ूर थी तादाद मुरीदों की बढ़ानी
मुद्दत से रहा करते थे हमसाये में मेरे
थी रिंद[6] की ज़ाहिद से मुलाकात पुरानी
हज़रत ने मिरे एक शनासा से यह पूछा
इकबाल कि है कुमरी-ए-शमशादे म-आनी[7]
पाबन्दिए-एहकामे-शरीअत[8] में है कैसा?
गो[9] शेर में है रश्के-कलीमे-हमादानी[9]
सुनता हूँ कि काफ़िर नहीं हिन्दू को समझता
है ऐसा अकीदा[10] असरे-फ़ल्सफ़ा-दानी
है उसकी तबीअत में त-शय्यो[11] भी ज़रा सा
तफ़्ज़ीले-अली[12] हम ने सुनी उसकी ज़बानी

---

1. ख्याति 2. संत आदमी 3. इस्लामी नियम 4. छुपे हुए 5. सब कुछ जानने के ख्याल की तलछट 6. गुनाहगार 7. अर्थ के पेड़ की चिड़िया—गहन अर्थों वाला कवि 8. इस्लामी कानून को मानने में 9. अगरचे 9. हज़रत मूसा जैसे जानकार को ईषा हो 10. विश्वास 11. शिया पंथि 12. हज़रत अली की बड़ाई का बयान।

समझा है कि है राग इबादात में दाख़िल
मक़सूद[1] है मज़हब की मगर ख़ाक उड़ानी
कुछ आर[2] उसे हुस्न फरोशों से नहीं है
आदत यह हमारे शु-अरा की है पुरानी
गाना जो है शब को तो सहर को है तिलावत[3]
इस रम्ज़[4] के अब तक न खुले हम पे म-आनी
लेकिन यह सुना अपने मुरीदों से है मैंने
बेदाग़ है मानिंदे सहर उसकी जवानी
मजमूआ-ए-अज़दाद[5] है, इक़बाल नहीं है
दिल दफ़्तरे-हिकमत[6] है, तबीअत-ख़फ़ाख़ानी
रिंदी से भी अगाह, शरीअत से भी वाक़िफ
पूछो जो तसव्वुफ़ की, तो मंसूर[7] का सानी
उस शख़्स की हम पर तो हकीक़त नहीं खुलती
होगा यह किसी और ही इस्लाम का बानी
अल्क़िस्सा बहुत तूल दिया वाज़[8] को अपने
ता देर रही आपकी यह नग़्ज़-बयानी[9]
इस शहर में जो बात हो, उड़ जाती है सबमें
मैंने भी सुनी अपने अहिब्बा[10] की ज़बानी
इक दिन जो सरे-राह मिले हज़रते-ज़ाहिद
फिर छिड़ गई बातों में वही बात पुरानी
फ़रमाया शिकायत वह मोहब्बत के सबब थी
था फ़र्ज़ मिरा राह शरीअत की दिखानी
मैंने यह कहा कोई गिला मुझको नहीं है
यह आपका हक था ज़ि-रहे-कुरबे-मकानी[11]

---

1. इच्छा 2. परहेज़ 3. क़ुर-आने शरीफ़ पढ़ना 4. राज़ 5. परस्पर विरोधी चीज़ों का मजमूआ 6. बुद्धिमत्ता का दफ़्तर 7. एक सूफ़ी का नाम है जिन्होंने—अनल हक़ (मैं ख़ुदा हूँ) कहा था और सूली पर चढ़ाया गया 8. धार्मिक भाषण 9. अच्छा बयान 10. दोस्तों 11. पड़ोसी होने के कारण से।

ख़म[1] है सरे तस्लीम मिरा आपके आगे
पीरी है तवाज़ो के सबब मेरी जवानी
गर आपको मालूम नहीं मेरी हक़ीक़त
पैदा नहीं कुछ उससे कुसूरे हमादानी
मैं खुद भी नहीं अपनी हक़ीक़त का शनासा
गहरा है मिरे बहरे-ख्यालात[2] का पानी
मुझको भी तमन्ना है कि इक़बाल को देखूँ
की उसकी जुदाई में बहुत अश्क-फ़िशानी[3]

इक़बाल भी इक़बाल से आगाह नहीं है
कुछ इसमें तमस्खुर[4] नहीं, वल्लाह[5] नहीं है!

---

1. झुका हुआ 2. विचारों का समुद्र 3. आंसू बहाना 4. हंसी मज़ाक 5. खुदा गवाह है।

तिफ़्ले-शीर-ख़्वार

मैंने चाक़ तुझसे छीना है तो चिल्लाता है तू
महरबां हूँ मैं, मुझे ना-महरबां समझा है तू
फिर पड़ा रोयेगा ऐ नो-वारिदे-अक़्लीमे-ग़म[1]
चुभ न जाये देखना! बारीक है नोके-क़लम
आह! क्यों दुख देने वाली शय[2] से तुझको प्यार है?
खेल इस काग़ज़ के टुकड़े से यह बे-आज़ार[3] है
गेंद है तेरी कहाँ? चीनी की बिल्ली है किधर?
वह ज़रा सा जानवर टूटा हुआ है जिसका सर
तेरा आइना था आज़ादे-गुबारे-आरज़ू[4]
आंख खुलते ही चमक उठ्ठा शरारे आरज़ू
हाथ की जुम्बिश[5] में, तरज़े-दीद[6] में पोशीदा है
तेरी सूरत, आरज़ू भी तेरी नोज़ाईदा[7] है
ज़िन्दगानी है तिरी आज़ादे-कैदे-इम्तियाज़[8]
तेरी आंखों पर हवेदा[9] है मगर क़ुदरत का राज़
जब किसी शय पर बिगड़ कर मुझसे, चिल्लाता है तू
क्या तमाशा है रदी[10] काग़ज़ से मन जाता है तू
आह! इस आदत में हम-आहंग[11] हूँ मैं भी तिरा
तू तलव्वुन-आशुना[12], मैं भी तलव्वुन-आशना
आरज़ी लज़्ज़त का शैदाई हूँ, चिल्लाता हूँ मैं
जल्द आ जाता है गुस्सा जल्द मन जाता हूँ मैं

---

1. दुखों के राज्य में नया-नया आने वाला 2. वस्तु 3. तकलीफ न देने वाला 4. इच्छा की धूल (ग़म) से मुक्त 5. हरकत 6. देखने का अन्दाज़ 7. नवजात 8. भेद करने से आज़ाद 9. प्रकट 10. रद्दी 11. मिलता जुलता 12. एक हालत पर न रहने वाला।

तिफ़्ले-शीर-ख़्वार = दूध पीता बच्चा।

मेरी आंखों को लुभा लेता है हुस्ने-ज़ाहिरी
कम नहीं कुछ तेरी नादानी से नादानी मिरी

तेरी सूरत, गाह गिरयां[1] गाह खन्दां[2] मैं भी हूँ
देखने को नौजवां हों, तिफले-नादां[3] मैं भी हूँ

---

1. रोना 2. हंसना 3. नादान बच्चा।

तस्वीरे-दर्द

नहीं मिन्नत-कशे-ताबे-शुनीदन[1] दास्तां मेरी
ख़मोशी गुफ़्तगू है, बे-ज़बानी है ज़बाँ मेरी
यह दस्तूरे-ज़बाँ बंदी है कैसा तेरी महफ़िल में
यहाँ तो बात करने को तरस्ती है ज़बां मेरी
उठाये कुछ वरक लाले[2] ने, कुछ नरगिस ने, कुछ गुल ने
चमन में हर तरफ़ बिखरी हुई है दास्तां मेरी
उड़ा ली कुमरियों[3] ने तूतियां[4] ने, अंदलीबों[5] ने
चमन वालों ने मिल कर लूट ली तर्ज़े-फ़ुग़ां[6] मेरी
टपक ऐ शमअ! आँसू बन के परवाने की आंखों से
सरापा दर्द हूँ, हसरत भरी है दास्तां मेरी
इलाही! फिर मज़ा क्या है यहां दुनिया में रहने का?
हयाते-जाविदां[7] मेरी न, मर्गे-ना-गहां[8] मेरी
मिरा रोना नहीं, रोना है यह सारे गुलिस्तां का
वह गुल हूँ मैं, ख़िजां हर गुल की है गोया ख़िजां मेरी

"दर-ईं-हसरत-सरा उमरेस्त अफ़सूने-जरस दारम
ज़े-फ़ैजे-दिल तपीदन हा, ख़रोशे बे नफ़स दारम"[9]

रयाज़े-दहर[10] में ना-आशनाऐ-बज़्मे-इशरत[11] हूँ
ख़ुशी रोती है जिसको, मैं वह महरूमे-मसर्रत[12] हूँ
मिरी बिगड़ी हुई तक़दीर को रोती है गोयाई[13]
मैं हर्फ़े-ज़ेरे-लब[14], शरमिंदा-ए-गोशे-समा-अत[15] हूँ

---

1. सुनने की शक्ति का एहसान लेने वाली 2. फूल का नाम 3. फ़ाख़्ता,परिंदा 4. तोता 5. बुलबुल
6. फ़रियाद करने का ढंग 7. हमेशा रहने वाली ज़िंदगी 8. ना-गहानी मौत
9. इस दुख भरी दुनिया में मेरी ज़िंदगी कारवां की घंटी की तरह है यानी उसमें शोर छुपा है। दिल की तपिश से मेरी शख़्सियत बे-आवाज़ फरियाद बन गई है;
10. दुनिया का बाग 11. ख़ुशी की महफ़िल से अ-परिचित 12. ख़ुशी से वंचित 13. बात करने की शक्ति 14. होठों होठों में कही गई बात 15. सुनने वाले कान से शरमिंदा।

परेशां हूँ मैं मुश्ते-ख़ाक[1], लेकिन कुछ नहीं खुलता
सिकन्दर[2] हूँ कि आईना हूँ या गर्दे-कदूरत[3] हूँ
यह सब कुछ है मगर हस्ती[4] मिरी मक़सद है क़ुदरत का
सरापा नूर हो जिस की हक़ीक़त, में वह ज़ुलमत[5] हूँ
ख़ज़ीना[6] हूँ छुपाया मुझको मुश्ते-ख़ाके-सहरा ने
किसी को क्या ख़बर है मैं कहाँ हूँ, किस की दौलत हूँ?
नज़र मेरी नहीं ममनूने-सैरे-अरसए-हस्ती[7]
मैं वह छोटी से दुनिया हूँ कि आप अपनी विलायत[8] हूँ
न सेहबा[9] हूँ, न साक़ी हूँ, न मस्ती हूँ, न पैमाना
मैं इस मैख़ानए-हस्ती[10] में हर शय[11] की हक़ीक़त हूँ

मुझे राज़े-दु-आलम[12] दिल का आईना दिखाता है
वही कहता हूँ जो कुछ सामने आँखों के आता है।

अता[13] ऐसा बयां मुझको हुआ रंगी-बयानों में
कि बामे-अर्श[14] के ताइर[15] हैं मेरे हम-ज़बानों[16] में
असर यह भी है इक मेरे जुनूने-फ़ित्ना-सामां[17] का
मिरा आईनए-दिल है क़ज़ा[18] के राज़दानों में
रूलाता है तिरा नज़्ज़ारा ऐ हिन्दुस्तां, मुझको
कि इबरत-ख़ेज[19] है तेरा फ़साना सब फ़सानों में
दिया रोना मुझे ऐसा कि सब कुछ दे दिया गोया[20]
लिखा किल्के-अज़ल[21] ने मुझको तेरे नोहा-ख़्वानों[22] में
निशाने-बर्गे-गुल[23] तक भी न छोड़ इस बाग़ में गुलचीं[24]!
तिरी क़िस्मत से रज़्म-आराईयां[25] हैं बाग़बानों में
छुपा कर आस्तीं में बिजलियां रख्खी हैं गरदूँ[26] ने
अना-दिल[27] बाग के ग़ाफ़िल न बैठें आश्यानों में

---

1. एक मुठ्ठी धूल 2. सिकन्दर के बारे में कहा जाता है कि उसने आईना बनाया था, यहाँ मुराद है आईना साज़ 3. अफसोस की धूल 4. व्यक्तित्व 5. अंधेरा 6. ख़ज़ाना 7. दुनिया को देखने का एहसानमंद 8. राज्य 9. शराब 10. जिंदगी का शराब-खाना 11. वस्तु 12. दोनों दुनियाओं के रहस्य 13. देना 14. आकाश 15. पक्षी 16. साथ गाने वाले-एक भाषा बोलने वाले 17 हंगामा खड़ा करने वाली दीवानगी 18. तक़दीर 19. सबक सिखाने वाला 20. यानी 21. सृष्टि के आरंभ का क़लम-ख़ुदा 22. मातमी गीत पढ़ने वाले 23. फूल की पत्ती का निशान 24. फूल तोड़ने वाला 25. लड़ाई-झगड़े 26. आसमां, आसमान ही तबाही लाता है ऐसी विचार-धारा है 27. बुलबुल।

सुन ऐ ग़ाफिल सदा[1] मेरी! यह ऐसी चीज़ है जिसको
वज़ीफ़ा जान कर पढ़ते हैं ताइर बोस्तानों[2] में
वतन की फ़िक्र कर नादां! मुसीबत आने वाली है
तिरी बरबादियों के मशवरे हैं आसमानों में
ज़रा देख उसको जो कुछ हो रहा है, होने वाला है
धरा क्या है भला एहदे-कुहन[3] की दास्तानों में
यह ख़ामोशी कहाँ तक? लज़्ज़ते-फ़रयाद पैदा कर!
ज़मीं पर तू हो, और तेरी सदा हो आसमानों में!
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो!
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में

यही आईने-कुदरत[4] है, यही अस्लूबे-फ़ितरत[5] है
जो है राहे-अमल[6] में गामज़न[7], महबूबे-फ़ितरत[8] है

हुवैदा[9] आज अपने ज़ख़्मे-पिनहां[10] करके छोड़ूँगा
लहू रो-रो के महफ़िल को गुलिस्तां करके छोड़ूँगा
जलाना है मुझे हर शमऐ-दिल को सोज़े-पिनहां से
तिरी तारीक रातों में चिराग़ां करके छोड़ूँगा
मगर गुन्चों की सूरत हों दिले-दर्द-आशना[11] पैदा
चमन में मुश्ते-ख़ाक अपनी परेशां करके छोड़ूँगा
पिरोना एक ही तस्बीह में इन बिखरे दानों को
जो मुश्किल है, तो इस मुश्किल को आसां करके छोड़ूँगा
मुझे ऐ हमनशीं! रहने दे शग़्ले-सीना कावी[12] में
कि मैं दाग़े-मोहब्बत को नुमायां करके छोड़ूँगा
दिखा दूँगा जहाँ को जो मिरी आँखों ने देखा है
तुझे भी सूरते-आईना हैरां करके छोड़ूँगा

---

1. आवाज़ 2. बाग़ों 3. प्राचीन-काल 4. ख़ुदाई-नियम 5. प्रकृति की शैली 6. कर्म का रास्ता 7. यात्रा करता हुआ 8. प्रकृति को महबूब 9. उजागर 10. छुपे हुए घाव 11. दुख से परिचित दिल 12. सीना पीटने का काम।

जो है परदों में पिन्हां, चश्मे-बीना देख लेती है
ज़माने की तबी-अत का तक़ाजा देख लेती है
किया रिफ़्-अत[1] की लज़्ज़त से न दिल को आशना तूने
गुज़ारी उम्र पस्ती में मिसाले-नक्शे-पा[2] तूने
रहा दिल-बस्ता-ए-महफ़िल[3], मगर अपनी निगाहों को
किया बैरूने-महफ़िल[4] से न हैरत-आश्ना तूने
फ़िदा करता रहा दिल को हसीनों की अदाओं पर
मगर देखी न इस आईने में अपनी अदा तूने
ता-अस्सुब छोड़ नादां! दहर[5] के आईना-ख़ाने में
यह तस्वीरें हैं तेरी जिन को समझा है बुरा तूने
सरापा[6] नालए-बैदादे-सोज़े-ज़िन्दगी[7] हो जा!
सिपंद-आसा[8] गिरह में बांध रक्खी है सदा तूने
सफ़ाए-दिल[9] को क्या आराईशे[10]-रंगे-त-अल्लुक़ से
कफ़े-आईना[11] पर बांधी है ओ नादां! हिना[12] तूने
ज़मीं क्या आसमां भी तेरी कज-बीनी[13] पे रोता है
ग़ज़ब है सत्रे-कुर-आं[14] को चलीपा[15] कर दिया तूने!
जबां से कर गया तौहीद[16] का दावा तो क्या हासिल!
बनाया है बुते-पिनदार[17] को अपना ख़ुदा तूने
कुएं में तूने यूसुफ़[18] को जो देखा भी तो क्या देखा
अरे ग़ाफ़िल! जो मुतलक़[19] था मुकय्यद[20] कर दिया तूने
हवस बालाए-मिम्बर[21] है तुझे रंगीं बयानी की
नसीहत भी तिरी सूरत है इक अफ़साना-ख़्वानी की
दिखा वह हुस्ने-आलम-सोज़[22] अपनी चश्मे-पुरनम[23] को
जो तड़पाता है परवाने को, रूलवाता है शबनम को

---

1. बुलंदी 2. पद-चिन्हों की तरह 3. महफ़िल से दिल लगाए हुए 4. महफ़िल के बाहर की हालत 5. दुनिया 6. सर से पैर तक 7. जिन्दगी के अत्याचारों के खिलाफ फ़रियाद 8. तावीज़ की तरह 9. दिल की पवित्रता 10. सजावट 11. आईने का हाथ, आईना 12. मेंहदी 13. टेढ़ी चाल 14. क़ुर-आन-शरीफ़ की पंक्तियाँ 15. सलीब 16. ख़ुदा के एक होने का विश्वास 17. घमंड की मूर्ति 18. एक पैगम्बर जिन्हें उनके सौतेले भाईयों ने अंधे कुएँ में फेंक दिया था। 19. आज़ाद 20. कैद 21. स्टेज से 22. दुनिया को जला देने वाला सौन्दर्य 23. भीगी आंख।

निरा[1] नज़्ज़ारा ही ऐ बुल-हवस[2]! मक़सद नहीं उसका
बनाया है किसी ने कुछ समझ कर चश्मे-आदम[3] को
अगर देखा भी उसने सारे आलम को तो क्या देखा
नज़र आई न कुछ अपनी हक़ीक़त जाम से जम[4] को
शजर[5] है फ़िरक़ा आराई[6], त-अस्सुब है समर[7] इसका
यह वह फल है कि जन्नत से निकलवाता है आदम को
न उठ्ठा जज़्बए-ख़ुर्शीद[8] से इक बर्गे-गुल तक भी
यह रिफ़-अत की तमन्ना है कि ले उड़ती है शबनम को
फिरा करते नहीं मजरूहे-उल्फ़त[9], फ़िक्रे-दरमां[10] में
यह ज़ख़्मी आप कर लेते हैं पैदा अपने मरहम को

मोहब्बत के शरर से दिल सरापा नूर होता है
ज़रा से बीज से पैदा रियाज़े-तूर[11] होता है

दवा हर दुख की है मजरूहे-तैग़े-आरज़ू[12] रहना
इलाजे ज़ख़्म है आज़ादे-एहसाने-रफ़ू[13] रहना
शराबे-बे-ख़ुदी[14] से ता फ़लक परवाज़[15] है मेरी
शिकस्ते-रंग[16] से सीखा है मैंने बन के बू[17] रहना
थमे क्या दीदए-गिरयां[18] वतन की नोहा-ख़्वानी में
इबादत चश्मे-शायर की है हर दम बा-वज़ू[19] रहना
बनाऐं क्या समझ कर शाख़े-गुल पर आशयां अपना
चमन में आह! क्या रहना जो हो बे-आबरू रहना
जो तू-समझे तो आज़ादी है पोशीदा मोहब्बत में
गुलामी है असीरे-इम्तियाज़े – मा-ओ-तू[20] रहना
यह इस्तग़ना[21] है पानी में नुगों[22] रखता है साग़र को
तुझे भी चाहिए मिस्ले-हुबाब-आबज़ू[23] रहना

---

1. केवल 2. हवस करने वाले 3. मनुष्य की आंख 4. जमशेद बादशाह ने ऐसा प्याला बनाया था जिस में वह सारी दुनिया को देख सकता था 5. पेड़ 6. जाति-भेद 7. फल 8. सूर्य का आकर्षण 9. मुहब्बत के घायल 10. इलाज की तलाश 11. तूर पहाड़ का बाग-खुदा के नूर की तरफ इशारा है। 12. इच्छा की तलवार से घायल 13. रफू करने केएहसानसेआज़ाद 14. मदहोश करने वाली शराब 15. उड़ान 16. रंग उड़ना 17. गंध 18. रोने वाली आंख 19. वज़ू में रहना -रोती हुई आंख शायर को बा-वज़ू रखती है। वज़ू-नमाज़ से पहले एक खास तरतीब से हाथ, मूंह, पांव आदि धोना 20. मैं और तू के भेद भाव में गिरफ़्तार 21. अनिच्छा 22. झुका हुआ 23. दरिया के बुलबुले की तरह-बुलबुला उलटे प्याले का सा होता है।

न रह अपनों से बे-परवा इसी में ख़ैर है तेरी
अगर मंज़ूर है दुनिया में ओ बेगाना-ख़ू[1] रहना
शराबे-रूह-परवर[2] है मोहब्बत नोऐ-इंसां[3] की
सिखाया उसने मुझको मस्त, बेजामो-सुबू[4] रहना

मोहब्बत ही से पाई है शिफ़ा बीमार क़ौमों ने
किया है अपने बख़्ते-ख़ुफ़ता[5] को बेदार[6] क़ौमों ने

बयाबाने-मोहब्बत[7], दश्ते-ग़ुर्बत[8] भी, वतन भी है
यह वीराना क़फ़स भी, आश्याना भी, चमन भी है
मोहब्बत ही वह मंज़िल है कि मंज़िल भी है सहरा[9] भी
जरस[10] भी, कारवां भी, राहबर भी, राहज़न भी है
मरज़ कहते हैं सब इसको, यह है लेकिन मरज़ ऐसा
छुपा जिसमें इलाजे-गरदिशे-चर्ख़े-कुहन[11] भी है
जलाना दिल का है गोया सरापा नूर हो जाना
यह परवाना जो सोज़ां[12] हो तो शम्ऐ-अंजुमन भी है
वही इक हुस्न है, लेकिन नज़र आता है हर-शय में
यह शीरीं[13] भी है, गोया, बेसतूँ[14] भी, कोहकन[15] भी है
उज़ाड़ा है तमीजे-मिल्लतो-आई[16] ने क़ौमों को
मिरे एहले-वतन के दिल में कुछ फ़िक्रे-वतन भी है
सुकूत-आमोज़[17], तूले-दास्ताने-दर्द[18] है, वरना
ज़बां भी है हमारे मुंह में और ताबे-सुख़न[19] भी है।

"नमीगरदीद कोतह रिश्तए मानी रहा करदम
हिकायत बोद बे पायां, ब-ख़ामोशी अदा करदम"[20]

---

1. मेल-जोल न रखने वाला 2. आत्मा की परवरिश करने वाली शराब 3. मानवता 4. बगैर सुराही और जाम के 5. सोई हुई किस्मत 6. जाग्रत 7. प्रेम का जंगल 8. परदेश का जंगल 9. रेगिस्तान, जंगल 10. कूच की घंटी 11. पुराने आसमान के चक्करों का इलाज 12. जलना 13. कोहकन (फरहाद) की महबूबा 14. वह पहाड़ जिसे काट कर फरहाद ने शीरीं को पाने के लिये नहर निकाली थी। 15. फरहाद, पहाड़ काटने वाला 16. धर्मों और नियमों के भेद-भाव 17. ख़ामोशी सिखाने वाली 18. दर्द की लम्बी कहानी 19. बातचीत करने की ताकत।
20. मेरी दास्तान को मुख्तसित नहीं किया जा सकता था, लिहाज़ा मैंने उसे बयान करना छोड़ दिया। मेरी लम्बी कहानी को मेरी खामोशी बयान कर रही है।

चाँद

मेरे वीराने से कोसों दूर है तेरा वतन
है मगर दरिया-ऐ-दिल तेरी कशिश[1] से मौज ज़न[2]
क़स्द[3] किस महफ़िल का है? आता है किस महफ़िल से तू?
ज़र्द-रू[4] शायद हुआ रंजे-रहे-मंज़िल से तू?
आफ़रीनश[5] में सरापा नूर तू, ज़ुलमत[6] हूँ मैं
इस सियह-रोज़ी[7] पे लेकिन तेरा हम-क़िस्मत हूँ मैं
आह! मैं जलता हूँ सोज़े-इश्तियाक़े-दीद[8] से
तू सरापा सोज़ दागे़-मिन्नते-खुर्शीद[9] से
एक हल्के पर अगर क़ायम तिरी रफ़्तार है
मेरी गरदिश भी मिसाले गरदिशे परकार है
ज़िन्दगी की रह में सर-गरदां है तू, हैरां हूँ मैं
तू फ़रोज़ां[10] महफ़िले हस्ती में है, सोज़ां[11] हूँ मैं
मैं रहे मंज़िल[12] में हूँ, तू भी रहे मंज़िल में है
तेरी महफ़िल में जो ख़ामोशी है, मेरे दिल में है
तू तलब-ख़ू[13] है, तो मेरा भी यही दस्तूर है
चांदनी है नूर तेरा, इश्क मेरा नूर है
अंजुमन है एक मेरी भी जहां रहता हूँ मैं
बज़्म में अपनी अगर यकता है तू, तन्हां हूँ मैं
महर[14] का पर्तो[15] तिरे हक में है पैग़ामें-अजल[16]
-महव[17] कर देता है मुझको जलवाए-हुस्ने-अज़ल[18]

---

1. आकर्षण 2. लहरें मारना 3. इरादा 4. पीला चहरा 5. जन्म 6. अंधेरा 7. दुर्भाग्य 8. दर्शन करने की इच्छा की आग 9. सूर्य के एहसान का दाग़ 10. रोशनी फैलाता हुआ 11. जलता हुआ 12. मंजिल का रास्ता 13. मांगने की आदत वाला 14. सूर्य 15. रोशनी 16. मौत का संदेश 17. किसी विचार में खो जाना 18. सृष्टि के आरंभ के सौन्दर्य का दर्शन।

फिर भी ए माहे-मुबीं[1]! मैं और हूँ तू और है
दर्द जिस पहलू से उठता हो वह पहलू और है
गर्चि मैं ज़ुल्मत सरापा हूँ, सरापा नूर तू
सैकड़ों मंज़िल[2] है ज़ौक़े-आगही[3] से दूर तू

जो मिरी हस्ती का मक़सद है मुझे मालूम है
यह चमक वह है, जबीं[4] जिससे तिरी महरूम[5] है!

---

1. दिखने वाला चांद 2. पड़ाव 3. ज्ञान का शौक़ 4. पेशानी 5. वंचित।

सर-गुज़श्ते-आदम

सुने कोई मिरी गुरबत[1] की दास्तां मुझसे
भुला या क़िस्सऐ-पैमाने-अव्वलीं[2] मैंने
लगी न मेरी तबीअत रियाज़े-जन्नत[3] में
पिया शऊर[4] का जब जामेआतिशीं[5] मैंने
रही हक़ीक़ते-आलम[6] की जुस्तजू[7] मुझको
दिखाया औजे-ख़्याले-फ़लक-नशीं[8] मैंने
मिला मिज़ाज तग़य्युर-पसंद[9] कुछ ऐसा
किया क़रार न ज़ेरे-फ़लक कहीं मैंने
निकाला काबे से पत्थर की मूरतों को कभी
कभी बुतों को बनाया हरम-नशीं[10] मैंने
कभी मैं ज़ौक़े-तकल्लुम[11] में तूर पर पहूंचा
छुपाया नूरे-अज़ल[12], ज़ेरे-आस्तीं मैंने
कभी सलीब पे अपनों ने मुझको लटकाया[13]
किया फ़लक को सफ़र, छोड़ कर ज़मीं मैंने
कभी मैं ग़ारे-हरा[14] में छुपा रहा बरसों
दिया जहां को कभी जामे-आख़रीं मैंने
सुनाया हिन्द में आकर सरोदे-रब्बानी[15]
पसंद की कभी यूनां की सर-ज़मीं मैंने
दयारे-हिन्द ने जिस दम मिरी सदा न सुनी
बसाया ख़ित्ता-ए-जापानो-मुल्के-चीं[16] मैंने

---

1. यात्रा 2. पहले वचन की बात, खुदा द्वारा मना करने पर भी आदम ने जन्नत का फल खाया और उसे सज़ा के तौर पर ज़मीन पर भेजा गया 3. जन्नत का बाग़ 4. सझ 5. आग भरा प्याला 6. दुनिया की वास्तविकता 7. तलाश 8. आकाश पर बैठे-ख़्याल की बुलंदी 9. तब्दीली पसंद करने वाला 10. काबे में बिठाये 11. बात करने का शौक, हज़रत मूसा की तरफ इशारा है कि वह तूर पहाड़ पर खुदा से बात करते थे 12. हज़रत मूसा का एक चमत्कार, जब वह आस्तीन हटाते थे तो हथेली से रोशनी निकलती थी 13. हज़रत ईसा की तरफ इशारा है 14. वह ग़ार जिसमें हज़रत मोहम्मद ने पनाह ली थी 15. खुदा का गीत यानी संदेश (महात्मा गौतम बुद्ध) 16. बौध धर्म भारत से बाहर चीन, जापान में फैला।

बनाया ज़र्रों की तरकीब से कभी आलम
ख़िलाफ़े-मानी-ए-तालीमे-एहले-दीं[1] मैंने
लहू से लाल किया सैंकड़ों ज़मीनों को
जहां में छेड़ के पैकारे-अक़्लो-दीं[2] मैंने
समझ में आई हक़ीक़त न जब सितारों की
इसी ख़्याल में रातें गुज़ार दीं मैंने
डरा सकीं न कलीसा की मुझको तलवारें
सिखाया मस-अला-ए-गरदिशे-ज़मीं[3] मैंने
कशिश[4] का राज़ हवैदा किया ज़माने पर
लगा के आईना-ए-अक़्ले-दूर-बीं मैंने
किया असीर[5] शुआओं को, बर्क़े-मुज़तर[6] को
बना दी ग़ैरते-जन्नत यह सर ज़मीं मैंने
मगर ख़बर न मिली आह! राज़े-हस्ती की
किया ख़िरद से जहां को तहे-नगीं[7] मैंने
हुई जो चश्मे-मज़ाहिर-परस्त-वा[8] आख़िर
तो पाया ख़ानाऐ[9]-दिल में उसे मकीं[10] मैंने

. धार्मिक लोगों की शिक्षा के विरुद्ध 2. अक़्ल और धर्म की लड़ाई 3. ज़मीन घूमने का मामला
4. ज़मीन की आकर्षण शक्ति 5. क़ैद 6. बे-चैन बिजली 7. अक़्ल से जहां के भेद जाने 8. उजागर
ीज़ों की पूजा करने वाली आंख जब खुल गई 9. दिल का घर 10. बैठा हुआ।

तरानाए-हिन्दी

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुल्सितां हमारा
गुरबत[1] में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहां हमारा
पर्बत वो सबसे ऊँचा, हम साया आसमां का
वो संतरी हमारा, वो पास्बां[2] हमारा
गोदी में खेलती हैं इस की हज़ारों नदियां
गुलशन है जिनके दम से रश्के-जिनां[3] हमारा
ऐ आबे-रोदे-गंगा[4]! वो दिन हैं याद तुझको?
उतरा तिरे किनारे जब कारवां हमारा
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा
यूनानों-मिस्रो-रोमा सब मिट गये जहां से
अब तक मगर है बाक़ी नामो-निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-ज़मां[5] हमारा
इक़बाल कोई महरम[6] अपनी नहीं जहां में
मालूम क्या किसी को दर्दे-निहाँ[7] हमारा

---

1. परदेश में होना 2. चौकीदार 3. स्वर्ग जिससे ईर्षा करे 4. गंगा का पानी 5. ज़माना 6. जानकार 7. आंतरिक पीड़ा।

जुगनू

जुगनू की रोशनी है काशाना-ए-चमन[1] में
या शम्आ[2] जल रही है फूलों की अंजुमन में
आया है आसमां से उड़ कर कोई सितारा
या जान पड़ गई है महताब[3] की किरन में
या शब की सल्तनत में दिन का सफ़ीर[4] आया?
गुरबत[5] में आके चमका, गुमनाम था वतन में?
तुक्मा[6] कोई गिरा है महताब की क़बा[7] का?
ज़र्रा है या नुमायां सूरज के पैरहन में?
हुस्ने-क़दीम की यह पोशीदा इक झलक थी
ले आई जिसको क़ुदरत ख़िलवत[8] से अंजुमन में?
छोटे से चांद में है ज़ुलमत[9] भी रोशनी भी
निकला कभी गहन से, आया कभी गहन में

परवाना इक पतंगा, जुगनू भी इक पतंगा
वह रोशनी का तालिब, यह रोशनी सरापा

हर चीज़ को जहां में क़ुदरत ने दिलबरी दी
परवाने को तपिश दी, जुगनू को रोशनी दी
रंगीं-नवा[10] बनाया मुरग़ाने-बे-ज़बां[11] को
गुल को ज़बान दे कर तालीमे-ख़ामुशी दी
नज़्ज़ारा-ए-शफ़क़ की ख़ूबी ज़वाल[12] में थी
चमका के इस परी को थोड़ी सी ज़िन्दगी दी

---

1. बाग़ का घर 2. चिराग़ 3. चांद 4. दूत 5. परदेश 6. बटन का बंधन 7. लिबास 8. एकांत 9. अंधेरा 10. अच्छा गाने वाले 11. बे-ज़बान पक्षियों को 12. पस्ती, खात्मा।

रंगीं किया सहर को, बांकी दुल्हन की सूरत
पहना के लाल जोड़ा शबनम की आरसी दी
साया दिया शजर को, परवाज़ दी हवा को
पानी को दी रवानी, मौजों को बेकली दी
यह इम्तियाज़[1] लेकिन इक बात है हमारी
जुगनू का दिन वही है जो रात है हमारी
हुस्ने-अज़ल[2] की पैदा हर चीज़ में झलक है
इंसां में वह सुख़न[3] है, गुन्चे में वह चटक है
यह चांद आसमां का शायर का दिल है गोया
वां चांदनी है जो कुछ, यां दर्द की कसक है
अंदाज़े-गुफ़्तगू ने धोके दिये हैं, वर्ना
नग़मा है बूऐ-बुलबुल[4] बू फूल की चहक है
कसरत[5] में हो गया है वहदत[6] का राज़ मख़फ़ी
जुगनू में जो चमक है, वह फूल में महक है
यह इख़्तेलाफ़ फिर क्यों हंगामों का महल[7] हो ?
हर शय[8] में जबकिपिन्हां ख़ामोशिए-अज़ल हो

---

1. फ़र्क़ 2. सृष्टि के आरंभ का सौन्दर्य 3. बात 4. बुलबुल की गंध 5. अनेकता 6. एकता 7. कारण 8. वस्तु।

हिन्दोस्तानी बच्चों का क़ौमी गीत

चिश्ती ने जिस ज़मीं में पैग़ामे-हक़[1] सुनाया
नानक ने जिस चमन में वहदत[2] का गीत गया
तातारियों[3] ने जिसको अपना वतन बनाया
जिसने हिजाज़ियों[4] से दश्ते-अरब[5] छुड़ाया
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था
सारे जहां को जिसने इल्मो-हुनर[6] दिया था
मिट्टी को जिसकी हक़[7] ने ज़र[8] का असर दिया था
तुर्कों[9] का जिसने दामन हीरों से भर दिया था
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

टूटे थे जो सितारे फारस के आसमां से
फिर ताब[10] दे के जिसने चमकाये कहकशाँ[11] से
वहदत की लय सुनी थी दुनिया ने जिस मकाँ से
मीरे-अरब[12] को आई ठण्डी हवा जहाँ से
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

बन्दे-कलीम जिसके, परबत जहां के सीना
नूहे-नबी[13] का आकर ठहरा जहां सफ़ीना[14]
रिफ़अत[15] है जिस ज़मीं की बामे-फ़लक[16] का ज़ीना
जन्नत की ज़िन्दगी है जिसकी फ़ज़ा[17] में जीना
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है

---

1. ख़ुदा का संदेश 2. एक ईश्वर मानना 3. तातार के रहने वाले 4. अरब के रहने वाले 5. अरब का रेगिस्तान 6. शिक्षा और कला 7. ख़ुदा 8. सोना 9. तुर्की के रहने वाले 10. चमक 11. सितारों का झरमुट 12. पैगम्बर मोहम्मद साहब ने एक दिन कहा था कि मुझे हिन्दोस्तान की तरफ से ठण्डी हवा आती महसूस होती है. इसी तरफ इशारा है। 13. मुसलमानों के वे अवतार जिनके ज़माने में प्रलय आया था 14. बड़ी नाव 15. ऊँचाई 16. आसमान का छज्जा 17. वातावरण।

नया-शिवाला

सच कह दूं ऐ बृहमन! गर तु बुरा न माने
तेरे सनम-कदों[1] के बुत हो गये पुराने
अपनों से बैर रखना तूने बुतों[2] से सीखा
जंगो-जदल सिखाया वाईज़[3] को भी ख़ुदा ने
तंग आके मैंने आख़िर देरो-हरम[4] को छोड़ा
वाइज़ का वाज़ छोड़ा छोड़े तिरे फ़साने

पत्थर की मूरतों में समझा है तू ख़ुदा है
ख़ाके-वतन का मुझको हर ज़र्रा देवता है
आ, गैरियत[5] के परदे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें, नक़्शे-दुई[6] मिटा दें
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ, इक नया शिवाला[7] इस देस में बना दें
दुनिया के तीरथों[8] से ऊँचा हो अपना तीरथ
दामाने आसमां से इस का कलस मिला दें
हर सुबह उठके गाऐं मंतर[9] वह मीठे-मीठे
सारे पुजारियों को मय[10] पीत की पिला दें

शक्ति भी शांति भी भक्तों के गीत में है
धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है।

---

1. मन्दिरों 2. उर्दू काव्य-भाषा में बुत महबूब को कहते हैं और महबूब हमेशा अपने आशिकों से दूर रहता है। 3. मुसलमान प्रवचन देने वाला 4. मन्दिर-मस्जिद 5. अंजानपन 6. अलग-अलग होने का चिन्ह 7. मन्दिर 8. तीर्थ स्थान 9. मंत्र 10. शराब।

अब्र

उठी फ़िर आज वह पूरब[1] से काली काली घटा
सियाह पोश हुआ फिर पहाड़ "सरबन"[2] का
निहां[3] हुआ जो रूख़े-महर[4], ज़ेरे-दामने अब्र[5]
हवाऐ-सर्द भी आई सवारे-तोसने-अब्र[6]
गरज का शोर नहीं है, ख़ामोश है यह घटा
अजीब मय-कदा-ए-बे-ख़रोंश[7] है यह घटा
चमन में हुक्मे निशाते मदाम लाई है
क़बाये-गुल[8] में गुहर टांकने को आई है
जो फूल महर की गरमी से सो चले थे, उठे
ज़मीं की गोद में जो पड़ के सो रहे थे, उठे
हवा के ज़ोर से उभरा, बढ़ा, उड़ा बादल
उठी वह और घटा, लो! बरस पड़ा बादल

अजीब ख़ैमा है कोहसार के निहालों[9] का
यहीं क़याम हो वादी में फिरने वालों का

---

1. पूर्व 2. स्थान का नाम 3. छुपा 4. सूरज का चेहरा 5. बादल के नीचे 6. बादल के शरीर घोड़े पर सवार 7. बग़ैर शोरगुल का शराब खाना 8. फूल का लिबास 9. पेड़ों।

एक परिंदा और जुगनू

सरे शाम एक मुर्ग़े-नग़मा[1] पैरा
किसी टहनी पर बैठा गा रहा था
चमकती चीज़ इक देखी ज़मीं पर
उड़ा ताइर[2] उसे जुगनू समझ कर
कहा जुगनू ने ओ मुरग़े-नवारेज़[3]
न कर बेकस पे मिन्क़ारे-हवस[4] तेज़
तुझे जिस ने चहक, गुल को महक दी
इसी अल्लाह ने मुझको चमक दी
लिबासे-नूर[5] में मस्तूर[6] हूँ मैं
पतंगों के जहाँ का तूर[7] हूँ मैं
चहक तेरी बहश्ते-गोश[8] अगर है
चमक मेरी भी फ़िरदोसे-नज़र[9] है
परों को मेरे क़ुदरत ने ज़िया[10] दी
तुझे उसने सदाऐ-दिलरुबा दी
तिरी मिन्क़ार को गाना सिखाया
मुझे गुलज़ार की मिशअल[11] बनाया
चमक बख़्शी मुझे, आवाज़ तुझको
दिया है सोज़[12] मुझको, साज़ तुझको
मुख़ालिफ़[13] साज़ का होता नहीं सोज़
जहाँ में साज़ का है हमनशीं[14] सोज़

---

1. गाता हुआ परिंदा 2. परिंदा 3. गाने वाला परिंदा 4. लालची चोंच 5. रोशनी का लिबास 6. छुपा हुआ 7. वह पहाड़ जहां ख़ुदा ने हज़रत मूसा को अपना जलवा दिखाया था 8. कानों को खुशी देने वाला
9. नज़र की जन्नत 10. रोशनी 11. मशाल 12. दुख 13. प्रतिद्वंदी 14. साथी।

क़यामे-बज़्मे-हस्ती[1] है उन्हीं से
ज़हूरे-औजो-पस्ती[2] है उन्हीं से

हम आहंगी[3] से है महफ़िल जहां की
इसी से है बहार इस बोस्तां[4] की

---

1. ज़िन्दगी की महफ़िल का अस्तित्व 2. बुलंदी और पस्ती का प्रकट होना 3. एकता
4. बाग।

बच्चा और शम्अ

कैसी हैरानी है यह ऐ तिफ़-लके-परवाना-ख़ू[1]
शम्अ[2] के शोलों को घड़ियों देखता रहता है तू
यह मिरी आग़ोश में बैठे हुऐ जुम्बिश[3] है क्या
रोशनी से क्या बग़ल-गीरी[4] है तेरा मुद-दआ[5]
इस नज़ारे से तिरा नन्हा सा दिल हैरान है
यह किसी देखी हुई शय[6] की मगर पहचान है
शम्अ इक शोला है, लेकिन तू सरापा नूर है
आह! इस महफ़िल में यह उरयां[7] है, तू मस्तूर[8] है
दस्ते-क़ुदरत[9] ने इसे क्या जाने क्यों उरयां किया
तुझको ख़ाके तीरा[10] के फ़ानूस में पिन्हां किया
नूर तेरा छुप गया ज़ैरे-नक़ाबे-आगही[11]
है ग़ुबारे-दीदए-बीना[12] हिजाबे-आगही[13]
ज़िन्दगानी जिसको कहते हैं फ़रामोशी[14] है यह
ख़्वाब है, ग़फ़लत है, सरमस्ती है, बेहोशी है यह
महफ़िले-क़ुदरत है इक दरियाए बे-पायाने-हुस्न[15]
आंख अगर देखे तो हर क़तरे में है तूफ़ाने-हुस्न
हुस्न कोहिस्तां[16] की हैबत-नाक ख़ामोशी में है
मेहर[17] की ज़ौ-गुस्तरी[18], शब की सियाह-पोशी में है
आसमाने-सुब्ह की आईना-ज़ेशी में है यह
शाम की ज़ुल्मत[19] शफ़क़ की गुल-फ़रोशी में है यह

---

1. परवाने की तरह की रूचि रखने वाला बच्चा 2. चिराग़ 3. हिलना-डुलना 4. गले मिलना 5. मक़सद 6. वस्तु 7. उजागर 8. छुपा हुआ 9. ख़ुदा के हाथ 10. अंधेरी मिटटी 11. ज्ञान के परदे में 12. देखने वाली आंख पर छाई धुंध 13. ज्ञान का परदा-ख़ुदा को पहचानने का काम दिमाग़ से बेहतर दिल करता है 14. भूल 15. सौन्दर्य का बे-किनारा दरिया 16. पहाड़ 17. सूर्य 18. रोशनी फ़ैलाना 19. अंधेरा।

अज़मते-देरीना[1] के मिटते हुए आसार[2] में
तिफ़-लके ना-आशना की कोशिशे-गुफ़्तार[3] में
साकनाने-सह्ने-गुलशन[4] की हम-आवाज़ी[5] में है
नन्हें-नन्हें ताइरों की आश्यां-साज़ी[6] में है
चश्मऐ-कोहसार[7] में, दरिया की आजादी में हुस्न
शह्र में, सह्रा में, वीराने में, आबादी में हुस्न
रूह को लेकिन किसी गुम-गश्ता-शय[8] की है हवस
वरना इस सह्रा में क्यों नालां है यह मिस्ले-जरस[9]

हुस्न के इस आम जलवे में भी यह बेताब है
ज़िन्दगी इस की मिसाले माही-ये-बे-आब[10] है

---

1. प्राचीन भव्यता 2. चिन्हों 3. बात करने की कोशिश 4. बाग़ में रहने वाले 5. आवाज़ मिलाकर बोलना 6. घोंसले बनाना 7. पहाड़ी झरना 8. गुमी हुई वस्तु 9. कूच की घंटी की तरह 10. बे-पानी की मछली।

किनारे-रावी

सुकूते-शाम[1] में महवे-सरोद[2] है रावी
न पूछ मुझसे जो हैकैफ़ियत मिरे दिल की
पयाम सजदे का यह ज़ेरो-बम[3] हुआ मुझको
जहां[4] तमाम सवादे-हरम[5] हुआ मुझको

सरे किनारए-आबे-रवां खड़ा हूँ मैं
ख़बर नहीं मुझे लेकिन कहां खड़ा हूँ मैं

शराबे-सुर्ख़ से रंगी हुआ है दामने-शाम
लिये है पीरे-फ़लक[6] दस्ते-राशादार[7] में जाम
अदम[8] को क़ाफ़लए-रोज़[9] तेज़-गाम[10] चला
शफ़क़ नहीं है, यह सूरज के फूल हैं गोया!
खड़े हैं दूर वह अज़मत-फ़ज़ाऐ-तन्हाई[11]
मिनारे-ख़्वाब-गहे-शहसवारे-चुग़ताई [12]
फ़सानऐ-सितमे-इंक़लाब[13] है यह महल
कोई ज़माने-सल्फ[14] की किताब है यह महल

मक़ाम क्या है, सरोदे-ख़ामोश[15] है गोया
शजर? यह अंजुमने-बे-ख़रोश[16] है गोया!

रवां है सीनए-दरिया पे इक सफ़ीनाऐ-तेज़[17]
हुआ है मोज से मल्लाह जिसका गर्म-सतेज़[18]

---

1. संध्या की ख़ामोशी 2. गा रहा है 3. उतार चढ़ाव 4. दुनिया 5. मक्का शहर 6. बूढ़ा आकाश 7. कांपता हुआ हाथ 8. परलोक 9. दिन का कारवां 10. तेज़-कदम 11. एकांत की महानता बढ़ाने वाले 12. चुग़ताई के शयन कक्ष के मीनार 13. तब्दीली के सितम की कहानी 14. पूर्वजों का काल 15. ख़ामोश बाजा 16. ऐसी महफ़िल जिस में शोर न हो 17. तेज़ कश्ती 18. जंग में जुटा हुआ (लहरों से)

सुबुक-रवी[1] में है मिस्ले-निगाह यह कश्ती
निकल के हल्क़-ऐ-हद्दे-नज़र[2] से दूर गई
जहाज़े-ज़िन्दगीए-आदमी रवां है युंही
अबद के वह्र में पैदा युँहीं निहां है युँ हीं

शिकस्त से यह कभी आशना नहीं होता
नज़र से छुपता है, लेकिन फ़ना[3] नहीं होता

---

1. हलके हलके बहना 2. नज़र की पहुँच से बाहर 3. मिटना।

इल्तिजाए-मुसाफ़िर

(ब-दरगाहे-हज़रत महबूबे-इलाही[1], दिल्ली)

फ़रिश्ते पढ़ते हैं जिसको वह नाम है तेरा
बड़ी जनाब[2] तिरी फ़ैज़[3] आम है तेरा
सितारे इश्क़ के तेरी कशिश से हैं क़ायम
निज़ामे-महर[4] की सूरत[5] निज़ाम है तेरा
तिरी लहद[6] की ज़ियारत[7] है ज़िन्दगी दिल की
मसीहो-ख़िज्र[8] से ऊँचा मक़ाम है तेरा
निहां है तेरी मोहब्बत में रंगे महबूबी
बड़ी है शान, बड़ा ऐहतराम है तेरा[9]

अगर सियाह दिलम, दाग़े-लाला-ज़ारे तो-अम
वगर कुशादा जिबीनम, गुले बहारे तो-अम

चमन को छोड़ के निकला हूँ मिस्ले-निकहते-गुल[10]
हुआ है सब्र का मंजूर इम्तेहां मुझको
चली है ले के वतन के निगारख़ाने[11] से
शराबे-इल्म की लज़्ज़त कशां-कशां[12] मुझको
नज़र है अब्रे-करम[13] पर, दरख़्ते-सहरा[14] हूँ
किया ख़ुदा ने न मोहताजे-बाग़बां मुझको
फ़लक-नशीं[15] सि-फ़ते-महर[16] हूँ ज़माने में
तिरी दुआ से अता हो वह नर्दबां[17] मुझको
मुक़ाम हमसफ़रों से हो इस क़दर आगे
कि समझे मंज़िले-मक़सूद[18] कारवां मुझको

---

1. यह नज़्म हज़रत निज़ामुद्दीन रहमत-उल्लाह की शान में लिखी गई है 2. दरबार 3. रहमत, मेहरबानी 4. सूर्य की व्यवस्था 5. समान 6. कब्र 7. दर्शन 8. हज़रत ईसा और ख़िज्र के बारे में यह आस्था है कि वोह भटके हुओं को रास्ता बताते हैं।

9. अगर मैं स्याह दिल, गुनाहगार हूँ तो आपके चमन के लाला का दाग़ हूँ और अगर मैं ख़ुश यानि नेक हूँ तो आपकी बहार का फूल हूँ।

10. फूल की सुगंध की तरह 11. सुन्दर घर 12. खेंचती हुई 13. करम के बादल 14. जंगल का पेड़ 15. आकाश पर बैठने वाला 16. सूर्य की तरह 17. ज़ीना, सीढ़ी 18. वह स्थान जहाँ के लिये कारवां रवाना हुआ हो।

मिरी ज़बाने-क़लम से किसी का दिल न दुखे
किसी से शिकवा न हो ज़ैरे-आसमां मुझको
दिलों को चाक करे मिस्ले-शाना[1] जिस का असर
तिरी जनाब से ऐसी मिले फ़ुगां[2] मुझको
बनाया था जिसे चुन-चुन के ख़ारो-ख़स[3] मैंने
चमन में फिर नज़र आऐ वह आशयां मुझको
फिर आ रखूं क़दमे-मादरो-पिदर[4] पे जबीं[5]
किया जिन्होंने मोहब्बत का राज़दां मुझको
वह शम्ऐ-बारगहे ख़ानदाने मुर्तज़्वी[6]
रहेगा मिस्ले-हरम[7] जिसका आस्तां मुझको
नफ़स[8] से जिसके खुली मेरी आरज़ू की कली
बनाया जिसकी मुरव्वत ने नुक्तादां मुझको
दुआ यह कर कि ख़ुदावन्दे-आसमानो-ज़मीं[9]
करे फिर इस की ज़ियारत से शादमां मुझको
वह मेरा यूसुफ़े-सानी[10], वह शम्ऐ-महफ़िले-इश्क[11]
हुई है जिसकी उख़ुव्वत[12] क़रारे-जां[13] मुझको
जला के जिसकी मोहब्बत ने दफ़्तरे-मनो-तू[14]
हवाऐ-ऐश में पाला, किया जवां मुझको
रियाज़े-दह्र[15] में मानिन्दे-गुल रहे ख़न्दाँ[16]
कि है अज़ीज-तर-अज़-जाँ[17] वह जाने-जां[18] मुझको
शगुफ़्ता[19] हो के कली दिल की फूल हो जाऐ!
यह इल्तिजाऐ-मुसाफ़िर[20] क़ुबूल हो जाऐ!

---

1. कंघी की तरह 2. फ़रियाद 3. घास और कांटे 4. मां बाप के पांव 5. पेशानी, माथा 6.
6. हज़रत अली का खानदान
7. मक्का 8. सांस 9. आसमान और ज़मीन का मालिक 10. हज़रत यूसुफ के समान 11. प्यार की महफ़िल का चिराग़ 12. भाई-चारा 13. आत्मा का सुकून 14. मैं और तू का ब्यान 15. दुनिया का बाग़ 16. खिला हुआ 17. जान से ज़्यादा प्यारा 18. महबूब 19. खिला हुआ 20. मुसाफिर की प्रार्थना।

मोहब्बत

अरुसे-शब[1] की जुल्फ़ें थीं अभी ना-आशना ख़म[2] से
सितारे आसमां के बे-ख़बर थे लज़्ज़ते-रम[3] से
क़मर[4] अपने लिबासे-नो में बेगाना सा लगता था
ना था वाक़िफ़ अभी गरदिश[5] के आईने-मुसल्लम[6] से
अभी इमकाँ के ज़ुल्मत-ख़ाने से उभरी ही थी दुनिया
मज़ाके़-ज़िन्दगी पोशीदा था पहनाए-आलम[7] से
कमाले-नज़्मे-हस्ती[8] की अभी थी इब्तिदा गोया
हवैदा[9] थी नगीने की तमन्ना चश्मे-ख़ातिम[10] से
सुना है आलमे-बाला[11] में कोई कीमिया-गर[12] था
सफ़ा[13] थी जिसकी ख़ाके-पा[14] में बढ़कर सा ग़रे-जम[15] से
लिखा था अर्श के पाये पे इक इक्सीर[16] का नुस्ख़ा
छुपाते थे फरिश्ते जिसको चश्मे-रूहे-आदम[17] से
निगाहें ताक में रहती थीं लेकिन कीमिया-गर की
वह इस नुस्ख़े को बढ़ कर जानता था इस्मे-आज़म से
बढ़ा तस्बीह-ख़्वानी[18] के बहाने अर्श[19] की जानिब
तमन्नाए दिली आख़िर बर आई[20] सई-ए-पैहम[21] से
फिराया फ़िक्रे-अजज़ा[21] ने उसे मैदाने-इम्काँ[22] में
छुपेगी क्या कोई शय[23] बारगाहे-हक़ के महरम[24] से
चमक तारे से मांगी, चांद से दाग़े-जिगर मांगा
उड़ाई तीरगी[25] थोड़ी सी शब की ज़ुल्फ़े-बरहम[26] से

---

1. रात की दुल्हन 2. लहर 3. दीवानगी की लज़्ज़त 4. चांद 5. काल चक्र 6. अटल नियम 7. दुनिया का फ़ैलाव 8. सृष्टि की व्यवस्था का उच्च कोटि तक पहुँचना 9. प्रकट 10. अंगूठी की आंख 11. ऊपर की दुनिया, आकाश पर 12. कीमिया का अर्थ है रसायन, प्राचीन काल में यह ख़्याल था कि कुछ धातुओं को मिलाकर चूल्हे पर पकाने से सोना बन जाता है ऐसा करने वाले को कीमिया-गर कहते हैं। 13. सफ़ाई 14. पैर की धूल 15. जमशेद का प्याला जिसमें वह दुनिया देख लिया करता था 16. सोना, रसायन 17. मनुष्य की आत्मा की आंख से 18. इबादत 19. खुदा का तख़्त 20. पूरी हुई 21. बार बार कोशिश करना 21. बदन पाने की चिंता 22. संभावना का मैदान मुराद है "तलाश" 23. वस्तु 24. खुदा को जानने वाला 25. अंधेरा 26. बिखरी हुई जुल्फ़।

तड़प बिजली से पाई, हूर से पाकीज़गी पाई
हरारत[1] ली नफ़स-हाए-मसीहे-इब्ने-मरयम[2] से
ज़रा सी फ़िर रूबूबीयत[3] से शाने-बे-नियाज़ी ली
मलक[4] से आजिज़ी, उफ़्तादगी[5] तक़दीरे-शबनम[6] से
फ़िर उन अजज़ा[7] को घोला चश्मए-हैवां[8] के पानी में
मुरक्कब[9] ने मोहब्बत नाम पाया अरशे-आज़म[10] से
मु-हव्वस[11] ने यह पानी हस्तीए-नौख़ेज़[12] पर छिड़का
गिरह खोली हुनर ने इसके, गोया कारे-आलम[13] से
हुई जुम्बिश[14] अयां, ज़र्रों[15] ने लुत्फ़े-ख़्वाब[16] को छोड़ा
गले मिलने लगे उठ-उठ के अपने अपने हमदम से

ख़िरामे-नाज़[17] पाया आफ़्ताबों ने, सितारों ने
चटक गुन्चों ने पाई दाग़ पाये लाला-ज़ारों ने

---

1. गर्मी 2. हज़रत ईसा के फूंकने से 3. खुदाई 4. फरिश्ते 5. आजिज़ी 6. ओस का भाग्य 7. भागों 8. अमृत 9. घोल 10. खुदा का तख़्त 11. सुनार 12. नई पैदा हुई ज़िंदगी 13. दुनिया के कार्य 14. हरक्त 15. कण 16. नींद का आनन्द 17. अच्छी चाल

हक़ीक़ते-हुस्न[1]

ख़ुदा से हुस्न ने इक रोज़ यह सवाल किया
जहां मैं क्यों न मुझे तूने लाज़वाल[2] किया
मिला जवाब कि तस्वीर ख़ाना है दुनिया
शबे-दराज़े-अदम[3] का फ़साना है दुनिया
हुई है रंगे-तग़य्युर[4] से जब नुमूद[5] उसकी
वही हसीं है, हक़ीक़त ज़वाल[6] है जिसकी
कहीं करीब था, यह गुफ़्तगो कमर[7] ने सुनी
फ़लक[8] पे आम हुई, अख़्तरे-सहर[9] ने सुनी
सहर[10] ने तारे से सुन कर सुनाई शबनम को
फ़लक की बात बता दी ज़मीं के महरम[11] को
भर आये फूल के आंसू प्यामे-शबनम से
कली का नन्हा सा दिल खून हो गया ग़म से
चमन से रोता हुआ मौसमे-बहार गया
शबाब सैर को आया था, सोगवार[12] गया

---

1. सौन्दर्य की वास्तविकता 2. जिसका पतन न हो 3. यमलोक की लम्बी रात 4. तब्दीली की हालत 5. उत्पत्ति 6. अवनति, पतन 7. चांद 8. आकाश 9. सवेरे का सितारा 10. सवेरा 11. परिचित 12. दुखी।

स्वामी राम तीर्थ

हम-बगल[1] दरिया से है ऐ क़तरा-ए-बेताब तू
पहले गौहर था, बना अब गौहरे-नायाब[2] तू
आह! खोला किस अदा से तूने राज़े-रंगो-बू[3]
मैं अभी तक हूँ असीरे-इम्तियाज़े-रंगो-बू[4]
मिट के ग़ोग़ा ज़िन्दगी का शोरिशे-महशर[5] बना
यह शरारा[6] बुझ के आतिश-ख़ानए-आज़र[7] बना
नफ़ी-ए-हस्ती[8] इक करिश्मा है दिले-आगाह का
"ला"[9] के दरिया में निहां मोती है "इल-लल्लाह" का
चश्मे-ना-बीना[10] से मख़फ़ी[11] मानीऐ-अंजाम है
थम गई जिस दम तड़प, सीमाब[12] सीमे-ख़ाम[13] है

तोड़ देता है बुते हस्ती को इब्राहीमे-इश्क
होश का दारू है गोया मस्तीए-तसनीमे इश्क

---

1. गले मिलना 2. नायाब मोती 3. रंग और गंध का भेद 4. रंग और गंध के भेद में गिरफ़्तार, रंग और जाति के झगड़ों में फंसा हुआ 5. क़यामत का शोरगुल 6. चिंगारी 7. आज़र एक महान बुत तराश गुज़रा है 8. अपने अस्तित्व को नकारना 9. नहीं—यह शब्द उस कल्मे में पहले आता है जिसे पढ़कर मुसलमान ख़ुदा और रसूल का इकरार करते हैं—ला-ए—लाहा इल लल्लाह मोहम्मदुर्रसूल-उल-लाह—नहीं है कोई पूज्य सिवाए ख़ुदा के, और हज़रत मोहम्मद उसके रसूल हैं। 10. न देखने वाली आंख 11. छुपा हुआ 12. बेचैन 13. कच्ची चांदी

हुस्नो-इश्क़

जिस तरह डूबती है कश्तीए-सीमीने-क़मर[1]
नूरे-ख़ुर्शीद के तूफ़ान में हंगामे-सहर[2]
जैसे हो जाता है गुम, नूर का लेकर आंचल
चांदनी रात में महताब[3] का हम-रंग कंवल
जल्वए-तूर[4] में जैसे यदे-बेज़ाऐ-कलीम[5]
मौ-जऐ-निकहते-गुलज़ार[6] में गुन्चे की शमीम
है तिरे सेले-मोहब्बत[7] में युंही दिल मेरा
तू जो महफ़िल है, तो हंगामाए-महफ़िल हूँ मैं
हुस्न की बर्क़[8] है तू, इश्क़ का हासिल हूँ मैं
तू सहर है, तो मिरे अश्क[9] हैं शबनम तेरी
शामे-ग़रबत[10] हूँ अगर मैं, तो शफ़क़ तू मेरी
मेरे दिल में तिरी ज़ुल्फ़ों की परेशानी है
तिरी तस्वीर से पैदा मिरी हैरानी है
हुस्न कामिल[11] है तिरा, इश्क़ है कामिल मेरा
है मिरे बाग़े-सुख़न[12] के लिये तू बादे-बहार[13]
मेरे बेताब तख़य्युल को दिया तूने क़रार
जब से आबाद तिरा इश्क़ हुआ सीने में
नये जौहर[14] हुए पैदा मिरे आईने में
हुस्न से इश्क़ की फ़ितरत को है तहरीके-कमाल[15]
तुझसे सर-सब्ज़ हुए मेरी उमीदों के निहाल[16]
क़ाफ़ला हो गया आसूदा-ए-मंज़िल[17] मेरा

---

1. चांद की रूपहली कश्ती 2. सवेरें के समय 3. चांद 4. तूर पर दर्शन 5. हज़रत मूसा का हाथ जिस से रोशनी फूटती थी 6. बाग की खुशबू की लहरें 7. प्रेम की लहर 8. बिजली 9. आंसू 10. परदेस की शाम 11. सम्पूर्ण 12. बातों का बाग़ यानि शायरी 13. मौसमे बहार की हवा 14. गुण 15. बुलंदी पर पहुंचने की प्रेरणा 16. पेड़ 17. मंज़िल प्राप्त करने का सुख।

... की गोद में बिल्ली देख कर

तुझको दुज़्दीदा-निगाही[1] यह सिखा दी किसने?
रम्ज़[2] आग़ाज़े-मोहब्बत[3] की बता दी किसने?
हर अदा से तिरी पैदा है मोहब्बत कैसी
नीली आंखों से टपकती है ज़कावत[4] कैसी
देखती है कभी उनको, कभी शरमाती है
कभी उठती है, कभी लेट के सो जाती है
आंख तेरी सिफ़ते-आईना हैरान है क्या?
नूरे-आगाही से रोशन तिरी पहचान है क्या?
मारती है उन्हें पोंहचों से, अजब नाज़ है यह!
चिढ़ है या गुस्सा है? या प्यार का अंदाज़ है यह?
शोख[5] तू होगी, तो गोदी से उतारेंगे तुझे
गिर गया फूल जो सीने का तो मारेंगे तुझे
क्या तजस्सुस[6] है तुझे? किस की तमन्नाई है?
आह! क्या तू भी इसी चीज़ की सौदाई[7] है
ख़ास इंसान से कुछ हुस्न का एहसास नहीं
सूरते-दिल है यह हर चीज़ के बातिन[8] में मकीं
शीशाए-दहर[9] में मानिन्दे-मये-नाब[10] है इश्क़
रूहे-खुर्शीद[11] है, खूने-रगे महताब[12] है इश्क़
दिले-हर-ज़र्रा में पोशीदा कसक है इसकी
नूर यह वह है कि हर शय में झलक है इसकी

कहीं सामाने मसर्रत, कहीं साज़े-ग़म है
कहीं गौहर[13] है, कहीं अश्क[14] कहीं शबनम है

---

1. नज़रें चुराना 2. राज़, भेद 3. प्रेम की शुरूआत 4. बुद्धिमत्ता 5. शरीर 6. जिज्ञासा, तलाश 7. दिवानी 8. मन, अंदर 9. दुनिया की बोतल 10. सुर्ख शराब 11. सूर्य की आत्मा 12. चांद की नसों का खून 13. मोती 14. आंसू।

कली

जब दिखाती है सहर[1] आरिज़े-रंगीं[2] अपना
खोल देती है कली सी-नए-ज़र्रीं[3] अपना
जलवा-आशाम[4] है यह सुबह के मय-ख़ाने में
ज़िन्दगी उसकी है ख़ुर्शीद[5] के पैमाने में
सामने महर[6] के दिल चीर के रख देती है
किस कदर सीना-शिगाफ़ी[7] के मज़े लेती है

मेरे ख़ुर्शीद! कभी तू भी उठा अपनी नक़ाब
बहरे-नज़्ज़ारा[8] तड़पती है निगाहे-बेताब
तेरे जलवे[9] का नशेमन[10] हो मिरे सीने में
अक्स आबाद हो तेरा मिरे आईने में
ज़िन्दगी हो तिरा नज़्ज़ारा मिरे दिल के लिये
रोशनी हो तिरी गहवारा[11] मिरे दिल के लिये
ज़र्रा-ज़र्रा हो मिरा फिर तरब-अंदोज़े-हयात[12]
हो अयां[13] जौहरे-अन्देशा[14] में फिर सोज़े-हयात
अपने ख़ुर्शीद का नज़्ज़ारा करूं दूर से मैं
सि-फ़ते-गुन्चा हम-आग़ोश रहूँ नूर से मैं
जाने-मुज़्तर[15] की हक़ीक़त को नुमायां कर दूं
दिल के पोशीदा-ख़्यालों को भी उरयां कर दूं

---

1. सवेरा 2. रंगीन गाल 3. सुनहरा सीना 4. दर्शन देती हुई 5. सूर्य 6. सूर्य 7. सीना खोलना 8. देखने के लिये 9. दर्शन 10. घोंसला 11. हिंडोला 12. ज़िन्दगी में खुशी भर देने वाला 13. प्रकट 14. अंदेशे का सार 15. बेचैन जान।

चांद और तारे

डरते-डरते दमे-सहर[1] से
तारे कहने लगे क़मर[2] से
नज़्ज़ारे रहे वही फ़लक[3] पर
हम थक भी गये चमक-चमक कर
काम अपना है सुब्हो-शाम चलना
चलना, चलना, मुदाम[4] चलना
बेताब है इस जहां की हर शय[5]
कहते हैं जिसे सुकूं, नहीं है
रहते हैं सितम-कशे-सफ़र[6] सब
तारे, इंसां, शजर[7], हजर[8] सब

होगा कभी ख़त्म यह सफ़र क्या?
मंज़िल कभी आऐगी नज़र क्या?

कहने लगा चांद, हम-नशीनो[9]!
ऐ मुज़-रऐ-शब[10] के ख़ोशा-चीनो[11]!
जुम्बिश से है ज़िन्दगी जहां की
यह रस्म क़दीम है यहां की
है दौड़ता अशहबे-ज़माना[12]
खा-खा के तलब[13] का ताज़याना[14]
इस राह में मुक़ाम बे-महल[15] है
पोशीदा करार में अजल[16] है

---

1. सवेरे का समय 2. चांद 3. आकाश 4. हमेशा 5. वस्तु 6. यात्रा के दुख उठाते 7. पेड़ 8. पत्थर 9. साथ बैठने वालो 10. रात्रि की खेती सितारों का खेत रात 11. अनाज की बालियें चुनने वाला, लाभ लेने वाला 12. समय का घोड़ा 13. ईच्छा 14. कोड़ा 15. अनुचित 16. मौत।

चलने वाले निकल गये हैं!
जो ठहरे ज़रा, कुचल गये हैं

अंज़ाम है इस ख़िराम[1] का हुस्न
आग़ाज़ है इश्क़, इन्तिहा हुस्न

---

1. चलना।

विसाल

जुस्तुजू[1] जिस गुल की तड़पाती थी ऐ बुलबुल मुझे
खूबीऐ-किस्मत से आख़िर मिल गया वह गुल मुझे
खुद तड़पता था, चमन वालों को तड़पाता था मैं
तुझको जब रंगीं-नवा[2] पाता था शर्माता था मैं
मेरे पहलू में दिले-मुज़तर[3] न था, सीमाब[4] था
इरतिकाबे-जुर्मे-उल्फ़त[5] के लिये बेताब था
नामुरादी महफ़िले-गुल में मिरी मशहूर थी
सुब्ह मेरी आईना-दारे-शबे-दीजूर[6] थी

अज़ नफ़स दर सीनाए-खूँ-गश्ता नश्तर दाश्तम
ज़ैरे ख़ामोशी निहां ग़ोग़ाए-महशर दाश्तम[7]

अब त-अस्सुर के जहां में वह परेशानी नहीं
एहले गुलशन पर गिरां मेरी गज़ल ख़्वानी नहीं
इश्क़ की गरमी से शोले बन गये छाले मिरे
खेलते हैं बिजलियों के साथ अब नाले मिरे
ग़ाज़ा-ए-उल्फ़त[8] से यह ख़ाके-सियह[9] आईना है
और आईने में अक्से-हमदमे-देरीना[10] है
कैद में आया तो हासिल मुझको आज़ादी हुई
दिल के लुट जाने से, मेरे घर की आबादी हुई
ज़ौ[11] से इस खुर्शीद की अख़तर[12] मिरा ताबन्दा[13] है
चांदनी जिसके गुबारे-राह[14] से शर्मिन्दा है

यक नज़र करदी-ओ--आदाबे-फ़ना आमोख़्ती[15]
ए खुनक रोज़े कि ख़ाशाके-मिरा-वा-सोख़्ती

---

1. जिज्ञासा,तलाश 2. अच्छा गाने वाला 3. बेचैन दिल 4. पारा 5. प्रेम का जुर्म करना 6. अंधेरी रात जैसी- 7. खून से लबरेज़ मेरे सीने के अंदर हर सांस नश्तर का काम करती है और अगरचे मैं— खामोश हूँ लेकिन मेरे दिल में क़यामत का हगामा बरपा है
8. प्यार का पावडर 9. काली मिट्टी 10. पुराने दोस्त का अक्स 11 रोशनी 12. सितारा 13. चमकदार 14. रास्ते की उड़ने वाली धूल
15. ए महबूब तूने एक नज़र डाली और मुझे इश्क़ के राज़ो-नियाज़ से आगाह कर दिया। किस क़दर मुबारक था वह दिन जब तूने मुझे अपनी मोहब्बत की आग में जलाकर ख़ाक कर दिया।

आशिक़े हरजाई

है अजब मजमूआ-ए-अज़्दाद[1] ऐ इक़बाल! तू
रोनके-हंगामए-महफ़िल[2] भी है, तन्हा भी है
तेरे हंगामों से इक दीवाना—ए-रंगीं-नवा
ज़ीनते-गुलशन भी है, आराईशे-सह्रा भी है
हमनशीं तारों का है तू रिफ़-अते-परवाज़[3] से
ऐ ज़मीं-फ़रसा[4] क़दम तेरा फ़लक-पैमा[5] भी है
ऐन-शग़्ले-मय[6] में पैशानी है तेरी सजदा-रैज़[7]
कुछ तिरे मस्लक[8] में रंगे-मशरबे-मीना[9] भी है
मिस्ले-बूए-गुल[10] लिबासे-रंग से उरयां[11] है तू
है तो हिकमत-आफ़रीं[12], लेकिन तुझे सोदा[13] भी है
जानिबे-मंज़िल रवां, बे-नक़्शे-पा[14] मानिन्दे-मौज
और फ़िर उफ़्तादा[15] मिसले-साहिले दरिया भी है
हुस्ने-निसवानी[16] है बिजली तेरी फ़ितरत के लिये
फ़िर अजब यह है कि तेरा इश्क़ बे-परवा भी है
तेरी हस्ती का है आईने-तफ़न्नुन[17] पर मदार
तू कभी एक आस्ताने पर जबीं-फ़रसा[18] भी है?
है हसीनों में वफ़ा-ना-आशना[19] तेरा ख़िताब
ऐ तलव्वुन-कैश[20]! तू मशहूर भी, रूसवा[21] भी है
ले के आया है जहां में आदते-सीमाब[22] तू
तेरी बेताबी के सदक़े, है अजब बेताब तू

---

1. परस्पर विरोधी चीज़ों का मिश्रण 2. महफ़िल की रौनक 3. उड़ान की बुलंदी 4. धरती पर चलने वाला 5. आकाश नापने वाला 6. शराब नोशी 7. इबादत में सजदा करती हुई 8. तरीक़ा 9. सुराही का अंदाज़ 10. फूल की गंध जैसा 11. बे-लिबास 12. समझ बढ़ाने वाला 13. दिवानापन 14. पद चिन्हों के बग़ैर 15. गिरा हुआ 16. औरतों का सौन्दर्य 17. मशग़ले का नियम 18. पैशानी झुकाने वाला 19. जो वफ़ा करना नहीं जानता 20. जिसके स्वभाव में जल्दी-जल्दी बदलाव आता हो 21. बदनाम 22. पारे जैसी आदत, एक जगह न रुकना।

इश्क़ की आशुफ़्तगी[1] ने कर दिया सहरा[2] जिसे
मुश्ते-ख़ाक[3] ऐसी निहां ज़ैरे-क़बा[4] रखता हूँ मैं
हैं हज़ारों इसके पहलू, रंग हर पहलू का और
सीने में हीरा कोई तरशा हुआ रखता हूँ मैं
दिल नहीं शायर का, है कैफ़ीयतों की रस्तख़ेज़[5]
क्या ख़बर तुझको, दरूने-सीना[6] क्या रखता हूँ मैं
आरज़ू हर कैफ़ीयत में इक नये जल्वे की है
मुज़तरिब हूँ, दिल सुकूं-ना-आशना रखता हूँ मैं
गो हसीने-ताज़ा है हर लहजा मक़सूदे-नज़र[7]
हुस्न से मज़बूत पैमाने-वफ़ा[8] रखता हूँ मैं
बे-नियाज़ी[9] से है पैदा मेरी फ़ितरत का नियाज़
सोज़ो-साज़े-जुस्तुजू[10] मिस्ले-सबा रखता हूँ मैं
मूजिबे-तस्कीं[11] तमाशाऐ-शरारे-जस्ता-ऐ[12]
हो नहीं सकता, कि दिल बर्क़-आशना[13] रखता हूँ मैं
हर तक़ाज़ा इश्क़ की फ़ितरत का हो जिससे ख़ामोश
आह! वह कामिल-तजल्ली[14] मुद्दुआ[15] रखता हूँ मैं
जुस्तजू कुल[16] की लिये फिरती है अज्ज़ा[17] में मुझे
हुस्न बे पायां है, दर्दे-ला-दवा रखता हूँ मैं
ज़िन्दगी उल्फ़त की दर्द-अंजामियों से है मिरी
इश्क़ को आज़ादे-दस्तूरे-वफ़ा रखता हूँ मैं
सच अगर पूछे तो इफ़्लासे-तख़्युल[18] है वफ़ा
दिल में हर दम इक नया महशर[19] बपा रखता हूँ मैं
फ़ैज़े-साक़ी शबनम-आसा[20] ज़र्फ़े-दिल[21] दरिया-तलब[22]
तिश्नए-दायम[23] हूँ, आतिश[24] ज़ैर-पा[25] रखता हूँ मैं

---

1. बद-हवासी 2. रेगिस्तान 3. मुठ्ठी भर धूल 4. लिबास के नीचे 5. उथल-पथल 6. सीने के अन्दर 7. नज़र की ख़्वाहिश 8. वफ़ा का वचन 9. अनिच्छा 10. तलाश की इच्छा 11. सुकून का सबब 12. चिगारी की लपक देखना 13. बिजली से परिचित 14. सम्पूर्ण दर्शन 15. मक़सद 16. सम्पूर्णता 17. भागों, हिस्सों 18. विचारों की मुफ़लिसी 19. क़यामत 20. शबनम समान 21. दिल का हौसला 22. दरिया की मांग करना 23. सदा का प्यासा 24. आग 25. पैरों के नीचे।

मुझको पैदा करके अपना नुक्ता-चीं[1] पैदा किया
नक़्श[2] हूँ अपने मुसव्विर[3] से गिला रखता हूँ मैं
महफ़िले हस्ती में जब ऐसा तुनक जलवा था हुस्न
फिर तखय्युल किसलिये ला-इन्तिहा रखता हूँ मैं

दर बयाबाने तलब पेवस्ता मी कोशेम मा
मोजे-बह्रेमो-शिकस्ते ख़्वेश बर दोशेम मा[4]

---

1. आलोचक 2. चित्र 3. चित्रकार

4. तलब यानि इश्क़ के मैदान में लगातार कोशिश कर रहे हैं लेकिन सफल नहीं हो पा रहे हैं। हमारी हालत समुद्र की लहरों की तरह है जो लगातार किनारों से टकराती है और उनका सिलसिला कभी ख़त्म नहीं होता।

नवा-ए-ग़म

ज़िन्दगानी है मेरी मिस्ले-रबाबे-ख़ामोश[1]
जिसकी हर रंग के नग़मों से है लबरेज़-आग़ोश[2]
बरबते-कौनो-मकां[3] जिसकी ख़मोशी पे निसार
जिसके हर तार में हैं सैकड़ों नग़मों के मज़ार
महशरिस्ताने-नवा[4] का है अमीं[5] जिसका सुकूत
और मिन्नतकशे हंगामा नहीं जिसका सुकूत

आह! उम्मीद मोहब्बत की बर आई न कभी
चोट मिज़राब की इस साज़ ने खाई न कभी
मगर आती है नसीमे-चमने-तूर[6] कभी
सम्ते गर्दूं[7] से हवाए-नफ़से-हूर[8] कभी
छेड़ आहिस्ता से देती है मिरा तारे-हयात
जिससे होती है रिहा रूहे-गिरफ़्तारे-हयात[9]
नग़मए-यास[10] की धीमी सी सदा[11] उठती है
अश्क[12] के क़ाफ़ले को बांगे-दिरा[13] उठती है

जिस तरह रिफ़-अते-शबनम[14] है मज़ाक़े रम[15] से
मेरी फ़ितरत की बलन्दी है नवाए-ग़म[16] से

---

1. ख़ामोश रबाब के समान 2. लबालब भरी हुई गोद 3. दुनिया जहान का बरबत, बाजा 4. गीतों का हंगामा 5. अमानतदार 6. तूर पहाड़ के बाग़ की हवा 7. आकाश की तरफ से 8. अप्सरा की सांस 9. जीवन के कैदी की आत्मा 10. मायूसी का गीत 11. आवाज़ 12. आंसू 13. कूच की घंटी की आवाज़—बांग, अज़ान 14. शबनम की बुलन्दी 15. हरकत की रूचि 16. ग़म का गीत।

इश्रते-इमरोज़

न मुझसे कह कि अजल है प्यामे ऐशो-सुरूर।
न खींच नक़्शा-ए-कैफ़ीयते-शराबे-तहूर[2]
फ़िराक़े-हूर[3] में हो ग़म से हमकनार न तू
परी को शीशा-ए-अल्फ़ाज़ में उतार न तू
मुझे फ़रैफ़्ता-ए-साक़ी-ए-जमील[4] न कर
बयाने-हूर न कर-ज़िक्र-सलसबील[5] न कर
मुक़ामे-अम्न है जन्नत, मुझे कलाम[6] नहीं
शबाब के लिये मौज़ूं[7] तिरा प्याम नहीं
शबाब आह! कहां तक उमीदवार रहे!
वह ऐश-ऐश नहीं, जिसका इन्तिज़ार नहीं
वह हुस्न क्या कि जो मोहताजे-चश्मे-बीना[8] हो
नुमूद[9] के लिये मिन्नत-पज़ीरे-फ़रदा[10] हो

अज़ीब चीज़ है एहसास ज़िन्दगानी का
अक़ीदा[11] "इश्रते-इमरोज़"[12] है जवानी का

---

1. ऐश और खुशी 2. जन्नत में मिलने वाली शराब के मज़े का चित्रण 3. अप्सरा की जुदाई
4. खूबसूरत साक़ी के प्रेम में फंसा हुआ 5. जन्नत की एक नहर का नाम 6. बात, आपत्ति
7. उपयुक्त 8. देखने वाली आंख पर आश्रित 9. प्रकट होना 10. आने वाले कल का एहसान मंद
11. आस्था 12. आज की खुशी।

इंसान

क़ुदरत[1] का अजीब यह सितम है!
इंसान को राज़-जू[2] बनाया
राज़ उसकी निगाह से छुपाया
बेताब है ज़ौक़ आगही[3] का
खुलता नहीं भेद ज़िन्दगी का
हैरत आग़ाज़ो-इन्तिहा[4] है
आईने के घर में और क्या है?
है गर्मे-ख़िराम[5] मोजे-दरिया
दरिया सुए बहर[6] जादा-पैमा[7]
बादल को हवा उड़ा रही है
शानों[8] पे उठाऐ ला रही है
तारे मस्ते-शराबे-तक़दीर[9]
ज़िन्दाने-फ़लक[10] में पा-ब-ज़ंजीर[11]
खुर्शीद[12], वह आबिदे-सहर-ख़ेज़[13]
लाने वाला पयामे ''बर-ख़ेज़[14]
मग़रिब[15] की पहाड़ियों में छुप कर
पीता है मये-शफ़क़ का सागर
लज़्जत-गीरे-वुजूद[16] हर शय[17]
सर-मस्ते-मये-नुमूद[18] हर शय
कोई नहीं ग़मगुसारे-इंसां!
क्या तल्ख़[19] है रोज़गारे इंसां!

---

1. खुदा 2. रहस्य का पता लगाने वाला 3. जान ने समझने की रुचि 4. आरंभ और समाप्ति 5. बहती हुई 6. समुद्र की तरफ 7. रास्ता नापता हुआ 8. कंधों 9. भाग्य कीशराब में मस्त 10.आकाश का क़ैदखाना 11. पैरों में बेड़ी पड़ी हुई 12. सूर्य 13. सुबह जल्दी जागने वाला इबादत-गुज़ार 14. जाग उठो 15. पश्चिम 16. अस्तित्व का मज़ा लेने वाला 17. वस्तु 18. उत्पत्ति की शराब में मस्त 19. कड़वा।

जलवए-हुस्न

जलवए-हुस्न[1] कि है जिससे तमन्ना बेताब
पालता है जिसे आग़ोशे-तख़य्युल[2] में शबाब
अबदी[3] बनता है यह आलमे-फ़ानी[4] जिससे
एक अफ़सानए-रंगीं है जवानी जिससे
जो सिखाता है हमें सर-ब-गरीबां[5] होना
मंज़रे-आलमे-हाज़िर[6] से गुरेज़ां[7] होना
दूर हो जाती है इदराक[8] की ख़ामी जिससे
अक़्ल करती है त-अस्सुर[9] की गुलामी जिससे
आह! मौजूद भी वह हुस्न कहीं है कि नहीं?
ख़ातिमे-दह्र[10] में यारब वह नगीं[11] है कि नहीं?

---

1. हुस्न का दिखाई देना 2. ख्यालात की गोद 3. अबद से अबदी, हमेशा क़ायम रहना 4. ख़त्म हो जाने वाली दुनिया 5. अंदेशों में फंसा हुआ 6. दिखाई देने वाली दुनिया का दृश्य 7. परहेज़ 8. समझ 9. असर, प्रभाव 10. दुनिया की अंगूठी 11. नग, मोती।

एक शाम

ख़ामोश है चांदनी क़मर[1] की
शाख़ें हैं ख़मोश हर शजर[2] की
वादी[3] के नवा-फ़रोश[4] ख़ामोश
कोहसार[5] के सब्ज़-पोश ख़ामोश
फ़ितरत[6] बेहोश हो गई है
आग़ोश में शब के सो गई है
कुछ ऐसा सुकूत का फ़ुसूं[7] है
नेकर[8] का ख़राम भी सुकूं है
तारों का ख़मोश कारवां है
यह क़ाफ़ला बे-दिरा[9] रवाँ है
ख़ामोश हैं कोहो-दश्तो-दरिया[10]
क़ुदरत है मुराक़ूबे[11] में गोया

ऐ दिल! तू भी ख़मोश हो जा
आग़ोश[12] में ग़म को ले के सो जा

---

1. चांद 2. पेड़ 3. पहाड़ का दामन 4. गाने वाले 5. पहाड़ 6. प्रकृति 7. जादू 8. हायडल बर्ग शहर का दरिया 9. कोच की घंटी के बग़ैर 10. पहाड़, जंगल और दरिया 11. ज्ञान ध्यान 12. बाहों में, गोद में।

तन्हाई

तन्हाई-ये-शब[1] में है हज़ीं[2] क्या?
अंजुम[3] नहीं तेरे हमनशीं क्या?
यह रिफ — अते — आसमाने — ख़ामोश[4]
ख़्वाबीदा ज़मीं[5], जहाने ख़ामोश[6]
यह चांद, यह दश्तो-दर[7], यह कोहसार[8]
फ़ितरत[9] है तमाम-नस्तरन-ज़ार[10]
मोती ख़ुशरंग, प्यारे-प्यारे
यानी, तिरे आंसुओं के तारे
किस शय[11] की तुझे हवस है ऐ दिल!
क़ुदरत[12] तिरी हम-नफ़स[13] है ऐ दिल!

---

1. रात की तन्हाई 2. दुखी 3. सितारे 4. ख़ामोश आसमान की बुलंदी 5. ज़मीन सोई हुई 6. दुनिया ख़ामोश 7. जंगल 8. पहाड़ 9. प्रकृति 10. नसतरन के फूलों से भरा हुआ 11. वस्तु 12. खुदा 13. बात करने वाला।

सितारा

क़मर[1] का ख़ौफ कि है ख़तरए-सहर[2] तुझको
म-आले-हुसन्[3] की क्या मिल गई ख़बर तुझको?
मताऐ-नूर[4] के लुट जाने का है डर तुझको?
है क्या हिरासे-फ़ना[5] सूरते-शरर[6] तुझको
ज़मीं से दूर दिया आसमां ने घर तुझको
मिसाले माह[7] उढ़ाई क़बाए-ज़र[8] तझ को

ग़ज़ब है फ़िर तिरी नन्हीं सी जान डरती है
तमाम रात तिरी काँपते गुज़रती है

चमकने वाले मुसाफ़िर! अजब यह बस्ती है
ऐ औज[9] एक का है दूसरे की पस्ती है
अज़ल[10] है लाखों सितारों की इक विलादते-महर[11]
फ़ना की नींद मये-ज़िन्दगी[12] की मस्ती है
विदाए-गुन्चा[13] में है राज़े-आफ़रीं नशे-गुल[14]
अदम,[15] अदम है, कि आईना दारे हस्ती[16] है
सुकूं मुहाल है क़ुदरत का कारख़ाने में
सबात[17] एक तग़य्युर[18] को है ज़माने में

---

1. चांद 2. सवेरे का ख़तरा 3. सौन्दर्य/ का अजाम 4. रोशनी की दौलत 5. मिटजाने का डर 6. चिगारी के समान 7. चांद की तरह 8. सोने का लिबास 9. बुलंदी 10. मौत 11. सूर्य का जन्म 12. जीवन की शराब 13. कली का जाना 14. फूल के पैदा होने का रहस्य 15. , न होना 16. होना 17. स्थिरता 18. तब्दीली।

दो सितारे

आऐ जो क़िरां[1] में दो सितारे
कहने लगा एक दूसरे से
यह वस्ल[2] मुदाम[3] हो तो क्या खूब[4]
अंजामे-ख़िराम[5] हो तो क्या खूब

थोड़ा सा जो महरबां फ़लक[6] हो
हम दोनों की एक ही चमक हो

लेकिन यह विसाल[7] की तमन्ना
पैग़ामे-फ़िराक़[8] थी सरापा
गर्दिश[9] तारों का है मुक़द्दर
हर एक की राह है मुक़र्रर

है ख़्वाब सजाते आशनाई[10]
आईन[11] जहां का है जुदाई

---

1. दो ग्रहों का एक राशि में होना 2. मुलाकात 3. हमेशा का 4. अच्छा 5. गति की समाप्ति 6. आकाश 7. मिलाप 8. जुदाई का संदेश 9. गति 10. संबंध में स्थिरता 11. नियम।

फ़लसफ़ए-ग़म

गो सरापा[1] कैफे-इश्रत[2] है शराबे-ज़िन्दगी
अश्क[3] भी रखता है दामन में सहाबे-ज़िन्दगी[4]
मौंजे-ग़म[5] पर रक़्स[6] करता है हुबाबे-ज़िन्दगी[7]
है अलम[8] का सूरा[9] भी जुज़्वे-किताबे-ज़िन्दगी[10]

एक भी पत्ती अगर कम हो तो वह गुल ही नहीं
जो ख़िज़ां नादीदा[11] हो बुलबुल वह बुलबुल ही नहीं

आरज़ू के ख़ून से रंगीं है दिल की दास्तां
नग़मए-इंसानियत कामिल नहीं ग़ैर-अज़ फ़ुग़ां[12]
दीदए-बीना[13] में दाग़े-ग़म, चिराग़े-सीना है
रूह को सामाने-ज़ीनत[14] आह का आईना है
हादसाते-ग़म से है इंसां की फ़ितरत को कमाल[15]
ग़ाजा[16] है आईनए-दिल के लिये गर्दे- मलाल[17]
ग़म जवानी को जगा देता है लुत्फ़े-ख़्वाब[18] से
साज़ यह बेदार होता है इसी मिज़राब से
तायरे-दिल के लिये ग़म शहपरे-परवाज़[19] है
राज़ है इंसां का दिल, ग़म इन्किशगफे-राज़[20] है

ग़म नहीं ग़म, रूह का इक नग़मए-ख़ामोश है
जो सरोदे-बरबते-हस्ती से हम आग़ोश है

शाम जिसकी आशनाए-नालए-यारब नहीं
जल्वा-पेरा जिसकी शब में अश्क[21] के कोकब[22] नहीं

---

1. सर से पैर तक सम्पूर्ण 2. खुशी की हालत 3. आंसू 4. ज़िन्दगी का बादल 5. दुख की लहरें 6. नृत्य 7. जीवन का बुलबुला 8. ग़म 9. क़ुरआन मजीद का एक हिस्सा 10. जीवन की किताब का हिस्सा यहां वह कहना चाह रहे हैं कि ग़म जीवन का एक ज़रूरी भाग है 11. जिसने पतझड़ का मौसम नहीं देखा 12. फ़रयाद के बग़ैर 13. देख सकने वाली आंख 14. सजावट का सामान 15. बुलंदी 16. पावडर 17. ग़म की धूल 18. नींद का सुख: 19. बड़ी उड़ान वाला परिन्दा 20. भेद खोलना, 21. आंसू 22. सितारे।

जिसका जामे-दिल शिकस्ते-ग़म[1] से है ना आशना
जो सदा मस्ते-शराबे-ऐशो-इशरत ही रहा
हाथ जिस गुलचीं का है महफूज़ नोके-ख़ार[2] से
इश्क जिसका बे-ख़बर है हिज्र[3] के आज़ार[4] से
कुलफ़ते-ग़म[5] गरचि इसके रोज़ो-शब[6] से दूर है
ज़िन्दगी का राज़ इसकी आंख से मस्तूर[7] है
ऐ कि नज़्मे-दहर[8] का इदराक[9] है हासिल तुझे
क्यों न आसां हो ग़मो-अंदोह की मंज़िल तुझे
है अबद के नुसख़ऐ-दैरीना[10] की तमहीद[11] इश्क
अक्ले-इंसानी है फ़ानी[12], ज़िन्दए-जावेद[13] इश्क
इश्क के खुर्शीद से शामे-अजल[14] शरमिंदा है
इश्क सोज़े ज़िन्दगी है ता अबद पायन्दा[15] है
रूख़सते-महबूब[16] का मक़सद फ़ना होता अगर
जोशे उल्फ़त भी दिले आशिक से कर जाता सफ़र
इश्क कुछ महबूब के मरने से मर जाता नहीं
रूह में ग़म बन के रहता है मगर जाता नहीं
है बक़ाए-इश्क[17] से पैदा बक़ा महबूब की
ज़िन्दगानी है अदम-ना आशना महबूब की
आती है नद्दी जिबीने-कोह से गाती हुई
आसमां के ताइरों को नग़मा सिखलाती हुई
आईना रोशन है इस का सूरते-रूख़सारे-हूर
गिरके वादी की चटानों पर यह हो जाता है चूर
नहर जो थी इसके गौहर प्यारे-प्यारे बन गऐ
यानि इस उफ़्ताद से पानी के तारे बन गऐ

---

1. ग़म द्वारा टूटना 2. कांटे की नोक 3. जुदाई 4. तकलीफ़ 5. ग़म की तकलीफ़ 6. दिन और रात 7. छुपा हुआ 8. दुनिया की व्यवस्था 9. ज्ञान 10. पुराना नुस्ख़ा 11. शुरूआत 12. मिटने वाला 13. हमेशा ज़िन्दा रहने वाला 14. मौत की संध्या 15. क्यामत तक बाकी रहने वाला 16. महबूब का चला जाना 17. प्रेम का बाकी रहना।

जूऐ-सीमाबे-रवां[1] फट कर परीशां हो गई
मुज़तरब बूंदों की इक दुनिया नुमायां हो गई
हिज्र उन क़तरों को लेकिन वस्ल की तालीम है
दो क़दम पर फ़िर वही जू मिस्ले-तारे सीम[2] है
एक असलीयत में है नहरे-रवाने ज़िन्दगी
गिरके रिफ़-अत[3] से हुजूमे-नोए-इंसां[4] बन गई
पस्तीए आलम में मिलने को जुदा होते हैं हम
आरज़ी फ़ुरक़त को दायम[5] जान कर रोते हैं हम

मरने वाले मरते हैं लेकिन फ़ना होते नहीं
यह हक़ीक़त में कभी हम से जुदा होते नहीं
अक़्ल जिस दम दहर की आफ़ात में महसूर[6] हो
या जवानी की अंधेरी रात में मस्तूर हो
दामने-दिल बन गया हो रज़्म-गाहे-ख़ैरो-शर[7]
राह की ज़ुल्मत से हो मुश्किल सुऐ मंज़िल सफ़र
ख़िज़्रे-हिम्मत[8] हो गया हो आरज़ू से गोशा-गीर
फ़िक्र-जब आजिज़[9] हो और ख़ामोश आवाज़े-ज़मीर[10]
वादिये-हस्ती में कोई हम सफ़र तक भी न हो
जादा[11] दिखलाने को जुगनू का शरर तक भी न हो

मरने वालों की जिबीं[12] रोशन है इस ज़ुल्मात[13] में
जिस तरह तारे चमकते हैं अंधेरी रात में

---

1. बहते हुऐ पारे (धातु) की नहर 2. चांदी के तार की तरह 3. बुलंदी 4. मानव जाति की भीड़ 5. हमेशा रहने वाली 6. घिरी हुई 7. अच्छे और बुरे का युद्ध-स्थल 8. हिम्मत को रास्ता दिखाने वाला, ख़िज़्र एक बुज़र्ग हैं जो भूले भटके लोगों को रास्ता बताते हैं 9. लाचार 10. अंतरात्मा की आवाज़ 11. रास्ता 12. पेशानी 13. अंधेरा।

राम

लबरेज़[1] है शराबे-हक़ीक़त[2] से जामे-हिंद[3]
सब फ़लसफ़ी हैं ख़ित्तए-मग़रिब[4] के रामे-ह़िन्द[5]
यह हिंदियों के फ़िक्रे-फ़लक-रस[6] का है असर
रिफ़अत[7] में आसमां से भी ऊँचा है बामे-हिन्द
इस देस में हुए हैं हज़ारों मलिक-शरिस्त[8]
मशहूर जिनके दम से है दुनिया में नामे-हिन्द
है राम के वुजूद पे हिन्दोस्तां को नाज़
एहले-नज़र[9] समझते हैं इसको इमामे-हिन्द[10]
ऐजाज़[11] इस चिराग़े-हिदायत[12] का है यही
रोशन-तर-अज़-सहर[13] है ज़माने में शामे-हिन्द

तलवार का धनी था, शजाअत[14] में फ़र्द[15] था
पाकीज़गी में, जोशे-मोहब्बत में फ़र्द था

---

1. लबा-लब भरा हुआ 2. यथार्थता की शराब 3. भारत का नाम 4. पश्चिमी क्षेत्र 5. भारत के राम 6. आकाश तक पहुँचने वाली विचार धारा 7. बुलंदी 8. फरिश्तों जैसे स्वभाव वाले 9. समझदार लोग 10. भारत का पेशवा 11. चमत्कार 12. शिक्षा, सीख 13. सवेरे से भी ज़्यादा उज्ज्वल 14. बहादुरी 15. अकेला, बेमिसाल।

नानक

क़ौम ने पैग़ामे-गौतम की ज़रा परवा न की
क़द्र पहचानी न अपने गौहरे-यक-दाना[1] की
आह! बद-क़िस्मत रहे आवाज़े-हक़[2] से बे-ख़बर
ग़ाफिल अपने फल की शीरीनी से होता है शजर[3]
आशकार[4] उसने किया जो ज़िन्दगी का राज़ था
हिंद को लेकिन ख़्याली फ़ल्सफ़े पर नाज़ था
शम्ए-हक़[5] से जो मुनव्वर[6] हो यह वह महफ़िल न थी
बारिशे-रहमत हुई लेकिन ज़मीं क़ाबिल न थी
आह! शूदर[7] के लिये हिन्दोस्तां ग़म-ख़ाना है
दर्दे-इंसानी से इस बस्ती का दिल बे-गाना[8] है
ब्रहमन सरशार[9] है अब तक मये-पिन्दार[10] में
शम्ए-गौतम जल रही है महफ़िले अग़्यार में
बुत-कदा फ़िर बाद मुद्दत के मगर रौशन हुआ
नूरे-इब्राहीम[11] से आज़र का घर रौशन हुआ

फ़िर उठी आख़िर सदा तौहीद[12] की पंजाब से
हिंद को इक मर्दे-कामिल[13] ने जगाया ख़्वाब से

---

1. सीप में से एक मोती निकले जो ज्यादा कीमती होता है, मोती 2. सच्चाई की आवाज़ 3. पेड़ 4. ज़ाहिर 5. सच्चाई का चिराग़ 6. उज्ज्वल 7. शूद्र 8. अपरिचित 9. डूबा हुआ 10. घमंड की शराब 11. पैग़म्बर इब्राहीम आज़र बुत तराश के बेटे थे 12. ईश्वर को एक मानने की विचार धारा 13. संपूर्ण मर्द।

जावेद से

ग़ारत-गरे-दीं[1] है यह ज़माना
है इसकी निहाद[2] काफ़िराना
दरबारे-शहंशही से खुशतर[3]
मर्दाने-खुदा[4] का आसताना[5]
लेकिन यह दौरे-साहिरी[6] है
अंदाज़ हैं सब के जादुआना
सर-चश्मए-ज़िन्दगी[7] हुआ ख़ुश्क
बाक़ी है कहां मये-शबाना[8]
ख़ाली उनसे हुआ दबिस्तां[9]
थी जिनकी निगाह ताज़ियाना[10]
जिस घर का मगर चिराग़ है तू
है उसका मज़ाक[11] आरिफ़ाना[12]
जौहर में हो "लाएलाह[13]" तो क्या ख़ौफ़
तालीम हो गो फ़िरंगियाना
शाख़े-गुल पर चहक व-लेकिन
कर अपनी ख़ुदी में आशियाना
वह बह्र[14] है आदमी कि जिसका
हर क़तरा है बह्रे-बे-करानां[15]
दहक़ान अगर न हो तन-आसां[16]
हर दाना है सद हज़ार दाना

"ग़ाफ़िल म-नशीं न वक्ते-बाज़ीस्त
वक़्ते हुनर-अस्तो-कार-साज़ीस्त"[17]

---

1. धर्म को मिटाने वाला 2. प्रवृति 3. अच्छा 4. अच्छे धार्मिक लोग 5. चौखट 6. जादूगरी का काल 7. जीवन स्त्रोत 8. रात की शराब, रात को इबादत करना 9.मदरसा 10. चाबुक, कोड़ा 11. रूचि 12. ब्रह्म ज्ञानी के जैसा 13. "नहीं है कोई खुदा सिवाए अल्लाह" 14. समुद्र 15. असीम समुद्र 16. आरामतलब 17. बेपरवाह मत होना और अपनी ज़िन्दगी खेल कूद में बर्बाद मत करना, बल्कि ज्ञान और कला हासिल करके सफलता प्राप्त करना।

सीने में अगर न हो दिल गर्म
रह जाती है ज़िन्दगी में ख़ामी[1]
नख़चीर[2] अगर हो ज़ी-रको-चुस्त[3]
आती नहीं काम कोहना-दामी[4]
है आबे-हयात[5] इसी जहां में
शर्त उसके लिये है तिश्ना-कामी[6]
ग़ैरत है तरीक़ते-हक़ीक़ी[7]
ग़ैरत से है फ़क़्र[8] की गुलामी
ए-जाने-पिदर[9] नहीं है मुमकिन
शाहीं से तदर्व[10] की गुलामी
नायाब नहीं मताए-गुफ़्तार [11]
सद[12] अनवरी-ओ-हज़ार जामी[13]
है मेरी बिसात[14] क्या जहां में?
बस एक फुग़ाने ज़ेर बामी[15]
इक सिद्के-मिक़ाल[16] है कि जिससे
मैं चश्मे-जहां में हूँ गिरामी[17]
अल्लाह की देन है जिसे दे
मीरास[18] नहीं बुलंद नामी
अपने नूरे-नज़र से क्या ख़ूब
फ़रमाते हैं हज़रते-निज़ामी[19]

"जाए-कि बुज़ुर्ग बायादत बूद[20]
फ़रज़ंदी-ए-मन नदारादत सूद

---

1. कमी 2. शिकार 3. समझदार और फुर्तीला 4. पुराना शिकारी 5. अमृत-जल 6. प्यास 7. आध्यात्मिक रवैया 8. चीज़ों की इच्छा छोड़ना 9. बाप की जान 10. चकोर 11. बात करने की दौलत 12. सौ 13. अनवरी और जामी फ़ारसी के महान कवि हुए हैं 14. हैसियत 15. बाम के नीचे फ़रियाद 16. सच्ची बात कहना 17. पूज्य 18. विरासत 19. फ़ारसी का एक कवि। 20. जिस ऊँचाई तक पहुंचने के लिए स्तरीयता ज़रूरी है वहां मेरा बेटा होना भी फायदा नहीं पहुँचा सकेगा।

मोमिन पे गिरां हैं यह शबोरोज़[1]
दीनो-दौलत क़िमार-बाज़ी[2]
नापेद है बन्दए-अमल-मस्त[3]
बाकी है फ़क़त नफ़्स-दराज़ी[4]
हिम्मत हो अगर तो ढूंढ वह फ़क्र[5]
जिस फ़क्र की अस्ल है हिजाज़ी[6]
उस फ़क्र से आदमी में पैदा
अल्लाह की शाने-बे-नियाज़ी
कंजश्को[7]-हमाम[8] के लिये मौत
है उसका मक़ाम शाहबाज़ी
रौशन उससे ख़िरद की आंखें
बे - सुर्मए - बू- अली - व - राज़ी[9]
हासिल उसका शिकोहे-महमूद[10]
फ़ितरत में अगर न हो अयाज़ी[11]
तेरी दुनिया का यह सिराफील[12]
रखता नहीं ज़ौके-नय-नवाज़ी[13]
है उसकी निगाहे-आलम-आशोब
दर परदा तमाम कारसाज़ी
यह फ़क्रे ग़यूर जिसने पाया
बे-तैग़ो-सिनां[14] है मर्दे-ग़ाज़ी[15]

मोमिन की इसी में है अमीरी
अल्लाह से मांग यह फ़क़ीरी

---

1. रात और दिन 2. जुए का खेल 3. अपने कर्म में मस्त मनुष्य 4. इच्छाओं की बढ़ोत्री 5. चीज़ों की इच्छा छोड़ देना, कुछ न मांगना 6. हजाज वह क्षेत्र है जहां से इस्लाम आरंभ हुआ—मुराद है इस्लामी रवय्या। 7. गौरया 8. कबूतर 9. अली सीना और फ़ख़्र-उद्दीन राज़ी दर्शनिकों की तरफ़ इशारा 10. महमूद बादशाह का दबदबा। 11. महमूद के प्रिय गुलाम का नाम अय्याज़ था 12. कयामत के आने पर सूर (भयानक आवाज़ वाला साज़) बजाने वाले फरिश्ते का नाम 13. हंगामा, शोर 14. तलवार और भाला 15. मैदाने जंग से जिन्दा लौटने वाला वीर।

शुआ-ऐ-उमीद

(1)

सूरज ने दिया अपनी शुआओं को यह पैग़ाम
दुनिया है अजब चीज़ ! कभी सुब्ह कभी शाम
मुद्दत से तुम आवारा हो पहनाये-फ़जा[1] में
बढ़ती ही चली जाती है बे-महरी-ये-अय्याम[2]
ने[3] रेत के ज़र्रों पे चमकने में है राहत
ने मिस्ले-सबा[4], तोफ़े-गुलो-लाला[5] में आराम !
फिर मेरे तजल्ली-कदा-ए-दिल[6] में समा जाओ
छोड़ो चमनिस्तान-ओ-बयाबानो दर-ओ-बाम[7]

(2)

आफ़ाक़[8] के हर गोशे से उठ़ती हैं शुआएँ
बिछड़े हुये खुर्शीद से होती हैं हम-आग़ोश[9] !
इक शोर है मग़रिब[10] में उजाला नहींमुमकिन
अफ़रंग मशीनों के धुऐं से है सियह-पोष !
मशिरक़[11] नहीं गो लज़्ज़ते-नज़्ज़ारा से महरूम[12] !
लेकिन सिफ़त-ए-आलमे-लाहूत[13] है ख़ामोश !
फिर हम को उसी सीना-ए-रौशन में छुपाले
ऐ महरे-जहां-ताब[14] न कर हमको फ़रामोश[15]

---

1. फ़ज़ा का फैलाव 2. समय की बे-मुरव्वती 3. नहीं, न 4. सवेरे की हवा के समान 5. फूलों के आस-पास घूमना 6. सूरज का दिल जो जल्वों का घर है। 7. दरवाज़े और बालाख़ाने 8. दुनिया 9. बग़ल-गीर 10. पश्चिम 11. पूर्व 12. वंचित 13. ब्रह्मलोक की तरह 14. दुनिया को रोशनी देने वाला सूर्य 15. भुलाना।

(3)

इक शोख़ किरन, शोख़ मिसाले-निगहे-हूर[1]
आराम से फ़ारिग़ सिफ़त-ए-जौहरे-सीमाब[2]!
बोली कि मुझे रूख़सते तनवीर अता हो
जब तक न हो मशिरक़ का हर इक ज़र्रा जहां-ताब
छोड़ूंगी न मैं हिन्द की तारीक-फ़ज़ा को
जब तक न उठें ख़्वाब[3] से मर्दाने-गिराँ-ख़्वाब[4]
ख़ावर[5] की उमीदों का यही ख़ाक है मरकज़
इक़बाल के अश्कों से यही ख़ाक है सेराब
चश्मे-महो-परवीं[6] है उसी ख़ाक से रोशन
यह ख़ाक कि है जिसका ख़ज़फ़-रेज़ा[7], दुरे-नाब[8]
इस ख़ाक से उट्ठे हैं वह ग़व्वाज़े-म-आनी[9]
जिनके लिये हर बहरे-पुर-आशोब[10] है पायाब[11]
जिस साज़ के नग़मों से हरारत थी दिलों में
महफ़िल का वही साज़ है बे-गाना-ए-मिज़राब
बुत ख़ाने के दरवाज़े पे सोता है ब्रहमन
तक़दीर को रोता है मुसल्माँ तहे-महराब[12]
मशिरक़ से हो बेज़ार, न मग़रिब से हज़र[13] कर
फ़ितरत का इशारा है कि हर शब को सहर कर!

---

1. अप्सरा की आंख की तरह शरीर 2. पारे जैसी बेचैन 3. नींद 4. गहरी नींद सोने वाले व्यक्ति 5. सूर्य 6. चांद सितारों के झुरमुट की आंख 7. ठीकरा 8. असली मोती 9. अर्थ का ग़ोता-ख़ोर यानि विद्वान 10. शोर करता हुआ समुद्र 11. इतना कम गहरा कि पैदल चल सकें 12. महराब के नीचे खड़ा 13. परहेज़, दूर रहना।

शुक्रो-शिकायत

मैं बनदए-नादां हूँ मगर शुक्र है तेरा
रखता हूँ निहां-ख़ानए-लाहूत[1] से पैवंद
इक वल-वलऐ-ताज़ा[2] दिया मैंने दिलों को
लाहौर से ता ख़ाके-बुख़ारा-ओ-समरक़न्द
तासीर है यह मेरे नफ़्स की कि ख़िज़ां में
मुरग़ाने-सहर ख़्वाँ[3] मिरी सोहबत में है खुरसंद[4]
लेकिन मुझे पैदा किया उस देश में तूने
जिस देश के बन्दे हैं गुलामी पे रज़ा-मंद

ज़मानए-हाज़िर का इन्सान

इश्क़ ना-पेदो[5]-ख़िरद मी गज़ादश सूरते मार[6]
अक़्ल को ताबए-फ़रमाने-नज़र[7] कर न सका
ढूंढने वाला सितारों की गुज़र-गाहों[8] का
अपने अफ़्कार[9] की दुनिया में सफ़र कर न सका
अपनी हिकमत[10] के ख़मो-पैच में उलझा ऐसा
आज तक फ़ैस्लऐ-नफ़-ओ-ज़रर[11] कर न सका
जिसने सूरज की शुआओं को गिरफ़्तार किया
ज़िन्दगी की शबे-तारीक[12] सहर[13] कर न सका

---

1. भक्ति की वह स्थिति जब आदमी ख़ुदा में लीन हो जाता है। 2. नया जोश 3. सुबह चहचहाने वाले पक्षी 4. ख़ुश 5-6. इश्क़ के बग़ैर अक़्ल सांप की डसती है 7. दृष्टि के अधीन 8. रास्तों 9 विचार 10. दर्शन 11. नफ़ा नुकसान का निर्णय 12. अंधेरी रात 13. सवेरा।

अक्वामे-मश्रिक[1]

नज़र आते नहीं बे-परदा[2] हक़ाईक़[3] उनको
आंख जिनकी हुई महकूमी-ओ-तक़लीद[4] से कोर[5]
ज़िन्दा कर सकती है ईरानो-अरब को क्यूंकर
यह फ़िरंगी-मदनीयत[6] कि जो है खुद लबे-गोर[7]

आगाही

नज़र सपहर[8] पे रखता है जो सितारा-शनास
नहीं है अपनी खुदी के मुक़ाम से आगाह
खुदी को जिसने फ़लक से बुलंद-तर देखा
वही है मुम्लिकते-सुबहो-शाम[9] से आगाह
वही निगाह के ना-खूबो-खूब से महरम[10]
वही है दिल के हलालो-हराम से आगाह

मुसलिहीने-मश्रिक़[11]

मैं हूँ नो-मीद[12] तेरे साक़ीयाने-सामरी-फ़न[13] से
कि बज़्मे-ख़ा-वराँ[14] में लेके आए सातगीं[15] ख़ाली
नई बिजली कहाँ उन बादलों के जेबो-दामन में
पुरानी बिजलियों से भी है जिन की आस्तीं ख़ाली

---

1. पूर्व के राष्ट्र 2. उजागर 3.सच्चाईयाँ 4. ग़ुलामी और अनुसरण करने वाला 5. अन्धा 6. युरोपियन संस्कृति 7. क़ब्र के किनारे 8. आसमान 9. सवेरे और शाम का साम्राज्य 10. परिचित 11. पूर्व के समाज सुधारक 12. निराश 13. जादूगर जो शराब पिलाते हैं 14. पूर्व की सभाएं 15. शराब का प्याला।

सुल्तान टीपू की वसीयत

तू रह-नवर्दे-शौक़[1] है मंज़िल न कर क़बूल
लैला भी हम-नशीं[2] हो तो महमिल[3] न कर क़बूल
ऐ जूऐ-आब[4] बढ़के हो दरियाऐ-तुंदो-तेज़
साहिल तुझे अता हो तो साहिल न कर क़बूल
खोया न जा सनम-कदा-ए-कायनात[5] में
महफ़िल-गुदाज़[6] ! गर्मी-ए-महफ़िल न कर क़बूल
सुबूहे-अज़ल[7] यह मुझसे कहा जिबरईल ने
जो अक़्ल का गुलाम हो वह दिल न कर क़बूल
बातिल[8] दुई पसंद है, हक़ ला-शरीक[9] है
शिरकत मियानए-हक़ो-बातिल[10] न कर क़बूल

आज़ादी-ए-फ़िक्र

आज़ादी-ए-अफ़कार[11] से है उनकी तबाही
रखते नहीं जो फ़िक्रो-तदब्बर[12] का सलीक़ा
हो फ़िक्र अगर ख़ाम[13] तो आज़ादी-ए-अफ़कार
इंसान को हैवान बनाने का तरीक़ा

---

1. इश्क के रास्ते पर चलने वाली 2. साथ बैठने वाला 3. ऊँट का हौदा 4. नहर 5. दुनिया का बुत खाना 6. सभा को दर्दमंद करने वाला 7. सृष्टि के आरंभ का सवेरा 8. झूठ 9. अकेला 10. सच और झूठ के बीच 11. विचारों की स्वतंत्रता 12. विचार और गंभीरता 13. कच्ची।

मग़्रिबी-तहज़ीब

फ़सादे-क़ल्बो-नज़र[1] है फिरंग की तहज़ीब[2]
कि रूह इस मदनीयत[3] की रह सकी न अफ़ीफ़[4]
रहे न रूह में पाकीज़गी तो है ना-पैद
ज़मीरे-पाको[5]-ख़्याले-बलंदो[6]ज़ौक़े-लतीफ़ [7]

अस्रारे-पैदा

उस क़ौम को शमशीर[8] की हाजत नहीं रहती
हो जिस के जवानों की खुदी[9] सूरते-फ़ौलाद
नाचीज़ जहाने-महो-परवीं[10] तिरे आगे
वह आलमे-मजबूर है तू आलमे आज़ाद
मौजों की तपिश क्या है? फ़क़त ज़ौके-तलब है
पिन्हा जो सदफ़ में है वह दौलत है खुदा-दाद
शाहीं कभी परवाज़ से थककर नहीं गिरता
पर-दम[11] है अगर तू तो नहीं ख़तरऐ-उफ़्ताद[12]

खुदी की तरबियत

खुदी की परवरिशो-तरबियत पे है मौक़ूफ़[13]
कि मुश्ते-ख़ाक[14] में पैदा हो आतिशे-हमा-सौज़[15]
यही है सिर्रे-कलीमी[16] हर इक ज़माने में
हवाए - दश्तो - शुऐबो - शबानीऐ - शबो-रोज़[17]

1. मन और दृष्टि का द्वंद्व 2. संस्कृति 3. सभ्यता 4. पवित्र 5-6-7. पवित्र आत्मा, उच्च विचार और सुर्रुचि 8. तलवार 9. आत्म सम्मान 10. चांद सितारों की दुनिया 11. ताक़तवर 12. गिरने का डर 13. निर्भर 14. मुट्ठी भर धूल 15. सब कुछ जला देने वाली ज्वाला 16. हज़रत मूसा का रहस्य 17 यहाँ पर हज़रत मूसा हज़रत शु-एब की तरफ संकेत करते हुए कहा गया है कि लगन और मेहनत से आत्म सम्मान पैदा होता है।

हिन्दी मकतब

इक़बाल यहां नाम न ले इल्मे–खुदी[1] का
मौज़ूँ[2] नहीं मकतब के लिये ऐसे मिक़ालात[3]
बहतर है कि बेचारे ममोलों[4] की नज़र से
पोशीदा रहें बाज़ के अह्वालो-मक़ामात[5]
आज़ाद की इक आन है महकूम[6] का इक साल
किस दर्जा गिरां-सैर[7] हैं महकूम के औक़ात[8]
आज़ाद का हरलहजा[9] पयामे - अबादीयत[10]
महकूम का हरलहज़ा नई मर्गे-मफ़ाजात[11]
आज़ाद का अन्देशा हक़ीक़त से मुनव्वर[12]
महकूम का अन्देशा गिरफ़्तारे- ख़ुराफ़ात[13]
महकूम को पीरों [14] की करामात[15] का सौदा[16]
है बन्दऐ-आज़ाद खुद इक ज़िंदा करामात
महकूम के हक़ में है यही तरबियत[17] अच्छी
मूसीक़ी[18]-ओ-सूरतगरी[19]-ओ-इल्मे-नबातात[20]

तालिबे-इल्म

खुदा तुझे किसी तूफ़ां से आशना कर दे
कि तेरे बेहर[21] की मौजों में इज़्तिराब[22] नहीं
तुझे किताब से मुमकिन नहीं फ़राग़[23] कि तू
किताब-रव्वां[24] है मगर साहिबे-किताब[25] नहीं

1. आत्म सम्मान का बोध 2. उचित 3. ज्ञान की बातें 4. छौटी-चिड़िया 5. परिवेश और स्थान 6. ग़ुलाम 7धीरे चलने वाला 8. समय 9. पल 10. शाश्वतता का संदेश 11. अकस्मात् मौत 12. रोशन 13. झूठी बातें 14. पीर फ़कीर 15. चमत्कार 16. लगन 17. प्रशिक्षण 18. संगीत 19. चित्रकला 20. वनस्पति विज्ञान 21. समुद्र 22. उथल-पुथल 23. फ़ुर्सत 24. किताब पढ़ने वाला 25. रचनाकार।

ग़ज़ल

सितारों से आगे जहां और भी हैं
अभी इश्क़ के इम्तेहां और भी हैं
तही[1] ज़िन्दगी से नहीं यह फज़ायें
यहां सैकड़ों कारवां और भी हैं
क़नाअत[2] न कर आलमे-रंगो-बू[3] पर
चमन और भी, आशयां और भी हैं
अगर खो गया इक नशेमन तो क्या ग़म
मक़ामाते आहो-फुग़ां[4] और भी हैं
तू शाहीं है, परवाज़ है काम तेरा
तिरे सामने आस्मां और भी हैं
इसी रोज़ो-शब[5] में उलझ कर न रह जा
कि तेरे ज़मानो-मकां[6] और भी हैं
गये दिन कि तन्हा था मैं अन्जुमन में
यहां अब मिरे राज़दां[7] और भी हैं

---

1. ख़ाली 2. संतोष 3. रंग और गंध की दुनिया 4. आहें भरना और शिकायत करना 5. दिन रात
6. काल और स्थान 7. राज़ जानने वाले।

ग़ज़ल

ख़िरद[1] ने मुझको अता की नज़र हकीमाना[2]
सिखाई इश्क़ ने मुझको हदीसे-रिन्दाना[3]
न बादा[4] है, न सुराही, न दौरे-पैमाना
फ़क्त निगाह से रंगीं है बज़्मे जानाना[5]
मिरी नवाये-परीशां को शायरी न समझ
कि मैं हूँ मेहरमे-राज़े-दरूने-मैख़ाना[6]
कली को देख, कि है तिश्नऐ-नसीमे-सहर[7]
इसी में है मिरे दिल का तमाम अफ़साना
कोई बताये मुझे यह ग़ियाब[8] है कि हुज़ूर
सब आशना हैं यहां, एक मैं हूँ बेगाना
फिरंग[9] में कोई दिन और भी ठहर जाऊं
मिरे जुनूं को संभाले अगर यह वीराना
मक़ामे अक़्ल से आसां गुज़र गया "इक़बाल"
मक़ामे-शौक़[10] में खोया गया वह फरज़ाना[11]

---

1. बुद्धि 2. विज्ञानपूर्ण 3. धार्मिक बंधनों से मुक्ति की बात 4. शराब का प्याला 5. महबूब की महफ़िल 6. शराब ख़ाने के अंदर के रहस्य से परिचित 7. सवेरे की हवा की प्यासी 8. ओझल होना 9. यूरोप 10. इश्क 11. अक़्लमंदी।

ग़ज़ल

मिसाले-परतवे-मय[1] तौफे-जाम[2] करते हैं
यही नमाज़ अदा सुब्हो-शा॰ करते हैं
खुसूसियत नहीं कुछ इस में ऐ "कलीम"[3] तिरी
शजर[4] हजर[5] भी खुदा से कलाम करते हैं
भली है हम-नफ़सो[6]! इस चमन में ख़ामोशी
कि खुश-नवाओं[7] को पाबंदे-दाम[8] करते हैं
ग़रज़ निशात[9] है शग़्ले-शराब से जिन की
हलाल चीज़ को गोया हराम करते हैं
भला निभेगी तिरी हम से क्यूंकर ए वाईज़[10]
कि हम तो रस्मे-मुहब्बत को आम करते हैं
इलाही सेह्र[11] है पीराने-ख़रक़ा-पोश[12] में क्या
कि इक नज़र जवानों को राम करते हैं
मैं उनकी महफ़िले-इशरत[13] से कांप जाता हूँ
जो घर को फूंक के दुनिया में नाम करते हैं
जो बे-नमाज़ कभी पड़ते हैं नमाज़ "इक़बाल"
बुला के दैर से मुझको इमाम करते हैं

---

1. शराब के अक्स की तरह 2. जाम के चौ तरफ चककर लगाना 3. हज़रत मूसा, यह खु दा से बात करते थे इस लिये कलीमुल्लाह इनकी उपाधि थी 4. पेड़ 5. पत्थर 6. साथी 7. अच्छी आवाज़ देने वाले 8. क़ैद करना 9. खुशी 10. धार्मिक भाषण देने वाला 11. जादू 12. दरवेशों का लिबास पहनने वाले बुज़ुर्ग 13. ऐश की महफ़िल।

ग़ज़ल

मताऐ-बे-बहा[1] है दर्दो-सोज़े-आरज़ू-मन्दी[2]
मक़ामे-बन्दगी[3] देकर न तूं शाने-खुदावन्दी
तिरे आज़ाद बन्दों की न यह दुनिया, न वह दुनिया
यहां मरने की पाबन्दी, वहां जीने की पाबन्दी
हिजाब[4] अक्सीर[5] है आवारये-कुऐ-मोहब्बत[6] को
मेरी आतिश[7] को भड़काती है तेरी देर-पैवन्दी[8]
गुज़र औक़ात कर लेता है यह कोह-ओ-बयाबां[9] में
कि शाहीं के लिये ज़िल्लत है कारे-आशयां-बन्दी[10]
यह फेज़ाने-नज़र[11] था या कि मकतब की करामत थी
सिखाये किसने इस्माईल को आदाबे-फ़रज़न्दी[13]
ज़्यारत-गाहे[14] एहले-अज़्मो-हिम्मत[15] है लहद मेरी
कि ख़ाके राह को मैंने बताया राज़े-अलवन्दी[16]
मिरी मश्शातगी[17] की क्या ज़रूरत हुस्ने-मानी[18] को
कि फितरत[19] खुद-ब-खुद करती है लाले की हिना-बन्दी[20]

---

1. क़ीमती सरमाया 2. इच्छा के दुख दर्द 3. पुजारी का स्थान 4. छुपना 5. लाभदायक 6. मोहब्बत के रास्ते पर भटकने वाला 7. आग 8. दुनियादारी 9. पहाड़ और जंगल 10. घोंसला बनाने का काम 11. दृष्टि का प्रभाव 12. मदरसा 13. हज़रत इब्राहीम ने अपने पिता के कहने पर खुदा के लिये कुर्बान होना मन्ज़ूर किया 14. दर्शन स्थल 15. इरादा और हिम्मत रखने वाले 16. अलवन्द नामक पहाड़ की ऊँचाई का राज़ 17. संवारना 18. रचना का सौंदर्य। 19. प्रकृति 20. मेंहदी लगाना।

ग़ज़ल

अनोखी वज़ा[1] है सारे ज़माने से निराले हैं
यह आशिक़ कौन सी बस्ती के यारब रहने वाले हैं
इलाजे-दर्द में भी दर्द की लज़्ज़त पे मरता हूँ
जो थे छालों में कांटे, नोके-सोज़न[2] से निकाले हैं
फला फूला रहे यारब चमन मेरी उमीदों का
जिगर का ख़ून दे दे कर यह बूटे मैंने पाले हैं
रूलाती है मुझे रातों को ख़ामोशी सितारों की
निराला इश्क़ है मेरा, निराले मेरे नाले हैं
न पूछो मुझ से लज़्ज़त ख़ानमा-बरबाद[3] रहने की
नशेमन सेकड़ों मैंने बना कर फूँक डाले हैं
नहीं बेगानगी अच्छी रफ़ीक़े-राहे-मंज़िल[4] से
ठहर जा ऐ शरर हम भी तो आख़िर मिटने वाले हैं
उमीदे-हूर ने सब कुछ सिखा रखा है वाईज़[5] को
यह हज़रत देखने में सीधे साधे भोले भाले हैं
मेरे अशआर ऐ "इक़बाल" क्यों प्यारे न हों मुझको
मिरे टूटे हुये दिल के यह दर्द अंगेज़ नाले हैं

---

1. रंग ढंग 2. सुई की नोक 3. बदहाल 4. मंज़िल तक चलने वाला साथी 5. धर्मोपदेशक।

ग़ज़ल

जिन्हें मैं ढूंढता था आस्मानों में, ज़मीनों में
वह निकले मेरे ज़ुल्मत ख़ाना-ए-दिल के मिकीनों[1] में
कभी अपना भी नज़्ज़ारा किया है तू ने ऐ मजनूँ?
कि लैला की तरह तू ख़ुद भी है मेहमिल-नशीनों[2] में
महीने वस्ल के घड़ियों की सूरत उड़ते जाते हैं
मगर घड़ियां जुदाई की गुज़रती हैं महीनों में
मुझे रोकेगा तू ऐ नाख़ुदा क्या ग़र्क़ होने से
कि जिनको डूबना हो, डूब जाते हैं सफ़ीनों[3] में
तमन्ना दर्दे-दिल की हो तो कर ख़िदमत फक़ीरों की
नहीं मिलता यह गौहर बादशाहों के ख़ज़ीनों में
तरस्ती है निगाहे-ना-रसा[4] जिसके नज़ारे को
वह रौनक़ अन्जुमन की है इन्हीं ख़िल्वत-गज़ीनों[5] में
मोहब्बत के लिये दिल ढूंढ कोई टूटने वाला
यह वह मय है जिसे रखते हैं नाज़ुक आबगीनों[6] में
नुमायां हो के दिखलादे कभी उनको जमाल अपना
बहुत मुद्दत से चर्चे हैं तिरे बारीक बीनों में
बुरा समझूं उन्हें? मुझसे तो ऐसा हो नहीं सकता
कि मैं ख़ुद भी तो हूँ "इक़बाल" अपने नुक्ता चीनों में

---

1. रहने वाले 2. ऊँट का हौदा 3. किश्ती 4. नज़र जो पहुँच न सके 5. एकान्त 6. प्याले।

ग़ज़ल

तिरे इश्क़ की इन्तेहा चाहता हूँ
मिरी सादगी देख क्या चाहता हूँ
सितम हो कि हो वादा-ए-बे-हिजाबी[1]
कोई बात सब्र आज़मा चाहता हूँ
यह जन्नत मुबारक रहे ज़ाहिदों[2] को
कि मैं आपका सामना चाहता हूँ
ज़रा सा तो दिल हूँ, मगर शौक़ इतना
वही लन्तरानी[3] सुना चाहता हूँ
कोई दम का मेहमां हूँ ऐ एहले महफ़िल
चिराग़े सहर हूँ, बुझा चाहता हूँ
भरी बज़्म में राज़ की बात कह दी
बडा बे-अदब हूँ, सज़ा चाहता हूँ

---

1. बगैर परदे के सामने आना 2. धर्म के ठेकेदार 3. तू मुझे नहीं देख सकता संदर्भ ...जब तूर पहाड़ पर हज़रत मूसा गए और उन्होंने खुदा को देखने की इच्छा व्यक्त की तो खुदा का जवाब आया "लंतरानी" यानि तू मुझे नहीं देख सकता।

ग़ज़ल

कभी ऐ हक़ीक़ते मन्तज़र[1] नज़र आ लिबासे-मजाज़[2] में
कि हज़ारों सजदे तड़प रहे हैं मिरी जबीने-नियाज़[3] में
तू बचा बचा के न रख इसे, तिरा आईना है वह आईना
कि शकिस्ता[4] हो तो अज़ीज़-तर[5] है निगाहे आईना-साज़[6] में
न कहीं जहां में अमां[7] मिली, जो अमां मिली तो कहां मिली
मिरे जुर्मे-ख़ाना-ख़राब को तिरे अफ़्वे[8]-बन्दा-नवाज़ में
न वह इश्क़ में रहीं गर्मियां, न वह हुस्न में रहीं शोख़ियां
न वह ग़ज़्नवी[9] में तड़प रही, न वह ख़म है जुल्फ़े-अयाज़[10] में
जो मैं सर ब-सज्दा[11] हुआ कभी तो ज़मीं से आने लगी सदा
तिरा दिल तो है सनम-आशना[12] तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में

---

1. सच्चाई का इंतज़ार ----आशय कि ख़ुदा, जिसकी प्रतीक्षा है लेकिन वह अपना जलवा सिर्फ़ क़यामत के दिन दिखाएगा 2. मुक्त रूप में 3. निष्ठा से भरा माथा 4. टूटा हुआ 5. अधिक प्यारा 6. आईना बनाने वाला 7. आश्रय 8. क्षमा 9. महमूद गज़नवी से आशय है 10. महमूद का चहीता ग़ुलाम 11. सज्दे में सिर झकाना 12. दुनियावी प्यार में अटका हुआ।

ग़ज़ल

न तू ज़मीं के लिये है न आस्मां के लिये
जहां है तेरे लिये, तू नहीं जहां के लिये
मक़ामे परवरिशे आहो-नाला[1] है यह चमन
न सेरे-गुल[2] के लिये है, न आशयां के लिये
रहेगा रावी-ओ-नीलो-फरात[3] में कब तक
तिरा सफ़ीना कि है बहरे-बेकरां[4] के लिये
निशाने राह दिखाते थे जो सितारों को
तरस गये हैं किसी मर्दे-राह-दां[5] के लिये
निगह बुलन्द, सुख़न दिल नवाज़, जां पुर सोज़
यही है रख़्ते सफ़र मीरे कारवां के लिये
ज़रा सी बात थी, अन्देशाऐ-अजम ने इसे
बढ़ा दिया है फ़क़त ज़ेबे-दास्तां के लिये

---

1. आहें भरना और फरयाद करना 2. फूलों की सेर 3. रावी, नील और फ़रात नदियाँ 4. असीम समुद्र 5. रास्ता जान्नेवाला व्यक्ति।